शैक्षिक मंथन

(द्विभाषी मासिक)

शैक्षिक क्षेत्र की प्रतिनिधि पत्रिका

वर्ष : 15 अंक : 3 1 अक्टूबर 2022

आश्विन-कार्तिक मास, विक्रम संवत् 2079

संस्थापक

स्व. मुकुन्दराव कुलकर्णी

❖

परामर्श

के.नरहरि

डॉ. विमल प्रसाद अग्रवाल

जगदीश प्रसाद सिंघल

शिवानन्द सिन्दनकेरा

जी. लक्ष्मण

❖

सम्पादक

डॉ. राजेन्द्र शर्मा

❖

सह सम्पादक

डॉ. शिवशरण कौशिक

भरत शर्मा

❖

संपादक मंडल

प्रो. नन्द किशोर पाण्डेय

डॉ. ओमप्रकाश पारीक

डॉ. एस.पी. सिंह

❖

प्रबन्ध सम्पादक

महेन्द्र कपूर

❖

व्यवस्थापक

बजरंग प्रसाद मजेजी

❖

प्रेषण प्रभारी : **नौरंग सहाय 'भारतीय'**

❖

कार्यालय प्रभारी : **आलोक चतुर्वेदी**

प्रकाशकीय कार्यालय

82, पटेल कॉलोनी, सरदार पटेल मार्ग,

जयपुर (राजस्थान) 302001

दूरभाष : 9414040403

दिल्ली ब्यूरो :

शैक्षिक महासंघ सदन, 606/13,

कृष्णा गली नं.9, मौजपुर, दिल्ली-110053

दूरभाष : 8920959986

E-mail :

shaikshikmanthan@gmail.com

Visit us at :

www.shaikshikmanthan.com

वार्षिक शुल्क ₹ 250/-

दस वर्षीय शुल्क ₹ 2000/-

पृष्ठ संयोजन : सागर कम्प्यूटर, जयपुर

शैक्षिक मंथन मासिक में प्रकाशित सामग्री से संपादक मण्डल का सहमत होना आवश्यक नहीं है तथा चित्रों का प्रतीकात्मक प्रयोग किया गया है।

सक्षम, समृद्ध भारत के लिए

❑ **एयर मार्शल (से.नि.) भूषण गोखले**

यदि भारत बदलती तकनीकी को आत्मसात कर, आत्मनिर्भरता की ओर तेजी से बढ़ते हुए, देश की युवा शक्ति का उचित प्रबंधन कर, शिक्षा प्रणाली में उचित परिवर्तन कर अनुसंधान को बढ़ावा देकर, राजनीतिक-नौकरशाही-सेना के बीच उचित समन्वय स्थापित करने के लिए कदम उठाकर आगे बढ़ेगा तो आने वाले समय में भारत हर क्षेत्र में समृद्ध और आज से भी अधिक सक्षम परिलक्षित होगा। मैं हमेशा आशावादी रहता हूँ। मुझे विश्वास है कि सन् 2047 में हम अपनी अगली पीढ़ी को एक सक्षम और समृद्ध भारत सौंपेंगे।

4

अनुक्रम

3.	सम्पादकीय	– डॉ. राजेन्द्र शर्मा
7.	सैन्य शिक्षा एवं प्रशिक्षण की आवश्यकता	– प्रो. प्रकाश चंद्र अग्रवाल
10.	भारत में सैन्य शिक्षा की आवश्यकता	– प्रो. हरेन्द्र सिंह
12.	सैन्य शिक्षा अवधारणा और स्वरूप	– विनोद कुमार
14.	एनसीसी – सैन्य शिक्षा एवं औपचारिक शिक्षा	– कै. मनोज कुमार यादव
17.	भारतीय सैन्य अकादमी का राष्ट्र रक्षा और ...	– डॉ. विजयपाल यादव
21.	भारतीय सैन्य अकादमियाँ	– लेफ्टि. (डॉ.) श्वेता नेहरा
24.	आत्मनिर्भर भारत में सैन्य शिक्षा व एनसीसी...	– डॉ. रणजीत सिंह बुडानिया
29.	Agnipath Scheme and Transformation...	– Dr. Ankur Yadav
31.	सैन्य सुधार की प्रासंगिकता और अग्निपथ योजना	– आनन्द वर्द्धन शुक्ल
34.	सैन्य सुधार : अग्निपथ योजना	– डॉ. इन्दु बाला अग्रवाल
36.	भारतीय सीमा सुरक्षा और सेनाएँ	– डॉ. राजकुमार चतुर्वेदी
39.	Military School in Maharashtra ...	– Brig. Hemant Mahajan
43.	Special Forces In India	– Col. Abhay B. Patwardhan
47.	Education and the Forces	– Dr. TS Girishkumar
50.	Role of Psychological Skill Training...	– Dr. Sanjeev Kumar

Agniveer

❑ **Col. Suhas S Jatkar (Rted.)**

Agniveer on his release will get Seva Nidhi corpus of approx. Rs. 11.7 lakhs which will have 30% of monthly emoluments to be contributed by individuals. They will also get an insurance cover of Rs. 48 Lakhs and disability compensation based on % of disability as laid down by medical authorities. They with also get a Ex-Gratia of Rs. 44 Lakhs on death attributable to military service.

26

संपादकीय

डॉ. राजेन्द्र शर्मा
सम्पादक

15 अगस्त 2022 को देश ने 76वाँ स्वतंत्रता दिवस मनाया। इस बार घर-घर तिरंगा लहराया। अन्य राज्यों की तरह जम्मू-कश्मीर में भी हजारों आयोजन हुए। यही नहीं, सबसे ज्यादा आतंकवाद ग्रस्त जिलों में सबसे ज्यादा तिरंगा लहराया गया। 1947 के बाद पहली बार तिरंगे के प्रति ऐसी उमंग लोगों में देखी गयी है। स्वतन्त्रता के इन वर्षों का लेखा-जोखा बताता है कि शांति बनाए रखने में भारत का कोई सानी नहीं है। संयुक्त राष्ट्र संघ के आह्वान पर भारत ने यू.एन. के नीले झंडे के तले विभिन्न देशों में शांति स्थापना के लिए अपनी सेनाएँ भेजकर संबंधित देशों की एकता को सुरक्षित किया है।

दुनिया के लगभग सभी देश भारत की विश्वशांति की नीति की भूरी-भूरी सराहना करते हैं परन्तु जब प्रश्न देश की आन-बान-शान पर आ जाता है, तो भारत दुनिया में किसी से कम भी नहीं है। तथापि 1962 का सवाल, आज भी उत्तर की प्रतीक्षा में है। चीनी आक्रमण से तत्कालीन प्रधानमंत्री को गहरा धक्का लगा था। उन्होंने तब कहा था कि ''चीन के आक्रमण से हमारी आँखें एकाएक खुल गई है। अभी तक भारत वास्तविक तथ्य की ओर देख नहीं पाया था और हम लोग अपने ही द्वारा निर्मित एक कृत्रिम वातावरण में रह रहे थे।'' 1962 के युद्ध के बाद सरकार ने रक्षा क्षेत्र पर नियोजित तरीके से ध्यान देना शुरू किया। इसी का परिणाम है कि आज हमारी रक्षा व्यवस्था धरती से गगन तक और समुद्र से साइबर तक बेजोड़ है। सैन्य क्षेत्र में हमारा सफर शानदार रहा है। 1971 के युद्ध में तो भारत ने पाकिस्तान को दो टुकड़ों में बाँट ही दिया। संसार के इतिहास में यह पहला अवसर था, जब किसी देश के 90 हजार से ज्यादा सैनिकों ने भारतीय सेना के समक्ष आत्मसमर्पण किया था। अगर पाकिस्तान का विभाजन नहीं हुआ होता तो बांग्लादेश से लगी 4096 किमी लम्बी अन्तरराष्ट्रीय सीमा पर भी देश को जूझना ही पड़ता। और बालकोट में तो वायुसेना के पराक्रम को भुलाया ही नहीं जा सकता। 26 फरवरी 2019 को सुबह 3 से 4 बजे के बीच भारतीय वायुसेना के मिराज लड़ाकू विमानों ने एलओसी के अंदर 80 किलोमीटर घुसकर पाकिस्तान के बालकोट में बम गिराये। आतंकी ठिकानों को नष्ट किया और पुलवामा हमले का हिसाब चुकता किया।

सैन्य शिक्षा रक्षा क्षेत्र का एक महत्त्वपूर्ण घटक है। देश में मिलिट्री स्कूल और सैनिक स्कूल दोनों हैं पर 135 करोड़ के देश में इनकी संख्या अप्रर्याप्त है। मूलत: रक्षा सेवाओं के कार्मिकों के बच्चों को शिक्षा उपलब्ध कराने के लिए 1922 में मिलिट्री स्कूल प्रारम्भ हुए। स्वतंत्रता के बाद मात्र एक राष्ट्रीय मिलिट्री स्कूल, धौलपुर में खोला गया। देश भर में इस समय कुल पाँच मिलिट्री स्कूल है। मिलिट्री स्कूल के अतिरिक्त एनडीए (National Defence Academy) में प्रवेश हेतु छात्रों को तैयार करने का कार्य देश के 33 सैनिक स्कूल कर रहे हैं। सरकार ने हॉल ही में इन सैनिक स्कूलों के दरवाजे छात्राओं के लिए खोलकर प्रशंसनीय पहल की है। लेकिन यक्ष प्रश्न यह है कि क्या सभी को सैन्य शिक्षा दी जाये? रक्षा विशेषज्ञों एवं विद्वानों के विचार इस विषय पर भिन्न-भिन्न हैं। संसार के बहुत से देशों के स्कूली पाठ्यक्रमों में सैन्य शिक्षा सम्मिलित है। इजराइल जैसे देश ने अपनी बाहरी सुरक्षा के परिदृश्य को देखते हुए अनिवार्य सैनिक शिक्षा की व्यवस्था कर रखी है। हमारे यहाँ संविधान सभा के सदस्य डॉ. हृदय नाथ कुंजरू ने सैनिक शिक्षा को अनिवार्य करने की वकालत की थी।

भारत के संविधान में 42वें संविधान संशोधन 1976 द्वारा नागरिकों के मूल कर्तव्य जोड़े गए हैं। इस संबंध में संविधान का अनुच्छेद -51 क (4) कहता है कि भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य है कि वह देश की रक्षा करे और राष्ट्र की सेवा करे। देश को बाहरी सुरक्षा के मोर्चे पर परमाणु बम वाले पाकिस्तान और चीन की रणनीतिक मिलीभगत वाली चुनौती का सामना करना पड़ रहा है। ड्रोन, काउंटर-ड्रोन तकनीक, साइबर और अंतरिक्ष युद्ध जैसी लड़ाइयों के लिए अब तैयार रहना होगा। ऐसे में रक्षा क्षेत्र का आधुनिकीकरण करने और युद्ध क्षमता का विस्तार करने की जरूरत है। साथ ही राष्ट्र रक्षा के लिए नागरिकों का निर्माण करने की प्रभावी व्यवस्था करने की पहल भी करनी होगी। सरकार ने हॉल ही में अग्निपथ योजना शुरू की है, जिसके निहितार्थ दूरगामी है।

और अब थोड़ी चर्चा शिक्षक की। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन 1962 में देश के द्वितीय राष्ट्रपति बने। तब से ही उनके जन्मदिवस को शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है। लेकिन क्या डॉ. राधाकृष्णन की भावना एवं कल्पना तथा समय की आवश्यकता के अनुरूप शिक्षा एवं शिक्षक आगे बढ़ रहे हैं? चौथी औद्योगिक क्रांति हमारे दरवाजे पर दस्तक दे रही है। इसी के अनुरूप शिक्षा क्षेत्र में 'शिक्षा 4.0' दुनिया भर में चर्चा का विषय बना हुआ है। शिक्षक की भूमिका अब केवल व्याख्यान देने तक सीमित नहीं रहने वाली है। उन्हें मेंटर या मित्र के रूप में विद्यार्थियों को भविष्य का मार्ग भी बताना होगा तथा समझाना होगा कि जो कुछ भी नया है, उसके लिए पहले से कोई राह बनी हुई नहीं है। आने वाले दशक में बहुत से विद्यमान रोजगारों के स्थान पर नए-नए क्षेत्रों में रोजगार सृजित होंगे और उन्हीं के अनुसार हमें पाठ्यक्रम बनाने होंगे और शिक्षकों को तैयार करना होगा। डॉ. राधाकृष्णन तो कहा ही करते थे कि जब तक शिक्षक शिक्षा के प्रति प्रतिबद्ध और समर्पित नहीं होगा तब तक शिक्षा को मिशन का रूप नहीं मिल पायेगा। ❑

अनादि मी अनंत मी, अवध्य मी भला।
मारिल रिपु जगतिं, असा कवण जन्मला।।
– स्वतंत्रतावीर विनायक दामोदर सावरकर

सक्षम, समृद्ध भारत के लिए

एयर मार्शल (से.नि.) भूषण गोखले

पूणे (महाराष्ट्र)

नदियों और घाटियों की सुंदरता से समृद्ध, प्राकृतिक माहौल से संपन्न, कृषि के लिए अनुकूल वातावरण जहाँ है, ऐसा हमारा भारत देश 'सुजलाम सुफलाम' है। यह प्राकृतिक धरोहर हमें अति प्राचीन काल से मिली है। विशेष बात यह है कि हमारे देश का नाम हिंद महासागर को दिया गया है। हमारी सांस्कृतिक समृद्धि पूरे विश्व में प्रसिद्ध है। इसलिए ऐसे समृद्ध देश पर विदेशियों का ध्यान होना स्वाभाविक है। एक जमाने में भारत देश को 'जहाँ डाल डाल पर सोने की चिड़ियाँ करती है बसेरा' कहा जाता था। इसलिए इस देश को लूटने के लिए बरसों से हमलें होते रहे हैं। हमारा देश समृद्ध था। लेकिन समय-समय पर हमने इसकी सुरक्षा पर ध्यान नहीं दिया। एक व्यापक भारतवर्ष का चिंतन और इसके लिए आवश्यक दूरदृष्टि के विचार से हम विमुक्त रहे। हम एक-दूसरे के साथ आपस में ही लड़ते रहे। अत: इसका आक्रमणकारियों को फायदा हुआ और हमें गुलामी में रहना पड़ा। सुरक्षा और समृद्धि दोनों में सामंजस्य होता है। वे दोनों एक-दूसरे पर निर्भर होती हैं। आज के आधुनिक समय में इसकी अधिक आवश्यकता है।

भारत ने आजादी के उपरांत पिछले 75 वर्षों में काफी विकास किया है और अब आत्मनिर्भरता की दिशा में मजबूत कदम उठाए हैं। मुझे लगता है कि जब हम अगले 25 वर्षों के बारे में सोचेंगे, तब सबसे पहले हमें प्रौद्योगिकी के बारे में सोचना होगा। यह कहा जाता है कि पिछले 20 वर्षों में प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में जितना अनुसंधान हुआ है, उतना अनुसंधान पिछले तीन-सौ वर्षों में भी नहीं हुआ है। आज हर रोज तकनीकी बदल रही है। जब हम रोबोटिक्स, यूएवी, अंतरिक्ष और अन्य नवीनतम तकनीकी के बारे में बातें करते हैं, तो भविष्य में बदलती तकनीकी के साथ हमें इसके लिए आवश्यक जनशक्ति को भी सक्षम करना पड़ेगा। हमें न केवल सुरक्षा के क्षेत्र पर ही सोचना होगा, बल्कि इसके लिए आवश्यक जनशक्ति और शिक्षा हासिल करनी होगी।

सीमाएँ और फ्रंटियर्स

मैं हमेशा इतिहास और भूगोल के महत्त्व के बारे में बताता रहता हूँ। यहाँ भारत की सीमाएँ और भारत के प्रभाव क्षेत्र (फ्रंटियर्स) के बारे में बात करनी अधिक संयुक्तिक होगी। सीमाएँ प्रत्यक्ष भूमि पर होती हैं। हम उन्हें मानचित्रों में रेखाओं के माध्यम से देख सकते हैं। भारत की पाकिस्तान के साथ अंतरराष्ट्रीय सीमा है। इसके साथ ही 'LOC' (नियंत्रण रेखा) और 'LAC' (वास्तविक नियंत्रण रेखा) है। देश की सागरी सीमाएँ भी होती हैं। जिसमें किनारे से दो-सौ नॉटिकल मील तक

यदि भारत बदलती तकनीकी को आत्मसात कर, आत्मनिर्भरता की ओर तेजी से बढ़ते हुए, देश की युवा शक्ति का उचित प्रबंधन कर, शिक्षा प्रणाली में उचित परिवर्तन कर अनुसंधान को बढ़ावा देकर, राजनीतिक-नौकरशाही-सेना के बीच उचित समन्वय स्थापित करने के लिए कदम उठाकर आगे बढ़ेगा तो आने वाले समय में भारत हर क्षेत्र में समृद्ध और आज से भी अधिक सक्षम परिलक्षित होगा। मैं हमेशा आशावादी रहता हूँ। मुझे विश्वास है कि सन् 2047 में हम अपनी अगली पीढ़ी को एक सक्षम और समृद्ध भारत सौंपेंगे।

एक्सक्लुझिव्ह इकॉनॉमिक्स झोन होता है। सीमाओं से जो परे होता है, उसे 'फ़्रॉंटियर्स' कहा जाता है। 'फ़्रॉंटियर्स' ऐसा क्षेत्र हैं, जहाँ हम अपना प्रभाव डाल सकते हैं। इसके लिए हर देश प्रयास करता है। चोला और पल्लवा के कालखंड में हमारे देश की सांस्कृतिक समृद्धि पूरे आग्नेय एशिया में फैल गई थी। आज भी हमें थाईलैंड, इंडोनेशिया नामक देशों में हिंदू संस्कृति के मंदिर और प्रमाण मिलते हैं। इसी तरह भारत में स्थापित बौद्ध धर्म बाद में चीन और जापान तक फैल गया। इन परिस्थितियों में भारतीयों ने कभी भी किसी पर हमला नहीं किया एवं जबरदस्ती नहीं की। इस तरह के सांस्कृतिक 'फ़्रॉंटियर्स' को पूर्वी एशिया में देखा जा सकता है। इन सांस्कृतिक 'फ़्रॉंटियर्स' के समान ही राजनीतिक या सैन्य 'फ़्रॉंटियर्स' भी हो सकते हैं। उदाहरण जब मराठों का साम्राज्य अटक प्रदेश तक विस्तृत हुआ, तब उन्हें दिल्ली या अधिक-से-अधिक पानीपत तक अपनी संप्रभुता स्थापित करनी थी। परंतु वायव्य दिशा की ओर से हमेशा विदेशी हमलों से वे त्रस्त थे। इसलिए मराठों ने भारत पर विदेशियों का आक्रमण रोकने के लिए आक्रमणकारियों को एक संदेश दिया कि यदि आप हमारे 'फ़्रॉंटियर्स' को पार करते हैं, तो हम अटक प्रदेश तक भी आ सकते हैं। आज के स्वतंत्र भारत के 'फ़्रॉंटियर्स' के संदर्भ में बात करें तो पूर्व में मलाक्का, पश्चिम में लाल सागर, उत्तर में मध्य एशिया और दक्षिण में अंटार्टिका क्षेत्र का समावेश होता हैं। इन क्षेत्रों में प्रभाव बढ़ाना आवश्यक है। व्यापार और आर्थिक संबंध भी 'फ़्रॉंटियर्स' के दायरे को विस्तृत करते हैं। भारतीय लोगों के कर्तृत्व का प्रभाव अति विस्तारित हुआ है। आधुनिक जगत् में तीन नए 'फ़्रॉंटियर्स' का महत्त्व अधिक बढ़ा है। वे 'फ़्रॉंटियर्स' हैं - आवकाश, सायबर और सागरी तल (Deep Underwater)। इसमें एक महत्त्वपूर्ण नया 'फ़्रॉंटियर्स' है - साइबर स्पेस। सायबर हमलें की कोई रेखांकित सीमाएँ नहीं होती हैं और 'फ़्रॉंटियर्स' को भी आँका नहीं जा सकता है। इस कारण नए युग में सायबर सुरक्षा का महत्त्व बहुत बढ़ गया है। आज के स्वतंत्र भारत के 'फ़्रॉंटियर्स' के संदर्भ में बात करें तो समुद्री क्षेत्र में भारत की अर्थव्यवस्था के लिए अंतरराष्ट्रीय कानून के तहत व्यापक प्रमाण में एक्सक्लुझिव्ह इकॉनॉमिक झोन (ईईझेड) भारत को प्राप्त है। भारत को 7500 चौ. किलोमीटर का समुद्री तट प्राप्त हैं और लगभग 30 लाख चौरस किलोमीटर के समुद्री क्षेत्र की संपत्ति का उपयोग हम कर सकते हैं। हमारे देश को सागरी संसाधनों का उपयोग बढ़ाना चाहिए। अन्य देश अपने सागरी संसाधनों का बड़े पैमाने पर उपयोग करते हैं। सीमाओं और 'फ़्रॉंटियर्स' का विचार करते समय बदलती प्रौद्योगिकी के महत्त्व को भी महसूस किया जा सकता है। भारत ने घुसपैठियों को रोकने के लिए एल.ओ.सी. पर अत्याधुनिक तकनीकी का इस्तेमाल किया है। यह तकनीकी घुसपैठियों को भारत में एल.ओ.सी. पार करने से रोकती है। यहाँ एक बात बतानी जरूरी है कि एक तकनीकी के विकसित होने के बाद उसके जवाब में शत्रु भी अपनी तकनीकी विकसित करता है। कभी-कभी एक तकनीकी निर्मिति की कंपनियाँ ही दोनों तरह की तकनीक विकसित करवाती हैं। इसलिए नई तकनीकी को अपनाने पर ध्यान देना चाहिए। साथ ही तकनीकी का हर बार आधुनिकीकरण किया जाना चाहिए।

खुफिया वार्ता का महत्त्व

खुफिया वार्ता सबसे महत्त्वपूर्ण अंग है। हम हमेशा जासूसी विफलताओं से ग्रस्त रहे हैं। हम सन् 1947 के युद्ध में अंत तक बेखबर रहे। इस मामले में हम कह सकते हैं कि जब पाकिस्तानी सेना श्रीनगर के काफी करीब आ गई थी, तब भारतीय सेना को वहाँ तक पहुँचने की अनुमति तक भी नहीं दी गई थी। सन् 1965 के युद्ध में भी हमें पता नहीं चला कि 20 हजार पाकिस्तानी सैनिक कश्मीर घाटी में घुस आए हैं। बाद के सन् 1999 के कारगिल युद्ध में भी ऐसा ही हुआ। यदि सही समय पर सही खुफिया जानकारी मिल जाती तो कारगिल जैसी घुसपैठ होती ही नहीं। भविष्य में क्या हो सकता है, इसके बारे में सबसे महत्त्वपूर्ण समाचार जासूसों से प्राप्त होना चाहिए। मैं इसे प्रेडिक्टिव इंटेलिजेंस (Predictive Intelligence) कहता हूँ। हमले के बाद उसका Post-mortem करने की अपेक्षा Actionable Intelligence यह आतंकवाद के लिए अधिक महत्त्वपूर्ण मुद्दा है। भविष्य में खुफिया वार्ता प्राप्त करने में भी तकनीकी का महत्त्व काफी बढ़ने वाला है। तकनीकी के इस्तेमाल से अगर हम कुछ बातों को पहले से जान लें, तो आपदा की गंभीरता को कम किया जा सकता है। इसके लिए इमेज इंटेलिजेंस, कम्युनिकेशन इंटेलिजेंस जैसी सभी

प्रणालियों का सही इस्तेमाल किया जाना चाहिए। इन यांत्रिक प्रणालियों के साथ मानव जासूसी बहुत महत्त्वपूर्ण हो जाती है। इसका एक अच्छा उदाहरण बालाकोट की सफल सैन्य कार्यवाही है। अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी में भी कई देशों के बीच प्रतिस्पर्धा है। हालांकि अंतरिक्ष में परमाणु युद्ध की अनुमति नहीं है, फिर भी पारंपरिक युद्ध संभव है। हाल ही में एक समाचार विज्ञप्ति के अनुसार, रूस अब उच्च शक्तिवाले लेजर का उपयोग करके अपने देश की उपग्रह इमेजिंग को रोकने की कोशिश कर रहा है। इस कारण रूस के ऊपर से गुजरने वाले उपग्रह नीचे की छवियों को कैप्चर करने में सक्षम नहीं होंगे। यह अनुसंधान शुरू है। यदि यह अनुसंधान सफल होता है, तो अंतरिक्ष क्षेत्र में कई बदलाव हो सकते हैं।

स्वावलंबन, आत्मनिर्भरता की आवश्यकता

भारत देश का विचार करें तो भारत को आने वाले भविष्य में आत्मनिर्भरता और स्वावलंबन के साथ आगे बढ़ना आवश्यक है। हमारी शिक्षा प्रणाली में भौतिकी, गणित, जीव विज्ञान जैसे बुनियादी विज्ञान पर अधिक ध्यान देना आवश्यक है। आज हम अधिकांश पश्चिमात्य देशों की तकनीकी का उपयोग करते हैं। पश्चिमात्य देशों में सर्वप्रथम यह तकनीकी विकसित होती है, बाद में प्रत्यक्ष रूप से यह तकनीक हमारे देश में आती है और जब हम इसका उपयोग करते हैं, तब एक लंबा समय बीत चुका होता है। तब तक इस तकनीकी का अधिकांश भाग पुराना हो चुका होता है। इसलिए हमें आत्मनिर्भरता और अनुसंधान से बनी चीजों पर बल देना होगा। ऐसा करने से देश में विकसित प्रौद्योगिकी के रहस्यों को भी सुरक्षित किया जा सकता है और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हमें अपना प्रभाव बढ़ाने में भी मदद हो सकती है। अगले दस वर्षों में हमारे देश में सबसे अधिक युवा जनशक्ति होगी। इस जनशक्ति का प्रबंधन उचित तरीके से किया जाना चाहिए। हार्ड पावर और सॉफ्ट पावर दोनों स्तरों पर जिसे हम स्मार्ट पावर कहते हैं, उसका उपयोग कर देश को सशक्त बनाने की आवश्यकता है। आत्मनिर्भरता और स्वावलंबन की चर्चा करते समय हमें कोरोना काल में वैक्सीन निर्मिति में भारत के योगदान को लेकर भी विचार करना होगा। हमने अपने भारत देश में कोरोना की वैक्सीन बनाई है। अब जहाँ विश्व के सामने मंकीपॉक्स बीमारी की चुनौती है, इस पृष्ठभूमि पर कहा जा रहा है कि इसका भारतीयों पर अधिक असर नहीं पड़ेगा। इसका कारण यह है कि हमने स्मॉलपॉक्स जैसी बीमारी के खिलाफ पहले ही वैक्सीन विकसित की है और इस तरह हमने स्मॉलपॉक्स बीमारी पर काबू पा लिया है।

व्हिजन डॉक्युमेंट की आवश्यकता

देश के स्वर्णिम भविष्य के लिए व्हिजन डॉक्युमेंट का होना जरूरी है। चीन के पास ऐसा व्हिजन डॉक्युमेंट है। इनके व्हिजन डॉक्युमेंट में यह विचार किया गया है कि चीन के निर्माण के 100 वर्ष बीत जाने पर चीन कहाँ होगा। भारत को भी इस तरह के व्हिजन की आवश्यकता है। देश के सामने दूसरी बड़ी चुनौती है – एकता की। पाकिस्तान के पूर्व राष्ट्रपति मुशर्रफ, पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान ने बयान दिया है कि यदि वे भारत में स्थित विभिन्न धर्मों, जातियों, भाषाओं जैसे फॉल्टलाइन्स पर अधिक-से-अधिक हमला करते हैं, तो वे भारत को विभाजित करने में सक्षम होंगे। ईशान्य भारत में चीन की बड़ी चुनौती है। यदि शत्रु के इरादों को सफल नहीं होने देना है, तो सभी भारतीय लोगों में भारतीयता तथा एकता की भावना पैदा करनी आवश्यक है। इसके साथ ही देश में राजनीतिक, नौकरशाही, सेना (बी.एस.एफ., सी.आर.पी.एफ. और अन्य केंद्रीय पुलिस एजेंसियों, खुफिया विभाग तथा तीन सशस्त्र बलों सहित) के बीच उत्तम समन्वय होना भी जरूरी है।

निष्कर्ष

यदि भारत बदलती तकनीकी को आत्मसात कर, आत्मनिर्भरता की ओर तेजी से बढ़ते हुए, देश की युवा शक्ति का उचित प्रबंधन कर, शिक्षा प्रणाली में उचित परिवर्तन कर अनुसंधान को बढ़ावा देकर, राजनीतिक-नौकरशाही-सेना के बीच उचित समन्वय स्थापित करने के लिए कदम उठाकर आगे बढ़ेगा तो आने वाले समय में भारत हर क्षेत्र में समृद्ध और आज से भी अधिक सक्षम परिलक्षित होगा। मैं हमेशा आशावादी रहता हूँ। मुझे विश्वास है कि सन् 2047 में हम अपनी अगली पीढ़ी को एक सक्षम और समृद्ध भारत सौंपेंगे। ❑

सैन्य शिक्षा एवं प्रशिक्षण की आवश्यकता

प्रो. प्रकाश चंद्र अग्रवाल

प्राचार्य
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान,
भुवनेश्वर (ओडिशा)

प्राचीन भारतीय सैनिक शिक्षा केवल राजकुमारों और क्षत्रियों तक ही सीमित थी। यही समझा जाता था कि देश की सुरक्षा का भार केवल उन्हीं के कन्धों पर सुरक्षित है। सैनिक प्रशिक्षण के लिये सभी छोटे-छोटे राज्यों में विधिवत् सैनिक आश्रम और आचार्य सुनिश्चित थे, प्रशिक्षण की अवधि भी निश्चित होती थी। उस अवधि के पश्चात् एक सैनिक, योद्धा समझा जाता था। महाभारत काल में भी गुरु द्रोणाचार्य सैनिक शिक्षा के ख्यातनाम विशेषज्ञ थे, जिन्होंने एकलव्य और कर्ण को क्षत्रियेतर होने के कारण प्रशिक्षण प्रदान करने से मना कर दिया था। इस प्रकार यह कहना चाहिये कि उस काल में राजकुमारों तथा क्षत्रियों के लिये सैनिक शिक्षा अनिवार्य थी। उस समय की शिक्षा केवल एकांगी ही नहीं थी अपितु गुरुकुल के आचार्य अध्येता (विद्यार्थी) के सर्वांगीण उन्नति के लिये कटिबद्ध होते थे।मौर्यकाल में नालन्दा तथा तक्षशिला ऐसे ही विश्वविद्यालय थे, जिनमें आम विषयों के अध्ययन के साथ-साथ सैनिक शिक्षा के अध्ययन का भी प्रबन्ध था।

भारतवर्ष अपनी आध्यात्मिकता के लिये प्रारम्भ से ही प्रसिद्ध है। वैराग्यपूर्ण जीवन, त्याग, तपस्या, बलिदान और संतोष आदि में यहाँ के निवासियों ने परम शान्ति और सुख का अनुभव किया है। उनकी दृष्टि में भौतिकवाद एक हास्यास्पद और हेय विषय था। उनके सिद्धान्त थे- 'ब्रह्मम सत्यं जगन्मिथ्या' अर्थात् ब्रह्म ही सत्य है, संसार मिथ्या है।

''जिस देश में घर-घर सैनिक हों, जिसके देशज बलिदानी हो। वह देश स्वर्ग है, जिसे देख अरि के मस्तक झुक जाते हों।।''

-आर. एन. गौड़

'त्वदीयं वस्तु' 'गोविन्द तुभ्यमेव समर्पये' अर्थात् हे ईश्वर! यह सब कुछ तुम्हारा ही है, इसलिए यह सब तुमको ही अर्पण है। उनकी दृष्टि में शारीरिक शक्ति, आत्मिक शक्ति के समक्ष नगण्य थी। शरीर नाशवान है, फिर नाशवान् वस्तु के लिये सुख और शान्ति का प्रश्न ही क्या जैसा विचार उन्हें आध्यात्म की ओर प्रेरित करता था। 'अहिंसा परमो धर्म: यतोधर्मस्ततो जय:' आदि पुनीत वाक्यों को मनन करने वाले भारतीय मनीषियों को हिंसा की आवश्यकता नहीं थी। तमोगुण उनसे दूर था, वे सतोगुणी थे।

सैनिक शिक्षा तथा हिंसा-वृत्ति दोनों अन्योन्याश्रित हैं। अत: जनसाधारण को सैनिक शिक्षा की आवश्यकता नहीं होती थी। वह केवल शासकों और शासकीय वर्ग तक ही सीमित थी। वे युद्ध कला में पारंगत होते थे, उन्हें अपने देश की आन-मान-शान पर गर्व था। वे अपने देश की रक्षा के लिये प्राणोत्सर्ग कर देते थे। परन्तु इस धर्मपरायण देश की अधिकांश जनता धर्म-भीरु थी। दया, अहिंसा, क्षमा ये ही

उसके प्रधान गुण थे। सैनिक शिक्षा की थोड़ी बहुत बची प्रवृत्ति भी शनैः शनैः धर्म के आवरण में लुप्त हो गई व राष्ट्र छोटे-छोटे असंगठित प्रदेशों में विभाजित हो कर अपनी अपनी साधना में लगे रहे। हालांकि शासक वर्ग ऊर्जावान व उच्चकोटि के योद्धा थे, मगर विभाजित थे। परिणाम यह हुआ की भारत की यह पवित्र धरा विदेशियों से पदाक्रान्त हो गयी। उनके पास धन था, अपार सैनिक शक्ति थी और पारस्परिक दृढ़ संगठन था। हमारी दृढ़ सैनिक शक्ति के अभाव में हमारा देश परतन्त्रता की शृंखला में जकड़ गया और कई शताब्दियों तक इसी अवस्था में बना रहा।

आज का युग परमाणु युग है। चारों ओर हाहाकार और युद्ध की विभीषिका ही कर्णगोचर हो रही हैं। एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र को बलात् अपने आधिपत्य में करना चाहता है। बड़े-बड़े कूटनीतिज्ञ अहर्निश इसी बात के चिंतन में रहते हैं कि किस प्रकार अन्य राष्ट्रों को नीचा दिखाया जाए। हिरोशिमा और नागासाकी के भयावह विध्वंसात्मक दृश्यों ने विश्व की शिराओं में एक बार फिर प्रकम्पन की लहर उत्पन्न कर दी है। प्रत्येक राष्ट्र अपने-अपने हितों की रक्षा के लिये प्रयत्नशील है। अनन्त साधनाओं, तपस्याओं तथा बलिदानों के पश्चात् हमारे देश को स्वतन्त्रता प्राप्त हुई और आज हम स्वतन्त्र हैं। अहिंसा, अस्तेय, दया, क्षमा आदि गुण आज भी भारत के आभूषण हैं, परन्तु फिर भी विश्व का जटिल एवं संघर्षमय वातावरण सम्भवतः उसे शान्त न रहने दे और यदि हम समय के विपरीत शान्त रहे तो सम्भव है कि हमारी स्वतन्त्रता को हर समय खतरा बना रहे और हम सदैव सदैव के लिये इतिहास के पृष्ठों से समाप्त हो जायें। 'वीरभोग्या वसुन्धरा' का सिद्धान्त सभी युगों में सभी कालों में सत्य रहा है और रहेगा। असहिष्णु शक्तिशाली सदैव अशक्तों को अपना ग्रास बनाते हैं और बनाते रहेंगे। उनसे रक्षा के लिये प्रत्येक राष्ट्र को अपनी सैन्य शक्ति सुदृढ़ करनी होगी। सैन्य शक्ति सुदृढ़ तभी हो सकती है, जबकि राष्ट्र का प्रत्येक नागरिक सैनिक शिक्षा प्राप्त कर चुका हो और आवश्यकता पड़ने पर देश की आन्तरिक तथा बाह्य सुरक्षा के लिये सदैव कटिबद्ध रहे। अतः आज भारतवर्ष को अनिवार्य सैनिक शिक्षा की आवश्यकता है। यद्यपि यह कार्य शासन के लिये व्यय-साध्य अवश्य है, फिर भी इसमें हमारे गौरवशाली देश का कल्याण निहित है।

शिक्षा के अनेक रूप होते हैं। वह चाहे किसी भी रूप और प्रकार की हो, उसका अपना विशेष उद्देश्य और महत्त्व हुआ करता है। अन्य विषयों की शिक्षा के समान ही सैनिक शिक्षा का महत्त्व भी अंकित किया जाता है। देश की सीमाओं की रक्षा के अतिरिक्त देश की आन्तरिक व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने के लिए भी सैनिकों की आवश्यकता होती है। पाकिस्तान ने जब 1948 में कश्मीर पर आक्रमण किया, फिर 1965 तथा 1971 में भारत पर आक्रमण किया, तो हमारे सैनिकों ने ही शत्रुओं के दाँत खट्टे किये। इस प्रकार सैनिकों ने ही चीनियों को भी 1962 में भारत की पवित्र भूमि पर आगे बढ़ने से रोका। इससे सैनिक जीवन और शिक्षा का महत्त्व स्पष्ट होता है।

हाल ही में घोषित अग्निपथ योजना, युवाओं के सैन्य अभिमुखीकरण, आत्मरक्षा व राष्ट्र सेवा के मूल्यों से ओत प्रोत, रणनीति युक्त योजना है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सैनिक शिक्षा व्यवस्था व्यक्ति और राष्ट्र दोनों के लिए अत्यावश्यक है। जिससे कि भारतवर्ष के नवयुवक जरूरत पड़ने पर देश की रक्षा के लिए प्रसन्नता से कुशलता पूर्वक स्थायी सेना को पूर्ण रूप से सहायता प्रदान कर सकें।

क्षेत्रफल के लिहाज से हमारा देश बहुत विस्तृत है कई सारे पड़ोसी देशों से हमारी सीमाएँ मिलती हैं। कुछ अच्छे मित्र तो कुछ विश्वासघाती पड़ोसी देश भी हमारे चारों ओर हैं। चीन और पाकिस्तान की मंशा तो हम पहले ही परख चुके हैं। ये दुश्मन देश की तरह आए दिन भारत में सेंध लगाने की फिराक में रहते हैं। कभी हमले की धमकी देते हैं तो कभी आतंकी भेजकर हमला कराते हैं। भले ही आज के युग को परमाणु युग कहा जाता

राष्ट्र की आन्तरिक और बाह्य आक्रमणों से रक्षा के लिए; सबल राष्ट्रों के शोषण के ग्रास न बनने के लिये तथा अपनी व्यक्तिगत, शारीरिक, मानसिक एवं नैतिक उन्नति के लिए सैनिक शिक्षा परमावश्यक है। यह शिक्षा उद्योगपति, अध्यवसायी व स्वालम्बी बनने में भी हमारा मार्ग प्रशस्त करती है। परन्तु स्मरण रहे कि यह सैनिक शिक्षा आत्मरक्षा और अपनी स्वतंत्रता की रक्षा के लिए ही हो न कि यह अशक्त राष्ट्रों के स्वातन्र्त्र्य अपहरण के लिए अन्यथा हम अपने आदर्श से गिर जायेंगे क्योंकि 'शक्तिः परेषां परिपीडनाय' का सिद्धांत पाश्विक है।

हो, मगर आज भी सैनिक शिक्षा के महत्त्व को कोई भी देश दरकिनार नहीं कर सकता है। आपसी संबंधों, संघर्षों तथा अशांति के माहौल में देश की सीमाओं तथा आंतरिक सुरक्षा के लिए सैनिक शिक्षा जरूरी है।

यह भी संभव नहीं है कि देश की सीमाओं के हर कोने पर सिपाही को तैनात कर दिया जाये क्योंकि शांतिकाल में किसी भी देश के लिए बड़ी फौज रखना संभव नहीं है अतः हमारे देश में ऐसी सेना की जरूरत है जो आवश्यकता पड़ने पर देश की रक्षा के लिए तैयार हो जाए, ऐसा स्कूलों में अनिवार्य सैनिक शिक्षा के माध्यम से ही संभव हो सकता है। देश भर में सैनिक शिक्षा के कई स्वरूप हैं। कहीं स्काउट तथा कहीं एन.सी.सी. के कैंप आयोजित कर विद्यार्थियों को इसके लिए प्रशिक्षित किया जाता है। इन कार्यक्रमों में छात्रों को अनुशासित जीवन जीना सिखाया जाता है। सैनिकों के निर्माण को कठोर अभ्यास के दौर से तो निकाला ही जाता है साथ ही उन्हें सैन्य गुप्तचर प्रणाली के लिए भी प्रशिक्षित किया जाता है। भारत में सैन्य प्रशिक्षण को मूलतः दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है (क) व्यक्तिगत प्रशिक्षण (ख) सामूहिक प्रशिक्षण। यह विभाजन प्रशिक्षार्थियों को प्रशिक्षण की प्रकृति के आधार पर किया जाता है।

व्यक्तिगत प्रशिक्षण का लक्ष्य सैनिक विशेष में ऐसी क्षमता का विकास करना हैं जिससे कि वह तकनीक-विशेष अथवा विषय विशेष में वांछित सफलता अर्जित कर सके या अगले प्रशिक्षण हेतु स्वयं को तैयार कर सके। अनेक ऐसे काम होते हैं जिसमें व्यक्तिगत रूप में उपस्कर- संचालन हेतु विशिष्ट ज्ञान एवं कौशल की आवश्यकता पड़ती है, जिसका प्रशिक्षण व्यक्तिगत रूप में ही दिया जा सकता है। व्यक्तिगत प्रशिक्षकों ने व्यक्तिगत प्रशिक्षण को वैचारिक प्रशिक्षण, दक्षता प्रशिक्षण, कार्य-प्रणाली प्रशिक्षण, निर्णय क्षमता प्रशिक्षण तथा योजना निर्धारण क्षमता प्रशिक्षण के रूप में विकसित किया है।

साधारणतया समान लक्ष्य की प्राप्ति हेतु गतिशील लोगों के समुच्चय को समूह के नाम से संबोधित किया जाता है व इनके प्रशिक्षण को समूह प्रशिक्षण कहा जाता है। इसके अन्तर्गत सैद्धान्तिक एवं प्रयोगात्मक प्रशिक्षण समाहित होते हैं। प्रथम विश्वयुद्ध एवं द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान लाखों सैनिकों की एक साथ भर्ती की गई, जिनका व्यक्तिगत प्रशिक्षण सम्भव न था, अतः उनके सामूहिक प्रशिक्षण की व्यवस्था सुनिश्चित की गई। वैसे भी अन्य गतिविधियों की दृष्टि से आपसी तालमेल, सहयोग व एक मशीन के रूप में एक साथ संक्रिया सम्पन्न करने के लिए भी उनका सामूहिक प्रशिक्षण आवश्यक होता है।

राष्ट्र की आन्तरिक और बाह्य आक्रमणों से रक्षा के लिए; सबल राष्ट्रों के शोषण के ग्रास न बनने के लिये तथा अपनी व्यक्तिगत, शारीरिक, मानसिक एवं नैतिक उन्नति के लिए सैनिक शिक्षा परमावश्यक है। यह शिक्षा उद्योगपति, अध्यवसायी व स्वालम्बी बनने में भी हमारा मार्ग प्रशस्त करती है। परन्तु स्मरण रहे कि यह सैनिक शिक्षा आत्मरक्षा और अपनी स्वतंत्रता की रक्षा के लिए ही हो न कि यह अशक्त राष्ट्रों के स्वातन्त्र्य अपहरण के लिए अन्यथा हम अपने आदर्श से गिर जायेंगे क्योंकि 'शक्तिः परेषां परिपीडनाय' का सिद्धांत पाश्विक है।

यदि हम चाहते हैं कि सबल राष्ट्रों के शक्तिशाली पंजों से, युद्धप्रिय कूटनीतिज्ञों की चालों से हम अपने देश की तथा न्याय की रक्षा कर सकें तब यह आवश्यक है कि महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों के अतिरिक्त नगरों और ग्रामों में भी सैनिक प्रशिक्षण केन्द्र खोल दिये जायें, जिससे कि भारतीय नवयुवक समय आने पर राष्ट्र की रक्षा के लिए प्रसन्नतापूर्वक स्थायी सेना को पूर्णरूप से सहायता प्रदान कर सकें और यदि आवश्यकता पड़े तो सहर्ष प्राणोत्सर्ग कर सके। ❑

भारत में आज एक समावेशी सैन्य शिक्षा की आवश्यकता है। चूँकि नई शिक्षा नीति में भी संस्कार के साथ देशभक्ति से सराबोर शिक्षा की आवश्यकता पर जोर दिया गया है, अत: सरकार को इस दिशा में एक प्रभावी नीति तैयार करनी चाहिए, क्योंकि यदि विद्यार्थी और युवा वर्ग सैन्य रूप से शिक्षित व प्रशिक्षित रहता है, तो सामान्य शांति काल में भी वह देश-हित में बहुत कुछ कर सकता है। वह राष्ट्र-निर्माण के कार्यों में सहायता पहुँचा सकता है, प्राकृतिक विपदाओं के समय देश के धन-जन की रक्षा कर सकता है।

भारत में सैन्य शिक्षा की आवश्यकता

प्रो. (डॉ.) हरेन्द्र सिंह

प्रोफेसर, प्राचार्य एवं निदेशक
डी. पी. एम. इंस्टीटयूट ऑफ़ एजुकेशन बहसूमा, चौ. चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ (उ. प्र.)

वर्तमान समय परमाणु युग है। विश्व पटल पर जब हम दृष्टि डालते हैं तो चारों ओर हाहाकार और युद्ध की विभीषिका ही दृष्टिगोचर होती है। आज की स्थिति ऐसी है कि एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र को अपने आधिपत्य में करना चाहता है। बड़े-बड़े कूटनीतिज्ञ भी इसी बात के चिंतन में लगे रहते हैं कि किस प्रकार अन्य राष्ट्रों को अपने अधीन किया जाए। इसके विपरीत अहिंसा, अस्तेय, दया, क्षमा आदि गुण आज भी भारत के आभूषण हैं, परन्तु फिर भी विश्व के जटिल एवं संघर्षमय वातावरण के कारण हमारी स्वतन्त्रता को हर समय खतरा बना रहता है। प्रकृति का यह शाश्वत नियम है कि सबल निर्बल को, बड़े छोटे को, और धनी निर्धन को अपना ग्रास बनाते हैं और बनाएंगे। शक्तिशाली सदैव अशक्तों को अपना ग्रास बनाते रहे हैं। और यह भी शाश्वत सत्य है कि 'वीरभोग्या वसुन्धरा' का सिद्धान्त सभी युगों में और सभी कालों में रहा है और रहेगा। इसलिए व्यक्ति से लेकर राष्ट्र तक सभी के लिए यह अनिवार्य आवश्यकता हो जाती है कि वह आज अपनी सैन्य शक्ति का समुचित विस्तार करे। किसी भी राष्ट्र की सैन्य शक्ति का विस्तार और मजबूती तभी होगी जब उसका प्रत्येक नागरिक सैन्य शिक्षा में दक्ष हो। और यही आज भारत की भी आवश्यकता है।

हमारे भारतीय संविधान के अनुच्छेद 51-ए (डी) में उल्लिखित है कि, ''प्रत्येक भारतीय नागरिक का कर्तव्य है कि वह राष्ट्र सेवा और रक्षा के लिए तत्पर रहे।'' परन्तु प्रश्न यह कि क्या हम राष्ट्र की रक्षा के लिए सक्षम नागरिक निर्माण की पर्याप्त व्यवस्था विगत 75 वर्षों में विकसित नहीं कर पाए हैं? इस समय विश्व के लगभग सात दर्जन से भी अधिक देशों के स्कूली पाठयक्रमों में सैन्य शिक्षा के अलग-अलग प्रविधान हैं जिनमें सैन्य शिक्षा एवं प्रशिक्षण अनिवार्य है। ईरान, इराक, इजरायल, मिस्र, ताइवान, रूस, जर्मनी, सूडान, कोरिया, अंगोला एवं अल्जीरिया आदि आज ऐसे प्रमुख देश हैं जिनमें सैन्य शिक्षा अनिवार्य है। विश्व के कई अन्य देशों ने भी सैन्य शिक्षा के महत्त्व को समझते हुए इसे अनिवार्य किया गया है। ब्राजील, दक्षिण कोरिया, तुर्की, सीरिया, स्विट्जरलैंड, व इरीट्रिया जैसे देश भी आज सैन्य शिक्षा नीति को लागू किए हुए हैं। ये देश भी मानते हैं कि सैन्य शिक्षा को अनिवार्य बनाकर हमें निष्ठावान युवाओं की एक ऐसी सेना मिल जाएगी जो आवश्यकता पड़ने पर शत्रु के विरुद्ध अजेय चट्टान तो साबित होगी ही तथा शांति के समय अनेक प्रकार के आतंकवाद, हिंसा, महामारी आदि को रोकने तथा आर्थिक और सामाजिक क्रांतियों को लाने में भी अपना योगदान देगी। अनिवार्य सैन्य शिक्षा की महत्ता को देखते हुए ही स्वीडन के सम्राट गुस्तावस एडोल्फस ने अनिवार्य सैन्य भर्ती योजना लागू करके अनेक सफलताएँ अर्जित कर सत्रहवीं शताब्दी के सर्वश्रेष्ठ सैन्य अग्रदूत के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त की थी तथा सैन्य प्रतिभा के धनी, महान सैन्य विचारक, दुर्दमनीय योद्धा व महान शासक नैपोलियन ने अनिवार्य सैन्य सेवा योजना लागू करके अपनी सैन्य शक्ति को कई गुना अधिक

बढ़ाकर विभिन्न प्रकार की विजय प्राप्त की थीं।

आश्चर्य होता है कि भारत सरकार ने देश में सरकार, गैर सरकारी संगठनों, प्राइवेट स्कूलों और राज्य सरकारों के साथ पार्टनरशिप में 100 नये सैनिक स्कूल बनाए जाने के लिए अब जाकर पहल की है परन्तु जहाँ एक ओर लगभग 90 लाख की आबादी वाले इजरायल जैसे देशों में तो अनिवार्य सैन्य शिक्षा की व्यवस्था है, वहीं 135 करोड़ की आबादी वाले भारत में मात्र पाँच मिलिट्री स्कूल और 33 सैन्य स्कूल हैं जिनमें केवल तीन हजार विद्यार्थियों को ही प्रवेश मिल सकता है। भारत की केंद्र सरकार ने बीते वर्ष केवल 60.51 करोड़ रुपये की राशि ही इन स्कूलों के लिए आवंटित की थी। पाँच मिलिट्री स्कूलों के लिए तो यह राशि महज 6.17 करोड़ रुपये ही थी। जबकि अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय को केंद्र सरकार से 1001 करोड़ रुपये और जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय को लगभग 380 करोड़ रुपये प्राप्त हुए थे। इन दोनों विश्वविद्यालयों में अभिव्यक्ति की आजादी के नाम पर क्या कुछ होता रहता है, यह किसी से छिपा नहीं है। हालाँकि 100 नये सैनिक स्कूल बनाए जाने के लिए पहल भी एक कदम सैन्य शिक्षा की ओर है।

अन्य राष्ट्रों की तुलना में भारत को आंतरिक एवं बाहरी सुरक्षा के लिए अधिक खतरा है। देश की संपत्ति की सुरक्षा तक के लिए भारत सरकार को सार्वजनिक अपील करनी पड़ती है। जिस तरह से भारत दशकों से आतंकवाद के दंश को भोग रहा है वह हमारे नागरिकों की संलिप्तता के बिना संभव नहीं है। दुर्भाग्य यह है कि भारत की स्वतंत्रता के बाद नागरिकों में देशभक्ति और अनुशासन सिखाने के मामले में सरकारें पूरी तरह से उदासीन रही हैं। वास्तव में संवैधानिक रूप से ही नागरिक जीवन में देशभक्ति को अनिवार्यता के धरातल पर नहीं उतारा गया। इसीलिए कहीं-कहीं तो सुरक्षाबलों और सेना पर लोग खुलेआम पथराव को अपना अधिकार मानने लगे हैं। मौजूदा राजनीतिक वातावरण में भी केवल नागरिक अधिकारों एवं तुष्टीकरण की ही बातें होती रही हैं। संविधान सभा के सदस्य डॉ. हृदयनाथ कुंजरू ने वर्ष 1959 में सैन्य शिक्षा को देश में अनिवार्य करने की वकालत की थी ताकि भारतीय युवा न केवल स्वस्थ्य हों, बल्कि वे देशसेवा के लिए सदैव मानसिक रूप से तैयार रहें। वर्ष 2014 में राज्यसभा सांसद अविनाश राय खन्ना ने एक निजी विधेयक के जरिये कहा था कि रूस और इजरायल की तर्ज पर भारत के किशोरों व युवाओं को भी अनिवार्य सैन्य प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। साथ ही स्कूल में 10वीं स्तर तक के पाठ्यक्रम में भी सैन्य प्रशिक्षण को शामिल किया जाना चाहिए। मार्च 2018 में संसद की रक्षा मामलों की स्थायी समिति ने भी इस बात की सिफारिश की थी कि केंद्र व राज्य की सरकारी नौकरियों के लिए पाँच वर्षीय सैन्य सेवा अनिवार्य कर दी जानी चाहिये। इसके पीछे एक उद्देश्य यह भी था कि इससे सेना में जवानों व अधिकारियों की कमी भी पूरी हो जाएगी तथा लोगों में टीम भावना आयेगी, श्रम के प्रति आदर की भावना पैदा होगी, कर्त्तव्य-बोध होगा और उनके चरित्र का विकास होगा। देश की प्रगति के लिए इन अनिवार्य सद्गुणों का विकास सैन्य शिक्षा के द्वारा ही हो सकता है। सैन्य शिक्षा प्राप्त युवाओं को दैवी विपति में बचाव कार्यों के लिए भी बड़ी आसानी से लगाया जा सकता है। आग से हुई दुर्घटना में, बाढ़ और सूखा राहत कार्यों में और दंगों के दौरान भी इनका सफल उपयोग किया जा सकता है। इस तरह कई प्रकार के अर्द्धसैन्य बलों जैसे केन्द्रीय रिजर्व पुलिस, बी.एस.एफ. आदि पर व्यय होने वाली धनराशि में भी काफी बचत की जा सकेगी।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि आज हमारे भारतीय सैनिकों का प्रशिक्षण पर्याप्त संतोषजनक है, फिर भी नित्य प्रति परिवर्तनीय युद्ध-विधा के अनुरूप अभी हमारे सैनिकों को कुशलता की अनेक बाधाएँ पार करनी हैं। जिसके लिए देश में सैन्य शिक्षा के व्यापक प्रसार की आवश्यकता है। विशेषकर इसलिए भी कि चीन और पाकिस्तान जैसे कुछ देश भारत को अशांत करने की कुटिल योजना बनाते रहते हैं और उनसे सुरक्षित रहने व अपनी रक्षा के लिये राष्ट्र को अपनी सैन्य शक्ति सुदृढ़ करनी होगी। सैन्य शक्ति सुदृढ़ तभी हो सकती है, जबकि राष्ट्र का प्रत्येक नागरिक सैन्य शिक्षा प्राप्त कर चुका हो और आवश्यकता पड़ने पर देश की आन्तरिक तथा बाह्य सुरक्षा के लिये सदैव कटिबद्ध रहे। ऐसी परिस्थिति में देश के प्रत्येक स्वस्थ नागरिक के लिए सैन्य शिक्षा अनिवार्य होनी चाहिए।

जिस प्रकार आज की परिस्थीतियाँ हैं, इन परिस्थितियों में देश की आंतरिक एवं सीमावर्ती सुरक्षा अवस्था को देखते हुए भारत में आज एक समावेशी सैन्य शिक्षा की आवश्यकता है। चूँकि नई शिक्षा नीति में भी संस्कार के साथ देशभक्ति से सराबोर शिक्षा की आवश्यकता पर जोर दिया गया है, अत: सरकार को इस दिशा में एक प्रभावी नीति तैयार करनी चाहिए, क्योंकि यदि विद्यार्थी और युवा वर्ग सैन्य रूप से शिक्षित व प्रशिक्षित रहता है, तो सामान्य शांति काल में भी वह देश-हित में बहुत कुछ कर सकता है। वह राष्ट्र-निर्माण के कार्यों में सहायता पहुँचा सकता है, प्राकृतिक विपदाओं के समय देश के धन-जन की रक्षा कर सकता है। इस सबसे भी बढ़कर वह देशवासियों को संगठित रख उनका मनोबल बनाए-बढ़ाए रख सकता है। राष्ट्र को दृढ़ आस्था और विश्वास दे सकता है। इसके अतिरिक्त सैन्य प्रशिक्षण से लोगों में शारीरिक दक्षता के साथ देश के प्रति निष्ठा और एकता की भावना का निर्माण भी होता है। जिस तरह से भारतीय सेना अनुशासित हो कर देश की रक्षा के लिए अग्रणी रहती है, उसी प्रकार सैन्य शिक्षा से शिक्षित युवा सैन्य विचारधारा के साथ देश की प्रगति के लिए कार्य कर के सेना की ही भांति किसी भी क्षेत्र में आई विपत्ति का सामना करने में सक्षम युवाओं की सैन्य शक्ति 'देश के लिए' के सिद्धांत पर भी कार्य करेगी वीर भोग्या वसुंधरा और सैन्य बल में हमारा देश विश्व शक्ति के रूप में स्थापित होगा। ❑

सैन्य शिक्षा : अवधारणा और स्वरूप

विनोद कुमार

शोधार्थी- रक्षा एवं स्त्रातजीय अध्ययन विभाग,
का. सु. साकेत स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अयोध्या (उ.प्र.)

परिचय शिक्षा एक प्रकार की विधि है जिसे किसी विशेष उद्देश्य की पूर्ति के लिये निर्देशित किया जाता है जिसमें ज्ञान, चरित्र और ईमानदारी जैसे उद्देश्यों को रखा जाता है ताकि समाज और व्यक्ति दोनों का विकास लगातार चलता रहे यह इंसान के जीवन में बहुत जरूरी है अशिक्षित व्यक्ति पशु समान है जहाँ सामान्य शिक्षा व्यक्ति के उद्देश्य को सीमित करती है वहाँ पर सैन्य शिक्षा का उद्देश्य व्यापक रूप में देखने को मिलता है सैन्य शिक्षा द्वारा विद्यार्थियों में संगठन और अनुशासन की भावना, चरित्र का निर्माण, नेतृत्व के गुण और देश के प्रति समर्पण का भाव पैदा होता है।

सैन्य शिक्षा की उपयोगिता

ऐसा नहीं है सैन्य शिक्षा नई व्यवस्था है, आदिकाल से युद्ध की परंपरा चली आ रही है पहले जहाँ इसका दायरा केवल राजकुमारों और क्षत्रियों तक सीमित था केवल वही सैन्य शिक्षा हासिल करते थे लेकिन वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देखें तो आज सैन्य शिक्षा देश के नागरिकों के लिए अति आवश्यक है। अमेरिका, जर्मनी, रूस, चीन, जापान, इंग्लैंड आदि अनेक देशों ने इसे अपने वहाँ स्कूल कालेजों में अनिवार्य कर रखा है। सैन्य शिक्षा का क्षेत्र व्यापक है यह विज्ञान और कला दोनों है जिस प्रकार विज्ञान के सिद्धांत और नियम होते हैं उसी प्रकार सैन्य शिक्षा में सेना के संगठन युद्ध कला, कूट योजना और प्रबंधन के नियमों के अनुसार गहराई से अध्ययन किया जाता है जैसे विज्ञान से ज्ञान मिलता है और कला उस कार्य को करना सिखाती है यह एक प्रकार का कौशल है। ऐसा नहीं है कि सैन्य शिक्षा केवल सेना के बारे में ही बताती है। इसका सम्बन्ध लगभग सभी विषयों से है जैसे भूगोल एक सैन्य अध्ययन के विद्यार्थी को भूगोल की अच्छी समझ होगी क्योंकि भूगोल ही लड़ाई के स्वरूप को सुनिश्चित करता है इसी प्रकार इतिहास की समझ होगी युद्ध के देवता नेपोलियन का कहना है ''यदि युद्ध कला के भेदों को जानना है तो अपने सेना नायकों का बार-बार अध्ययन करो उन्हें अपना आदर्श बनाओ''। इस प्रकार इतिहास जोश पैदा करता है इसके अतिरिक्त अर्थशास्त्र, राजनीतिक विज्ञान और मनोविज्ञान विषय की समझ, सैन्य शिक्षा का विद्यार्थी अन्य विषयों के विद्यार्थियों से अधिक रखता है जिसे आचार्य कौटिल्य के इस वाक्य से समझा जा सकता है ''एक धनुष धारी के धनुष का तीर हो सकता है, किसी की जान न ले पाये, लेकिन बुद्धिमान व्यक्ति द्वारा बुद्धि का प्रयोग, माँ के पेट में पल रहे शिशु को भी मार सकता है''। इससे सैन्य शिक्षा की व्यापकता को समझा जा सकता है।

सैन्य शिक्षा की जरूरत

पहले के युद्ध सीमित होते थे और वो केवल राजा उनके सेनापतियों और

शिक्षा एक विधि है जिसे किसी विशेष उद्देश्य की पूर्ति के लिए निर्देशित किया जाता है जबकि सैन्य शिक्षा का उद्देश्य व्यापक रूप में होता है यह अपने विद्यार्थियों में अनुशासन, चरित्र, नेतृत्व और देश के प्रति त्याग की भावना पैदा करती है। सैन्य शिक्षा का विद्यार्थी रिजर्व सेना के रूप में देश की बहुमूल्य सम्पदा बन जाता है।

सैनिकों द्वारा लड़े जाते थे लेकिन आज ऐसा नहीं है। आज का युद्ध पूरे देश पर प्रभाव डालता है, देश युद्ध का हिस्सा होता है इसलिए जरूरी है सैन्य शिक्षा जैसे विषय को स्कूल कालेजों में अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाया जाए ताकि विद्यार्थियों में देश प्रेम की भावना पैदा हो।

अच्छी लीडरशीप का होना जरूरी है। सैन्य शिक्षा प्राप्त विद्यार्थी अच्छा नेतृत्व देने की झमता रखता है क्योंकि आज का विद्यार्थी कल का सैनिक या नेता हो सकता है दुर्भाग्य वश आज विनाशकारी हथियारों का कंट्रोल नेताओं के पास है।

आंतरिक सुरक्षा की जानकारी होना किसी भी समस्या को तब तक हल नहीं किया जा सकता जब तक उसके लक्षणों, स्वभाव और व्यवस्था की जानकारी न हो। इसलिए युद्ध और सुरक्षा ऐसा विषय है जिसे केवल सैनिकों के भरोसे नहीं छोड़ा जा सकता सैन्य शिक्षा प्राप्त विद्वान व्यक्ति इसे आसानी से समझ कर कोई न कोई हल निकाल सकता है। सैन्य शिक्षा मनोबल ऊँचा रखती है इजराइल जैसा छोटा देश तीन तरफ से दुश्मनों से घिरा है उसके बाद भी अपनी आंतरिक और बाह्य सुरक्षा को लेकर निर्भय है जिसका एकमात्र कारण सैन्य शिक्षा का अनिवार्य रूप से स्कूल कालेजों में पढ़ाया जाना और सैन्य शिक्षा के कारण ही वहाँ के लोगों में राष्ट्रवाद कूट-कूट कर भरा है। शांति के लिए सैन्य शिक्षा जरूरी है देश में फैले नक्सलवाद, आतंकवाद, भाषावाद, साम्प्रदायिकता, जातीय विद्रोह ऐसी समस्याओं को केवल सैनिक शक्ति से हल नहीं किया जा सकता। इसके लिए जरूरी है देश के नागरिकों में राष्ट्रीय सुरक्षा का भाव पैदा हो और ये केवल सैन्य शिक्षा के द्वारा ही पैदा हो सकता है। युद्धों को रोकने में मदद मिलती है लिडल हार्ट ने कहा था ''यदि शांति चाहते हो तो युद्ध को समझो'' लेकिन युद्ध को केवल उसका कारण, पड़ने वाले प्रभाव, परिणामों पर गहन चिंतन से ही समझा जा सकता है और ऐसा केवल सैन्य शिक्षा के विद्यार्थियों के लिए सम्भव है इसलिए लगभग सभी विकसित राष्ट्रों ने सैन्य शिक्षा को अपने स्कूल कालेजों में अनिवार्य बनाया हुआ है।

आपात काल में तैयार रहना

सैन्य शिक्षा अपने नागरिकों को राष्ट्र पर आने वाली हर मुसीबत का सामना करना सिखाती है। यदि युद्ध होता है या कोई प्राकृतिक आपदा आती है उस समय सैनिकों का इतने बड़े देश में सभी जगह पर पहुँच कर मदद करना असंभव है उस दौरान सैन्य शिक्षा प्राप्त वह नागरिक, वो विद्यार्थी, वो भारत माँ का बेटा एक हृष्ट कैडेट के रूप में, प्रादेशिक सेना, रिजर्व सेना के रूप में देश की बहुमूल्य सम्पदा बन जाता है।

निष्कर्ष

आज परमाणु युग में आंतरिक सुरक्षा के लिये और आने वाली भिन्न-भिन्न चुनौतियों का सामना करने के लिए सैन्य शिक्षा बहुत जरूरी है यह सम्भव नहीं है कि देश की सीमाओं के हर कोने पर सिपाही तैनात हो। वैसे भी शांति काल में बड़ी सेना रखना सम्भव नहीं है इसलिए देश को ऐसी सेना की जरूरत है जो आवश्यकता पड़ने पर और किसी भी प्रकार की विपदा आने पर एक आह्वान पर तैयार मिले ऐसा तभी सम्भव है जब हमारे स्कूल कालेजों में सैन्य शिक्षा को अनिवार्य रूप से लागू किया जाए। युद्ध होने पर या किसी विपदा आने पर देश के युवाओं का आह्वान करना वैसा ही है जैसे प्यास लगने पर कुआँ खोदना जिसे बुद्धिमता नहीं कहा जा सकता। सैन्य शिक्षा की अनिवार्यता होने पर घर-घर में देश के रक्षक मिलने लगेंगे, लड़का लड़की के बीच में शारीरिक निर्बलता का डर कम होगा, देश के लोगों में देश के प्रति कर्तव्यों का बोध होगा। ❑

एनसीसी - सैन्य शिक्षा एवं औपचारिक शिक्षा

कै. (डॉ.) मनोज कुमार यादव
एनसीसी अधिकारी व
सह आचार्य, वनस्पति विज्ञान
विभाग, सम्राट पृथ्वीराज
चौहान, राजकीय महाविद्यालय,
अजमेर (राजस्थान)

बीसवीं शताब्दी ने सामाजिक विकास में शिक्षा को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया। विद्यालय, महाविद्यालय व विश्वविद्यालय खोले तथा लगभग पश्चिमी ढाँचे के स्थूल रूप का अनुकरण कर एक शिक्षा व्यवस्था स्थापित की। सन् 1937 में महात्मा गांधी जी द्वारा प्रस्तावित 'बुनियादी शिक्षा' एवं रविंद्र नाथ ठाकुर द्वारा स्थापित 'शांतिनिकेतन' की सहज, सृजनशील शिक्षा व्यवस्था से हम दूर चले गए। इस शिक्षा व्यवस्था से हमने काफी लोगों को पढ़ाया लेकिन जिनको पढ़ाया उनको वास्तव में जिंदगी से अलग-थलग कर दिया, काफी लोगों को हमने पढ़ने से पहले ही स्कूल से बाहर कर दिया और कितने ही लोगों को हमने स्कूल में प्रवेश ही नहीं दिया। इस प्रकार बीसवीं सदी में हम शिक्षा प्राप्त करने संबंधी हमारे प्रत्येक नागरिक के आधारभूत अधिकार की सुरक्षा नहीं कर पाए।

21वीं सदी की पहली शिक्षा नीति राष्ट्रीय नीति 2020 को केंद्रीय मंत्रिमंडल ने माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में मंजूरी दे दी है जिससे स्कूली और उच्च शिक्षा दोनों क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर रूपांतरकारी सुधार के रास्ते खुल गए हैं। इसका उद्देश्य स्कूल और कॉलेज की शिक्षा को अधिक समग्र व लचीला बनाते हुए भारत को ज्ञान आधारित जीवंत समाज और ज्ञान की वैश्विक महाशक्ति में बदलना तथा भारत के प्रत्येक विद्यार्थी में निहित अद्वितीय क्षमताओं को सामने लाना है। इस नई शिक्षा नीति के माध्यम से विद्यार्थियों को सैन्य शिक्षा, औपचारिक शिक्षा और गैर औपचारिक शिक्षा सहित पढ़ाई के लिए बहु स्तरीय सुविधाएँ उपलब्ध कराकर स्कूल से दूर रहे लगभग दो करोड़ बच्चों को मुख्यधारा में वापस लाया जाएगा।

भारतीय युवाओं को अनुशासित रखने एवं राष्ट्रवाद की भावना जाग्रत करने के लिए केंद्र सरकार राष्ट्रीय युवा अधिकारिता योजना बना रही है इस योजना के तहत सरकार प्रतिवर्ष 10 लाख युवाओं को सैन्य प्रशिक्षण देगी।

सैन्य शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा हम अपने युवाओं को राष्ट्र की सुरक्षा हेतु सैन्य भूमिकाओं के बारे में जाग्रत करते हैं तथा सैन्य शिक्षा से विद्यार्थियों में संगठन एवं अनुशासन की भावना जाग्रत होती है। किसी भी राष्ट्र की सुरक्षा और शक्ति उस देश की सेना पर निर्भर करती है। संगठित और प्रशिक्षित सेना राष्ट्र को सबल बनाती है। भारत के युवाओं ने स्वतंत्रता की लड़ाई में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया था अब स्वतंत्र भारत की सुरक्षा और नव निर्माण के लिए

देश की युवा शक्ति को सैन्य शिक्षा एवं औपचारिक शिक्षा के माध्यम से देश के सैन्य बल को तकनीकी रूप से और अधिक मजबूत करने की आवश्यकता है। देश की वह युवा शक्ति जो भारतीय सेना में शामिल होकर देश सेवा को अपना करियर बनाना चाहते हैं उसके लिए विद्यालय, महाविद्यालय व विश्वविद्यालय स्तर पर एनसीसी एक उत्तम माध्यम बन सकता है। युवाओं में सेना के प्रति जागरूकता लाने और उन्हें सैन्य स्तर पर तैयार करने के लिए 16 अप्रैल 1948 को एनसीसी का गठन किया गया था जिसका संबंध भारत की तीनों सेनाओं जल सेना, थल सेना और वायु सेना से है। यह भारत का राष्ट्रीय कैडेट कोर है जो छात्र और छात्राओं को सैन्य प्रशिक्षण प्रदान करता है यह देश के युवाओं को जागृत करने, जोश दिलाने और सेना में हिस्सा लेने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। सेना इन एनसीसी कैडेट्स को ट्रेनिंग देती है। इसका मुख्यालय नई दिल्ली में है। सन् 1988 में राष्ट्रीय कैडेट कोर का उद्देश्य निर्धारित हुआ था यह देश की वर्तमान सामाजिक आर्थिक परिदृश्य में अपेक्षित आवश्यकताओं को पूरा कर रहा है।

* देश के सभी क्षेत्रों में नेतृत्व प्रदान करने और राष्ट्र की सेवा के लिए हमेशा उपलब्ध रहने के लिए संगठित प्रशिक्षित और प्रेरित युवाओं का मानव संसाधन बनाना।

* सशस्त्र बलों में करियर बनाने के लिए युवाओं को प्रेरित करने के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान करना।

* युवाओं में चरित्र निर्माण, अनुशासन, धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण, साहस की भावना तथा स्वयं सेवा के आदर्शों को विकसित करना एनसीसी के मुख्य उद्देश्य है।

एनसीसी कैडेट्स को शारीरिक प्रशिक्षण के साथ-साथ सैन्य शिक्षा एवं औपचारिक शिक्षा भी दी जाती है जिससे कैडेट्स में नेतृत्व की योग्यता,

आत्मविश्वास, सम्मान की भावना, संचार कौशल एवं भारतीय सेना में जाकर देश सेवा की भावना जागृत होती है। जीवन के हर क्षेत्र में कार्य करने के लिए अनुशासन और आत्मनिर्भरता की आवश्यकता होती है जिसे एनसीसी के माध्यम से आसानी से प्राप्त किया जा सकता है। सैन्य शिक्षा एवं औपचारिक शिक्षा हेतु वर्षपर्यंत कैडेट्स के लिए विभिन्न कैंपों का आयोजन किया जाता है जिसमें ए.टी.सी. (वार्षिक प्रशिक्षण शिविर), सी.ए.टी.सी. (संयुक्त वार्षिक प्रशिक्षण शिविर), ई.बी.एस.बी. (एक भारत श्रेष्ठ भारत), वी.एस.सी. (वायु सैनिक शिविर), एन.एस.सी. (नौ सैनिक शिविर), टी.एस.सी. (थल सैनिक शिविर), आर.सी.टी.सी. (रॉक क्लाइंबिंग प्रशिक्षण शिविर), आर. डी.सी. (गणतंत्र दिवस शिविर), नेतृत्व शिविर, नौकायन विशेष प्रशिक्षण शिविर और अटैचमेंट प्रशिक्षण शिविर प्रमुख है।

स्वतंत्र भारत की सुरक्षा और नव निर्माण के लिए देश की युवा शक्ति को सैन्य शिक्षा एवं औपचारिक शिक्षा के माध्यम से देश के सैन्य बल को तकनीकी रूप से और अधिक मजबूत करने की आवश्यकता है। देश की वह युवा शक्ति जो भारतीय सेना में शामिल होकर देश सेवा को अपना करियर बनाना चाहते हैं उसके लिए विद्यालय, महाविद्यालय व विश्वविद्यालय स्तर पर एनसीसी एक उत्तम माध्यम बन सकता है।

माननीय रक्षा मंत्री महोदय द्वारा दिनांक 27 अगस्त 2020 को एनसीसी कैडेट्स के लिए सैन्य शिक्षा एवं औपचारिक शिक्षा हेतु एक प्रशिक्षण ऐप लॉन्च किया। इस ऐप में एनसीसी पाठ्यक्रम, आत्मनिर्भर भारत, फिट इंडिया अभियान, नई शिक्षा नीति और स्वच्छता आदि विषयों को शामिल किया गया है। केंद्र एवं राज्य सरकार की नियुक्तियों में एनसीसी कैडेट्स को निम्न प्राथमिकताएँ

मिलती है –

– एनसीसी का 'सी' प्रमाण पत्र प्राप्त कैडेटस के लिए आई.एम.ए. (इंडियन मिलिट्री एकेडमी) में 64 सीटें रिजर्व होती हैं।

– शार्ट सर्विस कमीशन में 'सी.डी.एस.' की लिखित परीक्षा से छूट है।

– मल्टीनेशनल कंपनियाँ एन.सी.सी. प्रमाण-पत्र धारी को अपने जॉब्स में प्राथमिकता देती हैं।

– आर्म्ड और पैरामिलिट्री फोर्स में एन.सी.सी. कैडेट्स को छूट दी जाती है।

– नेवी और एयर फोर्स में भी एन.सी.सी. कैडेट्स को छूट दी जाती है।

– प्रतिवर्ष एनसीसी यूथ एक्सचेंज प्रोग्राम (वाई.इ.पी.) के तहत कुछ चुनींदा कैडेट्स को विदेश भेजा जाता है जिससे कैडेट्स को वहाँ की संस्कृति और सभ्यता को समझने का मौका मिलता है।

भारतीय युवाओं में राष्ट्रवाद की भावना पैदा करने के लिए केंद्र सरकार पी.एम.एन.वाई.ई.एस. (प्राइम मिनिस्टर नेशनल यूथ एंपावरमेंट स्कीम) योजना 2022 शुरू करने की योजना बना रही है।

इस योजना से प्रतिवर्ष 10 लाख युवाओं को प्रशिक्षण के लिए नामांकित किया जाएगा जिसके द्वारा यह योजना एक अनुशासित और 'राष्ट्रवादी फोर्स ऑफ यूथ' प्रदान करने पर भी अपना ध्यान केंद्रित करेगी। मोदी सरकार के अनुसार यह योजना भारत को विश्व गुरु बनाने और नए भारत के सपने को पूरा करने की दिशा में एक आवश्यक कदम है।

यह जरूरी नहीं कि सैन्य शिक्षा और सैन्य प्रशिक्षण युद्ध की विचारधारा से ही जुड़ा हुआ हो बल्कि यह एक प्रकार की राष्ट्र सेवा है। यह सेवा का एक अच्छा सामाजिक प्रभाव निवेश है। यह सेवा भारत के नागरिकों को उनकी जड़ों की याद दिलाती है और उन्हें राष्ट्र निर्माण के लिए एक अच्छे नागरिक होने का दायित्व भी समझा देती है।

इसी प्रकार औपचारिक शिक्षा के द्वारा भी भारतीय युवाओं को निश्चित समय में, निश्चित स्थान पर, निश्चित लोगों के द्वारा निश्चित उद्देश्य हेतु शिक्षा प्रदान की जाती है। इस शिक्षा का सबसे मुख्य स्थान विद्यालय, महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय परिसर हैं। इसके अतिरिक्त पुस्तकालय, चित्र भवन, कैंप आदि भी औपचारिक शिक्षा के माध्यम हैं। यह शिक्षा पूर्णकालिक तथा अध्यापक केंद्रित होती है। इस शिक्षा में पाठ्यक्रम को एक निश्चित समय में पूरा करने के साथ-साथ व्याख्यान विधि अथवा मौखिक शब्दावली का उपयोग किया जाता है। जब भारत का युवा विद्यार्थी लोगों के कार्यों को देखता है, उनमें भाग लेता है तथा उनका अनुकरण करता है ऐसे विद्यार्थियों को सचेत करके राष्ट्रप्रेम की भावना जागृत करते हुए जानबूझकर शिक्षा दी जाती है, जिससे वह औपचारिक रूप से शिक्षित हो जाता है।

वर्ष 2020 की शुरुआत भारतीय रक्षा इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण निर्णय के साथ सफल हुई। इस वर्ष सैन्य मामलों का विभाग बनाया गया और चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ (सीडीएस) का पद सृजित किया गया। यह पद सेना के तीनों अंगों से जुड़े मामलों में रक्षा मंत्री का प्रमुख सैन्य सलाहकार होता है।

केंद्र सरकार ने युवाओं को रोजगार की धारा में लाने एवं राष्ट्र के लिए कुछ करने हेतु 'अग्नि पथ भर्ती योजना 2022' लागू करने की घोषणा की है। इसके द्वारा युवाओं का भारतीय सेनाओं – थल सेना, वायु सेना और जल सेना में भर्ती होने का सपना पूरा होगा जिन्हें 'अग्निवीर' कहा जाएगा। अतः सैन्य शिक्षा एवं औपचारिक शिक्षा हमारे विश्व के सबसे बड़े युवा संगठन एनसीसी के द्वारा कैडेट्स को भारत के आर्थिक विकास के साथ-साथ सामाजिक विकास के मूल्यों को समझने में निश्चित रूप से कारगर सिद्ध होगी। ❑

भारतीय सैन्य अकादमी का राष्ट्र रक्षा और राष्ट्र निर्माण में योगदान

डॉ. विजयपाल यादव
तदर्थ शिक्षक
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान,
भुवनेश्वर (ओडिशा)

भारतीय सैन्य इकाई समूचे विश्व की सेनाओं में एक अमूल्य स्थान रखती है और देश का गौरव है। भारतीय सेना को न केवल अस्त्र-शस्त्र चलाने की शिक्षा दी जाती है अपितु इसमें राष्ट्रभक्ति, देश के प्रति हर व्यक्ति के कर्त्तव्य और एक सुदृढ़ जीवन जीने की शैली की शिक्षा दी जाती है। एक सैन्य स्कूल में एक सैन्य वातावरण के साथ विभिन्न क्षेत्रों की प्राथमिक विद्यालय से उच्च शिक्षा का प्रावधान है। सामन्यत: यह माना जाता है कि एक सेना के जवान की जीवन शैली सबसे अच्छी होती है। उसकी दिनचर्या सबसे सुंदर मानी जाती है। वह सुबह से लेकर शाम तक एक व्यवस्थित ढंग से रहता है। इसकी शिक्षा उसे सेना में मिलती है। भारत के सभी शिक्षा संस्थानों में प्रथमिक से लेकर उच्च स्तर पर सैन्य शिक्षा को अनिवार्य रूप से लागू कर देना चाहिए। इस सैन्य शिक्ष से देश के युवाओं में राष्ट्रभक्ति, सुरक्षा, पठन-पाठन के साथ-साथ एक व्यवस्थित जीवन जीने की शैली का निर्माण होगा जिससे सभी युवा व्यवस्थित जीवन जी पायेंगे और एक सुदृढ़ समाज का निर्माण होगा।

भारतीय सैन्य अकादमी भारत की सबसे पुरानी सैन्य अकादमी है, और भारतीय सेना के लिए अधिकारियों को प्रशिक्षित करती है। देहरादून, उत्तराखंड में स्थित इस अकादमी को 1932 में जनरल (बाद में फील्ड मार्शल) सर फिलिप चेटवोड की अध्यक्षता में गठित एक सैन्य समिति की सिफारिश के बाद स्थापित किया गया था। ब्रिगेडियर एल. पी. कॉलिन्स, DSO, OBE अकादमी के पहले कमान्डेन्ट थे। 1932 में 40 पुरुष कैडेटों के एक वर्ग से शुरू हुयी और अब इसकी 1,650 कैडेटों की स्वीकृत क्षमता है। कैडेट का प्रवेश मानदंड के आधार पर होता है और वह 3 से 16 महीने के बीच के प्रशिक्षण पाठ्यक्रम से गुजरते हैं। भारतीय सैन्य अकादमी का प्रतीक चिह्न और आदर्श वाक्य सेना की सूझ-बूझ और वीरता को दर्शाता है। भारतीय सैन्य अकादमी का आदर्श वाक्य है 'वीरता और विवेक'। इसका श्रेय चीटवॉड हॉल के पूर्वी प्रवेश द्वार पर ओक पैनलिंग में अंकित है। इसके क्रेडो को 1932 में अकादमी के उद्घाटन में फिल्डमार्शल चेतवोड के भाषण से लिया गया था। यह निम्नवत है -

''हमेशा और हर बार आपके देश की सुरक्षा, सम्मान और कल्याण की भावना पहले आती है। जिन लोगों को आप आदेश देते हैं, उनके सम्मान, कल्याण और आराम पर पहले ध्यान दें। हमेशा, हर समय, आप अपने आराम को पीछे रखें।''

- फील्ड मार्शल फिलिप चेटवोड

भारतीय सेना के भावी सैन्य नेताओं को प्रशिक्षित करने के लिए अकादमी का मिशन, आईएमए सम्मान संहिता, योद्धा कोड और आदर्श वाक्य में निहित चरित्र निर्माण के साथ-साथ चलता है। कैडेट

विभिन्न प्रकार के खेल, साहसिक गतिविधियों, शारीरिक प्रशिक्षण, अभ्यास, हथियार प्रशिक्षण और नेतृत्व विकास गतिविधियों में भाग लेते हैं। अकादमी के पूर्व छात्रों में भारत के सर्वोच्च सैन्य अलंकरण परमवीर चक्र के छह प्राप्तकर्ता शामिल हैं। पूर्व छात्रों की अन्य उपलब्धियों में 73 मिलिट्री क्रॉस, 17 अशोक चक्र, 84 महावीर चक्र और 41 कीर्ति चक्र शामिल हैं। 2017 में, लेफ्टिनेंट उमर फ़याज़ पारे भारतीय सैन्य अकादमी युद्ध स्मारक पर उत्कीर्ण होने वाला 847 वाँ नाम था, जो अकादमी के पूर्व छात्रों को सम्मानित करता है जो कार्रवाई के दौरान शहीद हो गए हैं। 1 अक्टूबर 2019 तक, 87वें स्थापना दिवस, 61,000 से अधिक सज्जन कैडेटों ने स्नातक की उपाधि प्राप्त की थी और अफगानिस्तान, सिंगापुर, जाम्बिया और मलेशिया सहित 30 से अधिक अन्य राज्यों के 3,000 से अधिक विदेशी कैडेटों ने पूर्व-कमीशन प्रशिक्षण के लिए आईएमए में भाग लिया था। पूर्व छात्र सेना स्टाफ ने भी अच्छा प्रदर्शन किया है, जो आगे चलकर अपनी-अपनी सेनाओं, प्रधानमंत्रियों, राष्ट्रपतियों और राजनेताओं के प्रमुख बने हैं।

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान, भारतीय नेताओं ने संप्रभु भारत के प्रति वफादार एक सशस्त्र बल की जरूरतों को पूरा करने के लिए एक स्थानीय सैन्य संस्थान की आवश्यकता को पहचाना। सेना के अधिकारी संवर्ग का भारतीयकरण 1901 में शुरू हुआ, लेकिन यह केवल कुलीन वर्ग के लिए था, और प्रशिक्षण के बाद उन्हें नियमित सेना में जाने की अनुमति नहीं थी। ब्रिटिश राज भारतीय अधिकारियों को नियुक्त करने या स्थानीय अधिकारी प्रशिक्षण की अनुमति देने के लिए अनिच्छुक था। 1905 तक भारतीय सैनिक अधिकारी तो बन सकते थे पर वे रैंक के आधार पर कमीशन किए गए ब्रिटिश अधिकारियों के बराबर नहीं थे। प्रथम विश्व युद्ध के फैलने तक, भारत का एक देशी सैनिक उच्चतम सूबेदार रैंक तक पहुँच सकता था और सूबेदार पद निम्नतम अधिकारी पद के सबाल्टर्न से नीचे था। लेकिन प्रथम विश्व युद्ध में भारतीय सैन्य प्रदर्शन के बाद, मोंटेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधारों ने रॉयल मिलिट्री कॉलेज, सैंडहर्स्ट में 10 भारतीय कमीशन अधिकारियों के अधिकारी प्रशिक्षण की सुविधा प्रदान की। 1922 में, युवा भारतीयों को सैंडहर्स्ट में प्रवेश के लिए तैयार करने के लिए प्रिंस ऑफ वेल्स रॉयल इंडियन मिलिट्री कॉलेज (अब राष्ट्रीय भारतीय सैन्य कॉलेज या सिर्फ आरआईएमसी के रूप में जाना जाता है) की स्थापना देहरादून में की गई थी। सेना का भारतीयकरण 31 भारतीय अधिकारियों के कमीशन के साथ शुरू हुआ। कमीशन किए जाने वाले अधिकारियों के इस पहले बैच में सैम होर्मूसजी फ्रेमजी जमशेदजी मानेकशॉ थे जो 1969 में भारतीय सेना के चीफ ऑफ आर्मी स्टाफ और बाद में पहले भारतीय फील्ड मार्शल बने।

भारतीय अधिकारियों की माँगों के बावजूद, अंग्रेजों ने भारतीय अधिकारी संवर्ग के विस्तार का विरोध किया। भारतीय नेताओं ने 1930 में पहले गोलमेज सम्मेलन में इस मुद्दे को लेकर दबाया बनाया। इस दबाव के कारण ही एक भारतीय अधिकारी प्रशिक्षण कॉलेज की स्थापना की रियायत इस सम्मेलन में दी गई। जो उस सम्मलेन में दी गयी कुछ रियायतों में से एक थी। 1931 में जनरल सर फिलिप चेटवोड की अध्यक्षता में गठित इंडियन मिलिट्री कॉलेज कमेटी ने ढाई साल के प्रशिक्षण के बाद साल में दो बार चालीस कमीशन अधिकारियों को तैयार करने के लिए देहरादून में एक भारतीय सैन्य अकादमी की स्थापना की सिफारिश की।

भारतीय सेना के भावी सैन्य नेताओं को प्रशिक्षित करने के लिए अकादमी का मिशन, आईएमए सम्मान संहिता, योद्धा कोड और आदर्श वाक्य में निहित चरित्र निर्माण के साथ-साथ चलता है। कैडेट विभिन्न प्रकार के खेल, साहसिक गतिविधियों, शारीरिक प्रशिक्षण, अभ्यास, हथियार प्रशिक्षण और नेतृत्व विकास गतिविधियों में भाग लेते हैं। अकादमी के पूर्व छात्रों में भारत के सर्वोच्च सैन्य अलंकरण परमवीर चक्र के छह प्राप्तकर्ता शामिल हैं।

संबंधित बुनियादी ढाँचे के साथ, भारतीय सैन्य अकादमी को हस्तांतरित कर दिया। ब्रिगेडियर एलपी कोलिन्स को पहला कमांडेंट नियुक्त किया गया था और 40 सज्जन कैडेटों (जीसी) के पहले बैच को आईएमए प्रशिक्षुओं के रूप में जाना जाता है, जिन्होंने 1 अक्टूबर 1932 को अपना प्रशिक्षण शुरू किया। संस्थान का उद्घाटन 10 दिसंबर 1932 को जनरल सर फिलिप चेटवोड, 7वें बीटी द्वारा किया गया था। अगले वर्ष फरवरी 1933 में चेतवोड को फील्ड मार्शल के रूप में पदोन्नत किया गया। 1934 में, पहले बैच के समाप्त होने से पहले, वायसराय लॉर्ड विलिंगडन ने किंग जॉर्ज पंचम की ओर से अकादमी को पहला रंग प्रस्तुत किया। दिसंबर 1934 में स्नातक करने वाले कैडेटों के पहले बैच, जिन्हें अब पायनियर्स के रूप में जाना जाता है, जो भारत, पाकिस्तान और बर्मा के सेना प्रमुख बने। क्रमशः जनरल डन ने आईएमए में अपनी कक्षा में शीर्ष पर स्नातक किया और पहले पाठ्यक्रम के लिए पासिंग आउट परेड की कमान भी संभाली। दूसरे, तीसरे, चौथे और पाँचवें बैच को क्रमशः अमर, अजेय, दिग्गज और बहादुर कहा जाता था। कैडेट भारत के सभी हिस्सों से

अकादमी में आए क्योंकि यह 1947 में भारत की आजादी और विभाजन से पहले था। वहाँ पंजाबी, हिंदू, मुसलमान, सिख, बंगाली, मराठा, मद्रासी, कूर्गी लेकिन हमने काम किया और एक के रूप में रहते थे, अर्थात् पहले भारतीय। मैंने इस पर जोर दिया है क्योंकि आज भी जहाँ तक ''सशस्त्र बलों का संबंध है, अवधारणा नहीं बदली है और व्यवहार में लागू होती है''। (मेजर जनरल एएस नरवणे (सेवानिवृत्त) 29 जनवरी 1936 को आईएमए में शामिल हुए।

अकादमी से बाहर हुए पहले 16 नियमित पाठ्यक्रमों के माध्यम से, मई 1941 तक, 524 अधिकारियों को कमीशन दिया गया था। लेकिन द्वितीय विश्व युद्ध के प्रकोप के परिणामस्वरूप प्रवेशकों की संख्या में अभूतपूर्व वृद्धि हुई, प्रशिक्षण अवधि में अस्थायी रूप से छह महीने की कमी और परिसर का विस्तार हुआ। अगस्त 1941 और जनवरी 1946 के बीच कुल 3,887 अधिकारियों को नियुक्त किया गया, जिसमें ब्रिटिश सेना के लिए 710 ब्रिटिश अधिकारी शामिल थे। युद्ध के अंत में अकादमी प्रशिक्षण के अपने मूल ढाई साल के पाठ्यक्रम में वापस आ गई। [20] स्वतंत्रता से पहले के अंतिम वर्षों के दौरान, अकादमी ने औपनिवेशिक और उत्तर-औपनिवेशिक दोनों सेनाओं के लिए प्रशिक्षण अधिकारियों की भूमिका निभाई।

अगस्त 1947 में भारत की स्वतंत्रता और उसके बाद पाकिस्तान में विभाजन के बाद, अकादमी में प्रशिक्षकों के रूप में कई ब्रिटिश अधिकारी ब्रिटेन के लिए रवाना हुए, जबकि पाकिस्तानी कैडेट पाकिस्तान के लिए रवाना हुए। कुल 110 पाकिस्तानी कैडेटों ने तब पाकिस्तान सैन्य अकादमी, काकुल में अपना प्रशिक्षण जारी रखा। ब्रिगेडियर ठाकुर महादेव सिंह, डीएसओ, को अकादमी का पहला भारतीय कमांडेंट नियुक्त किया गया। 189 जीसी जिन्होंने 20 दिसंबर 1947 को स्नातक की उपाधि प्राप्त की, वे स्वतंत्र भारत में कमीशन प्राप्त करने वाले आईएमए से प्रथम श्रेणी के थे।

1947 के अंत में, भारतीय सशस्त्र बलों के चीफ ऑफ स्टाफ ने, फील्ड मार्शल सर क्लाउड औचिनलेक की अध्यक्षता में 1946 की समिति की सिफारिश के बाद, एक नई संयुक्त सेवा प्रशिक्षण अकादमी शुरू करने के लिए एक कार्य योजना शुरू करने का निर्णय लिया। अंतरिम में, उन्होंने आईएमए में संयुक्त सेवा प्रशिक्षण आयोजित करने का निर्णय लिया। अकादमी का नाम बदलकर सशस्त्र बल अकादमी कर दिया गया और 1 जनवरी 1949 को एक नया संयुक्त सेवा विंग (जेएसडब्ल्यू) चालू किया गया, जबकि सैन्य अधिकारियों का प्रशिक्षण सैन्य विंग में जारी रहा। अकादमी का नाम बदलकर राष्ट्रीय रक्षा अकादमी कर दिया गया (एनडीए) 1 जनवरी 1950 को, भारत के गणतंत्र बनने से पहले। दिसंबर 1954 में, जब पुणे के पास खडकवासला में नई संयुक्त सेवा प्रशिक्षण अकादमी की स्थापना की गई, तो संयुक्त सेवा विंग के साथ एनडीए का नाम खड़कवासला में स्थानांतरित कर दिया गया। देहरादून में अकादमी का नाम फिर से मिलिट्री कॉलेज कर दिया गया। ब्रिगेडियर एमएम खन्ना, एमवीसी 1956 के अंत में आईएमए के कमांडेंट नियुक्त होने वाले पहले आईएमए पूर्व छात्र थे। 1960 में, संस्थापक नाम, भारतीय सैन्य अकादमी, बहाल किया गया था। अकादमी के उद्घाटन की 30वीं वर्षगांठ पर 10 दिसंबर 1962 को भारत के दूसरे राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने अकादमी को नए रंग प्रदान किए।

1962 के भारत-चीन युद्ध के बाद, विशेष उपाय पेश किए गए। 1963 से अगस्त 1964 तक, नियमित कक्षाओं की अवधि को छोटा कर दिया गया, आपातकालीन पाठ्यक्रम शुरू किए गए, और कैडेटों के लिए नए रहने के क्वार्टर जोड़े गए। हालांकि, पिछले युद्धों के विपरीत, 1965 और 1971 के भारत-पाकिस्तान युद्ध ने अकादमी प्रशिक्षण या स्नातक कार्यक्रम को बाधित नहीं किया। 11 फरवरी 1971 को, विलियम जी वेस्टमोरलैंड, चीफ ऑफ स्टाफ, यूनाइटेड स्टेट्स आर्मी ने अकादमी का दौरा किया।

1976 में, अकादमी की चार बटालियनों का नाम बदलकर फील्ड मार्शल कोडंडेरा मडप्पा करियप्पा, जनरल कोडंडेरा सुबैय्या थिमय्या, फील्ड मार्शल सैम मानेकशॉ और लेफ्टिनेंट जनरल

प्रेमिंद्र सिंह भगत के नाम पर रखा गया, जिनमें से प्रत्येक में दो कंपनियाँ थीं। 15 दिसंबर 1976 को तत्कालीन राष्ट्रपति फखरुद्दीन अली अहमद ने अकादमी को नए रंग प्रदान किए। 1970 के दशक में, आर्मी कैडेट कॉलेज (एसीसी) को आईएमए का एक विंग बनकर पुणे से देहरादून स्थानांतरित कर दिया गया था। 2006 में, ACC को पांचवीं बटालियन, सियाचिन बटालियन के रूप में IMA में मिला दिया गया था।

1 अक्टूबर 2019 तक, 87वें स्थापना दिवस पर, भारतीय सैन्य अकादमी से स्नातक करने वाले GC की संख्या 61,762 थी, जिसमें 33 मित्र देशों के विदेशी पूर्व छात्र शामिल थे। दूसरे देशों में अंगोला, अफगानिस्तान, भूटान, म्यांमार, घाना, इराक, जमैका, कजाकिस्तान, किर्गिस्तान, मलेशिया, नेपाल, नाइजीरिया, फिलिस्तीन, फिलीपींस, सिंगापुर, श्रीलंका, ताजिकिस्तान, तंजानिया शामिल हैं। टोंगा, युगांडा, यमन और जाम्बिया।

अकादमी दून घाटी (द्रोणाचार्य आश्रम), उत्तराखंड में है। राष्ट्रीय राजमार्ग 72, देहरादून-चकराता रोड, उत्तर और दक्षिण परिसर को अलग करता है। अकादमी का परिसर 1,400 एकड़ (5.7 किमी 2) के क्षेत्र में फैला हुआ है। 1930 में निर्मित ड्रिल स्क्वायर पर चेतवोड हॉल, आईएमए का प्रशासनिक मुख्यालय है और यह अकादमिक प्रशिक्षण का केंद्र भी है। इसमें लेक्चर हॉल, कंप्यूटर लैब और एक कैफे है। ड्रिल स्क्वायर के विपरीत दिशा में खेतरपाल सभागार है। 1982 में खोला गया, इसकी बैठने की क्षमता 1,500 से अधिक है। 1938 में जोड़े गए चेतवोड भवन के नये विंग में केंद्रीय पुस्तकालय है। मल्टीमीडिया अनुभागों के अलावा, इसके 100,000 से अधिक खंड हैं और दुनिया भर से सैकड़ों पत्रिकाओं की सदस्यता है। इसके अलावा, पूरे परिसर में कैडेट बैरक के करीब दो शाखा पुस्तकालय हैं। परिसर में आईएमए संग्रहालय ऐतिहासिक महत्त्व की कलाकृतियों को प्रदर्शित करता है जैसे कि पाकिस्तानी सेना के लेफ्टिनेंट जनरल आमिर अब्दुल्ला खान नियाज़ी की पिस्तौल, बांग्लादेश मुक्ति युद्ध को समाप्त करने के लिए आत्मसमर्पण के साधन पर हस्ताक्षर करने के बाद लेफ्टिनेंट जनरल जगजीत सिंह अरोड़ा को आत्मसमर्पण करने पर दी गई। 1971 का एक कब्जा किया हुआ पाकिस्तानी सेना का पैटन टैंक भी मैदान में है। भारतीय सैन्य अकादमी ने न केवल भारतीय सेना को अपितु हमारे पड़ोसी देशों के महत्त्वपूर्ण पदों पर आसीन होने का गौरव पाने वाले लोगों का सृजन किया है। यह हमारे लिए गौरव की बात है कि हमने अपने देश के साथ-साथ दुनिया के कई देशों और हमारे पड़ोसी मुल्कों को सेना के बड़े अधिकारी दिए हैं।

भारतीय सैन्य अकादमी में प्रवेश के विभिन्न तरीके हैं, जिनमें शामिल हैं : राष्ट्रीय रक्षा अकादमी से स्नातक पर, आर्मी कैडेट कॉलेज से स्नातक पर (स्वयं भारतीय सैन्य अकादमी का एक विंग), संयुक्त रक्षा सेवा परीक्षा के माध्यम से सीधे प्रवेश, उसके बाद SSB परीक्षा और तकनीकी प्रवेश के तहत विश्वविद्यालय और कॉलेज की योजनाएँ। जबकि आईएमए में प्रवेश पाने वाले कैडेट स्थायी रूप से कमीशन अधिकारी बन जाते हैं। जो अधिकारी प्रशिक्षण अकादमी, चेन्नई जैसी अन्य अधिकारी प्रशिक्षण अकादमियों में जाते हैं, उन्हें शॉर्ट सर्विस कमीशन के लिए प्रशिक्षित किया जाता है। प्रवेश मानदंड के आधार पर विवाहित या अविवाहित पुरुष उम्मीदवारों को पाठ्यक्रम के लिए स्वेच्छा से आवेदन करने की अनुमति है। आईएमए के माध्यम से महिला कैडेटों को भारतीय सेना में शामिल नहीं किया जाता है, हालांकि इसके बारे में बात की जाती रही है। आईएमए की स्वीकृत क्षमता 1,650 है।

भारतीय सैन्य अकादमी में प्रवेश पर एक प्रशिक्षु को जेंटलमैन कैडेट (GC) कहा जाता है। इसका एक कारण यह है कि अकादमी अपने स्नातकों से अपेक्षा करती है कि वे उच्चतम नैतिकता और नैतिक मूल्यों को बनाए रखें। चेतवोड हॉल के पूर्वी प्रवेश द्वार पर ओक पैनलिंग में अंकित वाक्य अकादमी के औदात्य को प्रमाणित करता है, जो 1932 में अकादमी के उद्घाटन के अवसर पर फील्ड मार्शल चेतवोड के भाषण से लिया गया था -

अपने देश की सुरक्षा, सम्मान और कल्याण सबसे पहले, हमेशा और हर समय आता है। आपके द्वारा आदेशित पुरुषों का सम्मान, कल्याण और आराम अगला आता है। आपकी अपनी सहजता, आराम और सुरक्षा हमेशा और हर समय अंतिम होती है। – फील्ड मार्शल फिलिप चेटवोड

नए जीसी भारत के सभी हिस्सों से विविध पृष्ठभूमि से आते हैं। उनका प्रशिक्षण क्रिया से भरा, तीव्र, विविध और तेज है। आत्म-अनुशासन पर महत्त्वपूर्ण बल दिया गया है। भारतीय सेना की आधिकारिक वेबसाइट प्रशिक्षण को ''किसी की क्षमता और क्षमताओं का परीक्षण और मनोवैज्ञानिक शब्दों में एक पूर्वाभास के रूप में वर्णित करती है कि प्रशिक्षुओं को युद्ध के मैदान में क्या सामना करना पड़ेगा। पास आउट होने पर जीसी को स्थायी रूप से सेना में लेफ्टिनेंट के रूप में नियुक्त किया जाता है।''

भारतीय सेना एक संयुक्त मोचा है जिसे दुनिया के सामने ''यह सुनिश्चित करने के लिए प्रस्तुत किया जाता है कि भारत के दुश्मन यह पहचान लें कि वे किसके विरुद्ध लड़ने जा रहे हैं।'' हमारी सेना हमारे देश की वह इकाई है जो देशहित में हँसते-हँसते बलिदान देने के लिए तैयार रहती है। ❑

भारतीय सैन्य अकादमियाँ

लेफ्टि. (डॉ.) श्वेता नेहरा
सहायक आचार्य,
राजकीय डूँगर महाविद्यालय,
बीकानेर (राजस्थान)

''अपने देश के प्रति सदैव वफादार रहने वाले, अपने प्राणों की आहुति देने के लिए सदैव तैयार रहने वाले सैनिक अजेय हैं।'' *– नेताजी सुभाष चन्द्र बोस*

सदैव ही अपने युद्ध कौशल, वीरता, शौर्य, अदम्य साहस तथा मातृभूमि के लिए सर्वोच्च बलिदान देने में अग्रणी भारतीय सेना नेताजी के उपर्युक्त कथन की प्रासंगिकता को सिद्ध करती हुई प्रतीत होती हैं। संप्रभु भारत के प्रति राष्ट्रीयता की भावना तथा सशस्त्र बल की जरूरतों को पूरा करने के लिए एक स्थानीय सैन्य संस्थान की आवश्यकता भारत मे स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व ही अनुभव की जाने लगी थी। भारतीय रक्षा सेवाओं हेतु सैन्य विज्ञान, युद्ध कमान, रणनीति और संबंधित प्रौद्योगिकियों में पेशेवर सैनिकों को प्रशिक्षित करने के उद्देश्य से पूरे भारत में कई अकादमियों और स्टाफ कॉलेजों की समय समय पर स्थापना की गई।

सैन्य अकादमी, एक ऐसा शैक्षणिक संस्थान होता है जो देश- सेवा, बलिदान, देशभक्ति और मिश्रित संस्कृति के आदर्शों का प्रतीक हो। जिसका मुख्य लक्ष्य, सैन्य-कर्मियों में उनकी भूमिकाओं से संबन्धित श्रेष्ठ क्षमताओं को स्थापित करना एवं निरंतर उनमें सुधार करना है। यह आम तौर पर एक सैन्य वातावरण में शिक्षा प्रदान करने का कार्य करता है। युवाओं को सैन्य सेवाओं के लिए प्रशिक्षित करने के लिए भारत में अनेक सैन्य अकादमियाँ हैं।

भारतीय सैन्य अकादमी (IMA)

देहरादून में भारतीय सैन्य अकादमी की स्थापना 10 दिसम्बर, 1932 को जनरल सर फिलिप चेटवूड द्वारा की गई। भारतीय सैन्य अकादमी (आईएमए) का मिशन भारतीय सेना के भावी सैन्य अधिकारियों को प्रशिक्षित करना है। शारीरिक प्रशिक्षण, अभ्यास, हथियार प्रशिक्षण एवं नेतृत्व विकास प्रशिक्षण प्रदान करना अकादमी का प्रमुख उदेश्य है।

आईएमए, देहरादून को भारतीय सेना हेतु उत्कृष्ट सैन्य-अधिकारी प्रदान करने का श्रेय दिया जाता है जो अत्यधिक अनुशासित, प्रेरित एवं गौरव के साथ राष्ट्र की सेवा करने के लिए प्रतिबद्ध रहे हैं। अकादमी का गौरव, उसके द्वारा तैयार सैन्य अधिकारियों द्वारा युद्धकाल में प्रदर्शित बहादुरी, वीरता और बलिदान की भरपूर गाथाओं से स्पष्ट परिलक्षित होता है।

आईएमए में प्रवेश के विभिन्न तरीके हैं, जिनमें प्रमुख हैं - राष्ट्रीय रक्षा अकादमी से स्नातक उपाधि प्राप्त कर, आर्मी कैडेट कॉलेज से स्नातक उपाधि प्राप्त कर (स्वयं आईएमए का एक विंग), संयुक्त रक्षा सेवा परीक्षा के माध्यम से सीधे प्रवेश, एसएसबी परीक्षा, तकनीकी प्रवेश के तहत विश्वविद्यालय और कॉलेज की योजनाओं के माध्यम से प्रवेशित कैडेट एक वर्ष के लिए आईएमए में प्रशिक्षण लेते हैं। डायरेक्ट एंट्री कैडेट डेढ़ साल के लिए ट्रेनिंग करते हैं जबकि टेरिटोरियल आर्मी ऑफिसर्स कोर्स तीन महीने का होता है। इस प्रकार प्रतिवर्ष 1650 केडेट्स तथा अधिकारी यहाँ से प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं।

वायु सेना अकादमी (एएफए)

डूंडीगल, तेलंगाना स्थित वायु सेना अकादमी, भारतीय वायु सेना के पायलटों, ग्राउंड एवं तकनीकी अधिकारियों को प्रशिक्षण देने का प्रमुख रक्षा सेवा प्रशिक्षण संस्थान है। यह अकादमी, वायु सेना की सभी शाखाओं के अधिकारियों को बेहतर समन्वय हेतु एकीकृत प्रशिक्षण की लंबे समय से महसूस की गई आवश्यकता की परिणति है। अकादमी की स्थापना 1967 में हुई तथा 1970 से इसका संचालन शुरू हुआ। इस अकादमी में एक वर्ष के समग्र प्रशिक्षण के बाद प्रशिक्षुओं को भारतीय वायु सेना की विभिन्न शाखाओं में कमीशन दिया जाता है। वायु सेना के साथ-साथ यह अकादमी, भारतीय नौसेना एवं भारतीय तटरक्षक बल से संबंधित अधिकारियों को भी प्रशिक्षण प्रदान करती है।

भारतीय नौसेना अकादमी (INA)

मई 1969 में राष्ट्रीय रक्षा अकादमी (एनडीए) पर बढ़ते बोझ को कम करने तथा नेवल कडेट्स को पृथक से विशिष्ट प्रशिक्षण प्रदान करने के उद्देश्य से शुरू हुई भारतीय नौसेना अकादमी वर्तमान में विकसित होते हुए एशिया की सबसे बड़ी एवं विश्व की तीसरी सबसे बड़ी नौसेना अकादमी बन गई है। वर्तमान में एझिमाला, केरल स्थित ये अकादमी नौसेना मे भर्ती होने वाले नौसेना अधिकारी संवर्ग के लिए अनेक पाठ्यक्रम संचालित करती है जिसमें 10+2 पास कडेट्स के लिए चार वर्षीय बी.टेक. एवं स्नात्तक कडेट्स के लिए 22 महीने का डिप्लोमा शामिल है। नौसेना के साथ-साथ भारतीय तट रक्षक बल के अधिकारियों को भी यहाँ प्रशिक्षण दिया जाता है।

राष्ट्रीय रक्षा अकादमी (एनडीए)

राष्ट्रीय रक्षा अकादमी की स्थापना 7 दिसम्बर, 1954 को खडकवासला, पुणे, महाराष्ट्र में हुई। राष्ट्रीय रक्षा अकादमी को दुनिया का पहला संयुक्त प्रशिक्षण संस्थान होने का अनूठा गौरव प्राप्त है जो युद्ध के मैदान में सफलता के लिए आवश्यक संयुक्त कौशल की भावना को परिपोषित करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। तीनों सेवाओं अर्थात् भारतीय सेना, भारतीय नौसेना और भारतीय वायु सेना के कैडेट (प्रशिक्षु) संबंधित सेवा अकादमी में पूर्व-कमीशन प्रशिक्षण हेतु जाने से पहले एक साथ यहाँ प्रशिक्षित किए जाते हैं। राष्ट्रीय रक्षा अकादमी (एनडीए) के सेवा प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य आधुनिक समय के युद्ध की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए सैन्य प्रशिक्षण के उच्चतम मानकों को प्रदान करना है। इसके अलावा कडेट्स में नेतृत्व के गुणों को विकसित करना, आत्म-सुधार की भावना विकसित करना और हर क्षेत्र में उत्कृष्टता के लिए एक नियोजित प्रशिक्षण प्रदान करना है। आत्म-अनुशासन, सम्मान, अखंडता, सौहार्द और सभी संस्कृतियों के प्रति सम्मान की भावना पैदा करके कैडेट के समग्र व्यक्तित्व विकास पर जोर दिया जाता है। भारतीय सशस्त्र बलों का संयुक्त रक्षा सेवा प्रशिक्षण संस्थान मे कडेट्स को हथियार संचालन, फील्ड इंजीनियरिंग, रणनीति और नक्शा पढ़ने के बुनियादी सैन्य कौशल प्रदान किया जाता है। प्रतिवर्ष यहाँ से लगभग 400 केडेट्स स्नातक पाठ्यकर्म पूर्ण करते हैं।

अधिकारी प्रशिक्षण अकादमी (ओटीए), चेन्नई

1963 में मद्रास (वर्तमान चेन्नई) के ऑफिसर्स ट्रेनिंग स्कूल (ओटीएस) को इसके स्थापना के 25 वर्ष पूरे होने पर 1 जनवरी 1988 को अधिकारी प्रशिक्षण अकादमी (OTA) के रूप मे नवीन नाम प्रदान किया गया था। इसका मुख्य कार्य, 1965 से पहले जेंटलमैन कडेट्स को आपातकालीन कमीशन प्रदान करने हेतु प्रशिक्षित करना था। परंतु 1965 के बाद से अकादमी कडेट्स को शॉर्ट सर्विस के लिए प्रशिक्षण देती है। ओटीए, 49 सप्ताह के कोर्स के माध्यम से सेना की सभी शाखाओं के लिए स्नातक तैयार करता है।

आर्मी वार कॉलेज, महू

14 अप्रैल, 1971 को स्थापित इस संस्थान को पहले कॉलेज ऑफ कॉम्बैट, महू के नाम से जाना जाता था। 2003 से इसे आर्मी वॉर कॉलेज, महू के रूप मे जाना जाता है। यह अधिकारियों के लिए प्रमुख ऑल आर्म्स टैक्टिकल ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट है। यह संस्थान रणनीतिक अवधारणाओं और सिद्धांतों के मूल्यांकन के साथ साथ वैचारिक अध्ययन, चर्चाओं और संगोष्ठियों के माध्यम से नई व्यावहारिक और लोजीस्टिक अवधारणाओं को विकसित करने का प्रमुख शोध संस्थान है। कॉलेज हर साल भारतीय सेना के लगभग 1,200 अधिकारियों के साथ-साथ अर्धसैनिक बलों को प्रशिक्षित करता है।

हाई एल्टीट्यूड वारफेयर स्कूल (HAWS), गुलमर्ग

हाई एल्टीट्यूड वारफेयर स्कूल (HAWS), भारतीय सेना का एक रक्षा सेवा प्रशिक्षण और अनुसंधान प्रतिष्ठान है। 1948 में भारतीय सेना ने गुलमर्ग में एक स्की स्कूल की स्थापना की जो बाद में हाई एल्टीट्यूड वारफेयर स्कूल बन गया। यह प्रशिक्षण संस्थान पर्वतीय, दुर्गम एवं हिमयुक्त उच्च क्षेत्रों में युद्ध कौशल के प्रशिक्षण और अनुसंधान के लिए भारतीय सेना के नोडल केंद्र के रूप में कार्य करता हैं।

नेशनल डिफेंस कॉलेज

नई दिल्ली स्थित राष्ट्रीय रक्षा कॉलेज (एनडीसी), राष्ट्रीय सुरक्षा और रणनीति के अध्ययन और अभ्यास के लिए भारत का शीर्ष शिक्षण संस्थान है। 27 अप्रैल,1960 को स्थापित इस संस्थान ने वर्षों से अपनी उत्कृष्टता एवं बेहतरीन परिणामों के लिए विश्व में ख्याति अर्जित की है। यह संस्थान चुनिन्दा सर्वश्रेष्ठ भारत के सशस्त्र बलों (तीनों सेनाओं) के अधिकारियों और नागरिक सरकारी सेवाओं (आईएएस/आईपीएस) और विदेशों से चयनित वरिष्ठ अधिकारियों के बौद्धिक विकास और रणनीतिक संवर्धन के लिए समर्पित है। प्रतिवर्ष लगभग 100 अधिकारियों का चयन इस पाठ्यकर्म के लिए विभिन्न मानकों के आधार पर किया जाता है। यह चयनित अधिकारी 47 सप्ताह का राष्ट्रीय सुरक्षा और सामरिक अध्ययन पाठ्यक्रम का अध्ययन करते हैं जो प्रत्येक वर्ष जनवरी के पहले सप्ताह में शुरू होता है और दिसंबर के पहले सप्ताह में समाप्त होता है। इस पाठ्यक्रम में भारतीय राज्यों और दूसरे देशों का दौरा करने के साथ-साथ देश के भीतर और बाहर व्यापक यात्रा भी शामिल है जहाँ प्रशिक्षु राज्य प्रमुखों और महत्त्वपूर्ण निर्णय निर्माताओं से राज्य/ देश के राजनीतिक, सामाजिक और रणनीतिक परिदृश्य को समझने के लिए मिलते हैं।

भारतीय राष्ट्रीय रक्षा विश्वविद्यालय (INDU)

व्यापक रूप से राष्ट्रीय सुरक्षा अध्ययन, रक्षा प्रबंधन, रक्षा प्रौद्योगिकी और संबद्ध क्षेत्रों में उच्च शिक्षा और अनुसंधान को विकसित करने और बढ़ावा देने के लिए भारतीय रक्षा विश्वविद्यालय की एक शिक्षण और संबद्धता विश्वविद्यालय के रूप में कल्पना की गई है।

IND का लक्ष्य राष्ट्रीय सुरक्षा के मुद्दों से संबंधित दक्षताओं का निर्माण करना, अनुसंधान-उन्मुख राष्ट्रीय रक्षा नीति को बढ़ावा देना, सैन्य कर्तव्यों और नीति निर्माण जैसी जिम्मेदारियों के लिए अधिकारियों में उच्च स्तरीय नेतृत्व विकसित करना एवं रक्षा प्रबंधन, रक्षा विज्ञान और प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में उच्च शिक्षा का विकास और प्रचार करना है।

सैन्य प्रौद्योगिकी संस्थान (MILIT)

सैन्य प्रौद्योगिकी संस्थान (MILIT), पुणे भारत गणराज्य के रक्षा मंत्रालय का एक त्रि-सेवा प्रशिक्षण संस्थान है। यह भारतीय सशस्त्र बलों की तीनों सेवाओं के चयनित अधिकारियों और मित्र देशों के अधिकारियों को कमांड और स्टाफ नियुक्तियों के लिए प्रशिक्षित करता है। यह भारतीय सेना, भारतीय वायु सेना और भारतीय नौसेना अधिकारियों के लिए रक्षा सेवा तकनीकी स्टाफ कोर्स (DSTSC) आयोजित करता है।

सैन्य अकादमी, एक ऐसा शैक्षणिक संस्थान होता है जो देश- सेवा, बलिदान, देशभक्ति और मिश्रित संस्कृति के आदर्शों का प्रतीक हो। जिसका मुख्य लक्ष्य, सैन्य-कर्मियों में उनकी भूमिकाओं से संबन्धित श्रेष्ठ क्षमताओं को स्थापित करना एवं निरंतर उनमें सुधार करना है। यह आम तौर पर एक सैन्य वातावरण में शिक्षा प्रदान करने का कार्य करता है। युवाओं को सैन्य सेवाओं के लिए प्रशिक्षित करने के लिए भारत में अनेक सैन्य अकादमीयाँ हैं।

काउंटर इंसर्जेंसी एंड जंगल वारफेयर स्कूल (सीआईजेडब्ल्यू), वीरांगते

CIJWS भारतीय सेना, भारतीय नौसेना, भारतीय वायु सेना, केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बल, केंद्रीय पुलिस संगठनों और मित्र देशों के अधिकारियों, JCO/ NCO को प्रशिक्षित करने के लिए कम तीव्रता वाले संघर्ष अभियान (LICO), काउंटर इंसर्जेंसी/ काउंटर टेररिज्म (CI/ CT) वातावरण में सफलतापूर्वक संचालन के लिए प्रशिक्षण आयोजित करता है। यह पूर्वोत्तर में उग्रवाद संभावित क्षेत्रों में शामिल होने से पहले इकाइयों के लिए पूर्व-प्रेरण प्रशिक्षण तथा गुरिल्ला युद्ध प्रशिक्षण भी प्रदान करता है।

इसके अतिरिक्त आर्मी एयर डिफेंस कॉलेज-गोपालपुर, आर्टिलरी स्कूल-देवलालि, सेना शिक्षा कोर (एईसी) प्रशिक्षण कॉलेज और केंद्र-पचमढ़ी, सेना शारीरिक प्रशिक्षण संस्थान (एआईपीटी) -पुणे, मिलिट्री कॉलेज ऑफ इलेक्ट्रॉनिक्स एंड मैकेनिकल इंजीनियरिंग (एमसीईएमई)-सिकंदराबाद आदि अन्य प्रमुख संस्थान हैं।

इन महत्त्वपूर्ण संस्थानों के अतिरिक्त भारत में लगभग 144 अन्य रक्षा संबंधी संस्थान हैं जिनका प्रमुख ध्येय अखंड भारत की संप्रभुता को अक्षुण्ण बनाए रखना है। वर्तमान में भारतीय सेना की गणना विश्व की सर्वश्रेष्ठ सेनाओं में की जाती है जो कि आधुनिक युद्ध कलाओं मे पारंगत, पेशेवर आचरण तथा राष्ट्र सुरक्षा के प्रति कटिबद्ध है। सेना की इस प्रतिबद्धता एवं क्षमता के विकास में इन सैन्य अकादमियों की महती भूमिका रही है। ❑

आत्मनिर्भर भारत में सैन्य शिक्षा व एनसीसी की भूमिका

डॉ. रणजीत सिंह बुडानिया
सहायक आचार्य, भूगोल
सेठ आरएल सहरिया
राजकीय पीजी महाविद्यालय,
कालाडेरा, जयपुर (राज.)

जहाँ एक ओर आत्म निर्भर भारत की बात की जा रही है वहीं हाल ही में देश में घटित घटनाओं ने यह सवाल खड़ा कर दिया है कि क्या भारत के हर नागरिक के लिए सैनिक प्रशिक्षण भी अनिवार्य कर देना चाहिए? अगर इन घटनाओं का जिक्र किया जाए जैसे 1962, 1965 और 1971 में हुए नापाक हमलों या फिर गलवान, उरी में हुई आंतकी घटनाओं के अलावा बीजापुर में हुए नक्सली हमलों ने इस विषय पर विचार करने को मजबूर किया है।

सैन्य बैकअप की जरुरत हो या फिर देश के नागरिकों में अनुशासन की आवश्यकता, ऐसी हर स्थिति के लिए लोगों को सैन्य प्रशिक्षण के माध्यम से सक्षम बना सकते हैं। सैन्य प्रशिक्षण से लोगों के अंतर्मन में सेवा, त्याग, बलिदान और निष्ठा जैसे गुणों का निर्माण होता है और ऐसी सोच को भी बढ़ावा मिलता है। जिससे युद्ध या आतंकी हमले जैसी परिस्थिति में ये प्रशिक्षित सैनिक देश की रक्षा के लिए तत्पर रहते हैं।

सैन्य प्रशिक्षण का महत्त्व

सैन्य प्रशिक्षण से लोगों में शारीरिक दक्षता के साथ देश के प्रति निष्ठा और एकता की भावना का निर्माण होता है। जिस तरह से भारतीय सेना अनुशासित हो कर देश की रक्षा के लिए अग्रणी रहती है, उसी प्रकार सैन्य प्रशिक्षण से शिक्षित युवा सैन्य विचारधारा के साथ देश की प्रगति के लिए कार्य करेगा। सेना की तरह किसी भी क्षेत्र में आई विपदा से लड़ने में सक्षम युवाओं की फौज देश के लिए रीढ़ की हड्डी के रूप में कार्य करेगी। इस बात में कोई संदेह नहीं है कि सैनिक शिक्षा और प्रशिक्षण लोगों को अनुशासित करता है।

हमारे देश में आजादी के बाद से ही सैनिक शिक्षा पर अधिक बल दिया जाता है। एनसीसी के द्वारा विद्यार्थियों को ट्रेनिंग दी जाती है, जिसमें उन्हें यह सिखाया जाता है कि किस तरह से दुश्मन से युद्ध में लड़ कर सुरक्षा के साथ जीत हासिल की जाए। लोगों की एकता में कमी और मनभेद के चलते हमारे देश को कई सालों तक गुलामी करनी पड़ी है इसलिए आजादी के बाद लोकतांत्रिक भारत का यह दायित्व बनता है कि सैनिक शिक्षा के माध्यम से देश के विकास और रक्षा से सबंधित क्षेत्रों को और मजबूत बनाया जाए।

भारतीय सेना और एनसीसी

एनसीसी का महत्त्व भारतीय सेना में काफी ज्यादा है। युद्ध स्तर पर तैयार किए गए सैनिक भारतीय सेना का अभिन्न अंग बनने में काफी ज्यादा सहायक होते हैं।

एनसीसी का मुख्य लक्ष्य सेना को सहायता प्रदान करना है। इसमें एनसीसी एक हद तक सफल भी हुई है। एनसीसी की टैगलाइन के लिए 11 अगस्त 1978 से चर्चा शुरू की गई थी।

एनसीसी यानी कि नेशनल कैडेट कॉर्प्स। एनसीसी भारत के युवा सैन्य संगठन में से एक है। एनसीसी का गठन युवाओं में सेना के प्रति जागरूकता लाने और उन्हें सैन्य स्तर पर तैयार करने के लिए किया गया था।

एनसीसी का मुख्यालय दिल्ली में स्थित है। एनसीसी का संबंध भारत की तीनों सेनाओं जल सेना, थल सेना और वायु सेना से है। एनसीसी में शामिल युवा लड़के और लड़कियों को कड़ी ट्रेनिंग दी जाती है जिससे कि वे आने वाले समय में सेना में शामिल होकर अपवाद न बनें।

1948 में लड़कियों डिवीजन स्कूल और कॉलेज जा रही लड़कियों को समान अवसर देने के लिए उठाया गया था। 1952

में एयर विंग जोड़ा गया था, 1950 में एक अंतर-सेवा छवि दिया गया था। उसी वर्ष, एनसीसी पाठ्यक्रम एनसीसी के विकास में गहरी रुचि ले लिया, जो स्वर्गीय पंडित जवाहर लाल नेहरू के कहने पर एनसीसी पाठ्यक्रम के एक भाग के रूप में सामुदायिक विकास, सामाजिक सेवा गतिविधियों में शामिल करने के लिए बढ़ाया गया था। राष्ट्र की आवश्यकता को पूरा करने के लिए, 1962 भारत चीन युद्ध के बाद, एनसीसी प्रशिक्षण 1963 में अनिवार्य किया गया था। 1968 में, कोर फिर स्वैच्छिक बनाया गया था।

1965 के भारत पाकिस्तान युद्ध और 1971 के भारत पाकिस्तान युद्ध के दौरान एनसीसी कैडेटों सुरक्षा की दूसरी पंक्ति थे। वे सामने से हथियार और गोला बारूद की आपूर्ति, आयुध कारखानों की सहायता के लिए शिविर का आयोजन किया और भी दुश्मन पैराट्रूपर्स कब्जा करने के लिए गश्ती दल के रूप में इस्तेमाल किया गया। एन.सी.सी. कैडेटों ने भी सिविल डिफेंस के अधिकारियों के साथ हाथ में हाथ काम किया है और सक्रिय रूप से बचाव काम करता है और यातायात नियंत्रण में भाग लिया।

एनसीसी के उद्देश्य

1. एनसीसी का उद्देश्य देश के युवाओं में चरित्र, साहचर्य, अनुशासन, नेतृत्व, धर्मनिरपेक्षता, निस्वार्थ सेवा भाव आदि गुणों का संचार करना है।
2. एनसीसी का उद्देश्य संगठित प्रशिक्षित गणित युवाओं का एक मानव संसाधन तैयार करना है जो विकट परिस्थितियों में प्रत्येक क्षेत्र में नेतृत्व प्रदान कर देश की सेवा के लिए तत्पर रहें।
3. इसका उद्देश्य सशस्त्र सेना में जीविका बनाने के लिए युवाओं को प्रेरित कर उचित वातावरण प्रदान करना है।

एनसीसी शिक्षा में क्या होता है -

- भारत में एनसीसी की तैयारी स्कूल और कॉलेज के छात्रों को करायी जाती है। एनसीसी में सिखाये जाने वाले कार्यों की सूची नीचे दी गई है -
- एनसीसी में छात्रों को मिलिट्री से सम्बंधित सभी तरह की ट्रेनिंग दी जाती है।
- एनसीसी ट्रेनिंग में ये बताया जाता है अगर आप सेना में भर्ती होना चाहते हैं, तो वहां पर आपको कैसे रहना है और दुश्मन का सामना कैसे करना है।
- एनसीसी में छात्रों को बुनियादी स्तर की ट्रेनिंग दी जाती है।
- इसमें सेना, वायु सेना और नौसेना तीनों सेनाएं शामिल है।
- एनसीसी में छात्रों को ट्रेनिंग देते समय छोटे हथियारों, चलाने की ट्रेनिंग दी जाती है।
- एनसीसी अपने अनुशासन और देशभक्ति के लिए पूरे भारत में जाना जाता है, एनसीसी में आपको देश के प्रति प्रेम करना और अनुशासन में कैसे रहे ये सब बातें सिखाई जाती है।

एनसीसी का सेना भर्ती में योगदान -

- एनसीसी में छात्रों को उच्च स्तर की आर्मी ट्रेनिंग के लिए Basic Education दी जाती है, जो उन्हें यह पता लगाने में मदद करती है कि, क्या वे भविष्य में अपने कैरियर के रूप में सेना को चुनने के लिए उपयुक्त है या नहीं।
- एनसीसी में Cadets को पैराग्लाइडिंग, डिजास्टर मैनेजमेंट, फर्स्ट एड जैसी कई चीज़े सिखाई जाती है, जो कि अपातकालीन परिस्थितियों में काम आती है।
- एनसीसी में Cadets को शारीरिक प्रशिक्षण के साथ ही कई सारी शिक्षा प्रदान की जाती है जैसे, नेतृत्व की योग्यता, आत्मविश्वास, सम्मान की भावना, संचार कौशल और सबसे महत्त्वपूर्ण Armed Forces के बारे में ज्ञान।
- जीवन के हर क्षेत्र में कार्य करने के लिए अनुशासन और आत्मनिर्भरता की आवश्यकता होती है। एनसीसी में Cadets को अनुशासन और आत्मनिर्भरता का महत्त्व सिखाया जाता है।
- एनसीसी Cadets को कैंप में अलग-अलग स्थानों पर घूमने का अवसर प्राप्त होता है और साथ ही कैडेट्स को Mountain Tracking और Sky Diving का आनंद लेने का भी मौका मिलता है।
- एनसीसी में भारत के अलग-अलग राज्य के छात्र शामिल होते हैं, जिससे कि उन्हें विभिन्न त्यौहारों, परंपराओं और भाषाओं को सीखने का अवसर मिलता है।

हमारे देश में आजादी के बाद से ही सैनिक शिक्षा पर अधिक बल दिया जाता है। एनसीसी के द्वारा विद्यार्थियों को ट्रेनिंग दी जाती है, जिसमें उन्हें यह सिखाया जाता है कि किस तरह से दुश्मन से युद्ध में लड़ कर सुरक्षा के साथ जीत हासिल की जाए। लोगों की एकता में कमी और मनभेद के चलते हमारे देश को कई सालों तक गुलामी करनी पड़ी है इसलिए आजादी के बाद लोकतांत्रिक भारत का यह दायित्व बनता है कि सैनिक शिक्षा के माध्यम से देश के विकास और रक्षा से सबंधित क्षेत्रों को और मजबूत बनाया जाए।

उपसंहार

सार्वजनिक रूप से सैनिक प्रशिक्षण पर बहुत बड़ी धनराशि की आवश्यकता रहती है और इसकी व्यवस्था कर पाना आसान नहीं होगा, पर इससे होने वाले असीमित लाभों के देखते हुए यह आवश्यक है कि इस प्रशिक्षण को धीरे-धीरे ही अनिवार्य कर ही देना चाहिए। और इसके लिए विद्यालयों में एन सी सी तथा नगरों में सहायक सैनिक और अर्धसैनिक बलों का निर्माण किया गया है। इसमें और विस्तार करके अपने देश को सुरक्षित रखने में सहायता पहुँचा सकते हैं। ❑

Agniveer

Col. Suhas S Jatkar (Rted.)
Sunderkhed Buldana
(Maharashtra)

Agniveer and Agnipath Scheme has been discussed, criticized, supported and even protested very recently after its launch. Changes are difficult to be accepted and more difficult to be implemented. So, its natural that this scheme in under discussion. Defense of India is not only a strong man force along with equipment but also a great manpower employer for the country. It provides employment to a large youth and also gives pension to the retired soldiers. Hence it needs to be discussed in both these perspective.

The defense of any country is determined by three factors. The quality of war machinery it holds to fight a war i.e. the type of missiles, guns, tanks, aircrafts and the ships. Secondly, the manufacturing capacity of the country. Nextly the quantity and quality of manpower to fight the battle and hold ground wherever and whenever required. In the past we had very less sophisticated and less capable equipment than our adversaries since purchases of these equipment cost a lot and put a lot of burden on the country's finances. Also the ordinance factories which were created to manufacture defense required equipment and arms, ammunition could not deliver much, hence, we had to depend lot on the imports. DRDO (Defense Research and Development Organisation) which was established to do research on defense equipment could not keep pace with what was happening in the world around. We were mainly dependent on well trained and appreciated worldwide our manpower for defending our country.

The present arrangement did wonders and brought glory to our nation in 1965, 1971 wars and Operation Vijay of 1999. Over a period of time the pension bills have increased manifold burdening our defense budget. A committee formed to study the Kargil War had recommended that the average age of the fighting soldier was nearly 30-32 years and need to be brought down to fight effectively, especially in mountainous terrain. Hence, the government

felt need to bring in changes. After studying our system of defense of our country and defense systems of other countries, system of recruiting "Aganiveers" is envisaged. In some countries nearly all the youth go through compulsory employment in the defense for a period of couple of years. This keeps their defense force young.

The Defense Production in the country is encouraged in India under 'Make-in-India". Big business houses are involved in big way in Defense Production. The Kalyani Group has manufactured state-of-art guns and are under trials. They are also into manufacture of Missiles. L&T has produced prototype of Tanks and AFUs. They are into big-time manufacturing of Engineering equipment like Bridges and Boats. TATA are mostly involved in tanks manufacturing. Ambani & Adani groups are venturing into Air-Force and Naval equipment production. Lots of MSMEs are into defense related accessories. The defense production has seen a great leap than ever before.

Defense production is high cost equipment and less number of quantity. Also the cost of Research & Development is very high. Hence, defense equipment production is a very risky business. Government has understood this and is doing lot of hand-holding by means of assured purchases. Help in terms & taxes and support for trials and technical know-how. There is a knowledge sharing between DRDO, OFB and corporate. This has helped corporate to venture into Defense Equipment Production.

Ordinance Factory Board has been asked to shed fat. Ordinance Factories going into loss are either closed down or sold or asked to revamp and become profitable.

This is a great step but only time will tell how much we will be able to excel in Defense Equipment and spares and ammunition. We are very hopeful that we will be able to manufacture most modern equipment and this equipment will help us reduce the manpower employed in defense.

What is this "Agnipath Scheme"? Under the Agnipath Scheme all the enrolment of soldiers/sailors and air men will be done. The tenure of employment of these soldiers is going to be for four years. Based on merit and organisational requirement up to 25% Agniveers can be selected as regular cadre though a central, transparent, rigorous system after four years. The retired on released Agniveers can apply for enrollment into regular cadre. The age limit for application will be from 17½ to 21 years. The Agniveers will get a package approx of Rs. 4.76 lakhs upgraded to 6.92 lakhs per year.

Agniveer on his release will get Seva Nidhi corpus of approx. Rs. 11.7 lakhs which will have 30% of monthly emoluments to be contributed by individuals. They will also get an insurance cover of Rs. 48 Lakhs and disability compensation based on % of disability as laid down by medical authorities. They with also get a Ex-Gratia of Rs. 44 Lakhs on death attributable to military service.

There are arguments in favour of scheme and there are arguments against the scheme. Those in favour feel it is good for country. They feel this type of scheme is followed in countries like USA, Russia, Israel, China, France, U.K. and Germany. It has worked there so

it will work here also. Our nation has a very young demographic profile and this is better way to capitalise on it. We can up-skill large numbers of youth for Nation Building by this scheme. A large readily available reserve force for any contingency. There will be significant saving on post retirement pension. A large number of trained youth will be available to be employed in paramilitary forces, police, corporate jobs and this will help in Nation Building.

Some feel this scheme will be disastrous. They feel instead of axing the uniformed forces who are actually responsibly for defense, the defense civilian population eating on more than 40% pay and pension budget should be axed. Those defense civilians working in the ministry. Those in Ordinance Factory Board, those in DRDO, Defense Accounts, Military Engineering Services etc. should be axed. Such scheme with no pension should be applied to them. This will reduce the morale of the fighting soldiers. A temporary service soldier like Agniveers will not fight a battle like other soldiers. He will only pass his time.

Out of four years, half the time the Agniveer Soldiers will be out on leave, training and other emergencies like hospitalisation, travelling etc. Hence, his availability is limited. The training period is so less and with such less experience; these soldiers will not have enough skill to fight a battle and may end up as cannon fodder to the enemy. They feel no effort has been made to control expenditure out of defense civilian employees; rather they are paid higher salaries, full life payment till 60. The defense forces are downgraded even compared to police & CAPF A civilian boy who joins police or CAPF (Central Govt. Armed Police Force) gets better pay and perks. Why should he join "Agniveer"? Only the leftovers will join Agniveer. There is no government order on absorption of these Agniveers on release/ retirement to other posts which the government is talking of. Agniveer after 4 years will still be a 12th class boy, without good qualification for employment and devoid of much wish to study. This will lead to his frustration at young age. In Indian environment, in rural areas the Agniveer will get married without any source of income after release/retirement. Selection of 25% of available soldiers is likely to create corruption, discipline and misconduct issues. It will make dent into the defense forces men to officer relationship. What happens to those Agniveers who do not get into any job after retirement? A weapon trained soldier is a dangerous proposition in society when he is frustrated. Then there was another angle to it in terms of employment. Defense is a great employer for rural youth. They were totally dejected when this scheme of Agnipath came in and lot of protests and riots were seen. Especially it was opposed in a very bad manner in Bihar.

Agniveer on his release will get Seva Nidhi corpus of approx. Rs. 11.7 lakhs which will have 30% of monthly emoluments to be contributed by individuals. They will also get an insurance cover of Rs. 48 Lakhs and disability compensation based on % of disability as laid down by medical authorities. They with also get a Ex-Gratia of Rs. 44 Lakhs on death attributable to military service.

No scheme is good or no scheme is bad, what finally determines is how useful it proves itself to be. Hence its implementation is very important. Now only time will tell, if India develops into a Defense production hub. How far we will be competitive in Defense Equipment Production? How far we will be successful in maintaining and repairing these equipments indigenously? What capacity we will achieve in the ammunition and arsenal production for these equipments? How effective these Agniveers will be with these equipments to fight battles and defend our country? How useful these retired Agniveers will be in Nation Building? The answers to these questions will determine the success of the scheme 'Agnipath'. ❑

Agnipath Scheme and Transformation in the Armed Forces : A Comparative Global View

Dr. Ankur Yadav

Assistant Professor
Special Centre For National Security Studies, Jawaharlal Nehru University, New Delhi

The Indian government came out with a historical decision for the recruitment of solider for Indian Forces. These reforms in the recruitment policy of the Indian Armed Forces were based on recommendation of the different expert groups. The Union Cabinet has introduced the scheme, naming it AGNIPATH, and the joining youths will be known as Agniveers. This scheme will open an opportunity for the Indian youth to serve the nation and join the Armed Forces for 4 years. 25% of the Agniveers, will be subsequently inducted for regular service. With this scheme, this year the Armed Forces will be recruiting 46,000 Agniveers. In these four years, the Agniveers will be trained by the armed forces, Indian Air Force, the Indian Army, and Indian Navy, in the skill required. It will change the age-profile of the Armed forces. The representation of women will also increase with the opportunity. The Armed forces are supporting the scheme. The Armed forces will have "a younger, fitter, diverse profile for facing the future challenge". Some experts argued that the scheme has been "formulated to ease the burden on the defence budget and to enhance the country's preparedness in the face of emerging new threats".

After the completion of four years, the Agniveers can go to the society as a skilled workforce for employment and choose their careers based on their choice. They will be motivated and disciplined workforce for the society. Agniveers will not get any pension benefits but will get a one time lumpsum. The Agniveers will get one time 'Seva Nidhi' package (Rs 11.71 lakh) after the completion of four years. The Seva Nidhi will be exempted from the income tax. Agniveers will also get a life insurance cover (48 Lakh) for their four years service.

The reforms of the recruitment scheme will be transformative for the Armed Forces. On one hand, it is an attractive financial package for the youth and on the other hand it will change Armed Forces profile to be youth and dynamic. The scheme is providing a chance for Agniveers to enhance their potential and skills to contribute in the civil society. It is also providing plenty of re-employment opportunities after four years of service. The scheme will leave a high skilled workforce for the growing Indian economy and also ease the burden on the defence budget.

There were some misunderstandings and misinformation among the youngsters for the future security but the scheme is providing a golden opportunity for the youth to join Indian army and also get trained for the future prospects.. The Ministry of Home Affairs announced to reserve 10% vacancies for the recruitment in CAPFs and Assam Rifles for Agniveers and also 3 years age relaxation beyond the prescribed age limit. The first batch of Agniveers will get 5 years of age relaxations beyond the prescribed age limit.

Comparative View

The recruitment scheme is not new to India. In fact, many countries are already having such recruitment schemes. Even countries are having different model of recruitments but they have many common rules. As Indian government was facing some challenges and criticism in the implementation of the scheme, Defence official came out for addresses the Media conference to explain that such schemes are not new but already

USA	UK	France	Russia	China	Israel
Volunteer > 17 Years Engagement 8 Years (4 active & 4 Reserve) Training:10 Weeks Average Age: 27 years	Volunteer >16 Years Engagement 12 Years (Minimum 4 years) Training: 14-30 Weeks Average Age: 26 Years	Volunteer > 17.5 Years Engagement Multiple 1/2/3/5/10 years Training: 12 Weeks Average Age: 27.4 Years	Conscript & Contract > 18 Years Engagement Conscript-1y Contract- 3y Training: 3 to 6 Months Permanent: Conscript (2/3rd :1/3rd)	Conscripts > 18 Years Engagement 2 Years Women/2years Training: 6 Monthsý Permanent: Conscript (2/3rd :1/3rd)	Mandatory > 18 Years Engagement Men/3 & Training: 4 Months Permanent :Conscript (2/3rd :1/3rd)

Source: Defence Officials Media Conference on "Agnipath Scheme" (Webcast Videos)

in place in different countries in the world. They argued that they did internal assessment for the reforms and also did the caparison with the other countries like USA, UK, France, Russia, China and Israel. It is not easy to get the confirm information for other country's defence. Defence official highlighted the age of intake, the engagement period (like in US it is 4 years active and 4 years in reserve) and the training period which is different from country to country according to their needs.

The US and France are having short-term schemes which is based on contractual basis. On the other hand Israel, Russia and China are having mandatory short-term military service for every citizen of the country. Even during the emergency period like, WWI, WWII, Korean War, the US had imposed conscription, making it mandatory for all the men to join the military. In the present policy, US recruit citizens for four years, which is followed by a four-year reserve duty period where they can be recalled in case the need arises. After four years, they are not eligible for pensions and other benefits but after serving 20 years, they are eligible. Even in France, the recruitment of soldier's model is based on contract basis, which can be renewable from one year to five year and even after that. The benefit of pension is starting after 19 years of service.

Israel made a rule that serving the army is mandatory for every citizen. For women it is 24 months and for men it is at least 32 months. After this service and basic training for the soldiers, they can be called on duty at any time. Of these, 10 per cent are enlisted in the army and are on contract for seven years. A soldier is eligible for pension after at least 12 years of service. Russia is following a hybrid model of recruitment. According to that model, contracts are made in the armed forces. One year of service is given after the one year training. Then they are in reserve. They will get some benefits like studying in military institutions and also getting exemption in admission in universities. Some permanent recruits are also taken from these soldiers.

Conclusion

In the comparison of the different countries, India is also trying to reform its defence recruitment policy according to the need of the country. The ultimate purpose is to save the nation from external and internal problems and fulfill the national security interests. There are plenty of advantages of the scheme like providing a specific job opportunity to the Indian youth to serve the nation and add their support to the nation building. The reforms of the recruitment scheme will be transformative for the Armed Forces. On one hand, it is an attractive financial package for the youth and on the other hand it will change Armed Forces profile to be youth and dynamic. The scheme is providing a chance for Agniveers to enhance their potential and skills to contribute in the civil society. It is also providing plenty of re-employment opportunities after four years of service. The scheme will leave a high skilled workforce for the growing Indian economy and also ease the burden on the defence budget. ❑

सैन्य सुधार की प्रासंगिकता और अग्निपथ योजना

आनन्द वर्द्धन शुक्ल
पूर्व पुलिस महानिरीक्षक
प्रति कुलपति
मेवाड़ विश्वविद्यालय,
चित्तौड़गढ़ (राज.)

भारतीय सेना का इतिहास नया नहीं है, वरन यह प्राचीन काल से मध्यकाल और वर्तमान परिप्रेक्ष्य में ब्रिटिश 'लीगेसी' से सीधा-सीधा संबंध रखता है। हमने मौर्य और गुप्त काल का पराक्रम देखा तत्पश्चात् हर्ष की विजय यात्रा और मध्य काल में पृथ्वीराज चौहान, राणा सांगा, महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी के सैन्य अभियानों को अपने सैन्य इतिहास में उचित स्थान दिया है।

ब्रिटिश आगमन तथा प्लासी और बक्सर के युद्ध के बाद समय ने बड़ी तेजी से पलटा खाया, ब्रिटिश, फ्रेंच, डच, पुर्तगाली सभी यूरोपीय शक्तियों ने भारत में सैन्य अभियानों की एक श्रृंखला खड़ी कर दी थी। यह सत्य है कि वर्तमान भारतीय सैन्य व्यवस्था ब्रिटिश राज की ही देन है, रायल एयर फोर्स भारतीय वायु सेना बनी, रायल नेवल फोर्स, भारतीय नौ सेना और रायल आर्मी भारतीय सेना के रूप में परिलक्षित हो रही हैं। आश्चर्यजनक रूप से गत दिनों ही भारतीय नौसेना ने नया ध्वज अपनाया है, तथा ब्रिटिश ध्वज उस भारतीय नौसेना के ध्वज से माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के कर कमलों से हट कर भारतीय नौसेना का ध्वज बन गया है। 1947 की स्वतंत्रता के बाद यह 2022 में 75 वर्ष के बाद संभव हो पाया। सीधा साधा अर्थ यह है कि परिवर्तन समय की मांग है तथा परम्परा वही सैन्य व्यवस्था को कायम रखते हुये भी इलेक्ट्रोनिक युद्ध के लिये हमें सजग रहना पड़ेगा। रूस-यूक्रेन के युद्ध के लम्बा चलने से विश्व सैन्य व्यवस्था में कई बदलाव व सुधार की आवश्कता महसूस होने लगी है।

यहाँ यह बताना प्रासंगिक होगा कि सेना के गठन व संरचना, सेना की कार्य-प्रणाली, सैन्य केन्टोनमेंट की भौगोलिक स्थिति, पूर्व सैनिकों व पूर्व अधिकारियों की वर्तमान स्थिति का हमारे सामाजिक ताने-बाने पर भी सीधा प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। भारतीय नौसेना के वरिष्ठ अधिकरारियों तथा रक्षा मंत्रालय के वैचारिक मामलों की उच्च अधिकार प्राप्त समिति ने अनेक वर्षों के गहन शोध और अनुसंधान के पश्चात् सेना के आधारभूत गठन में कुछ विकास एवं परिवर्तन की महती योजना तैयार की। 'अग्निपथ' योजना इसी संगठनात्मक व्यवस्था का नवीन परिचायक मानी जा सकती है। यह व्यवस्था को सैन्य बल में कमी को दूर करना तो है ही साथ-साथ समाज की संरचना पर भी इसका व्यापक असर दिखाई देना।

अग्निपथ योजना में थलसेना, नौसेना और वायुसेना में आवश्यकता के अनुरूप भर्ती आरंभ कर दी गई है तथा बड़ी संख्या में युवा इसमें सम्मिलित होने के लिये आगे आ रहे हैं। भविष्य में युद्ध के बहुआयामी संदर्भों की दृष्टि से यह योजना वरदान साबित होगी। साइबर युद्ध, आंतरिक युद्ध, सूचना युद्ध, तकनीकी युद्ध सभी में नवीन प्रोद्योगिकी का समावेश इस योजना के अन्तर्गत संभव हो जायेगा। रोजगार की दृष्टि से सेवानिवृत्त अग्निवीरों को अपना काम आरंभ करने के लिये निम्नतम ब्याज दरों पर बैंक द्वारा ऋण उपलब्ध कराने की योजना भी बनाई गई है। गृह सुरक्षा, तट रक्षा और इसी तरह के अन्य बलों में भी अग्निवीरों को अवसर उपलब्ध कराये जायेंगे।

वैचारिक दृष्टि से देखा जाये तो आमूल-चूल परिवर्तन संभव नही हो पायेगा, यथा स्थिति के पक्ष में अधिक लोग रहते हैं किन्तु सैन्य बल की आधारभूत आवश्यकता (बल एवं तकनीक) को दृष्टिगत रखते हुये परिवर्तन और विकास दोनों अवश्यंभावी प्रतीत हो रहे थे। वर्तमान अर्थव्यवस्था को भी ध्यान में रखने की आवश्यकता थी गत लोकसभा चुनावों में सशस्त्र सैन्य बलों की पेंशन नीति, एक पद एक पेंशन नीति, बहुत ही व्यापक रूप से चुनावी मुद्दा बन गई थी। समय को देखते हुये तकनीक पर आत्मनिर्भरता बनाना आवश्यक हो गया था। इसका एक मात्र विकल्प कम अवधि के लिये सैन्य बलों की भर्ती की योजना थी। इन दोनों आधारभूत आवश्यकताओं को प्रकाश में रख कर ही 'अग्निपथ' योजना का उद्भव हुआ। अनेक सन्देह एवं शंकाएँ व्यक्त की गई क्षेत्रीय व भौगोलिक संतुलन के साथ-साथ अर्थव्यवस्था को दृष्टिगत रखते हुये यह उचित निर्णय प्रतीत हुआ। युवाओं को चार वर्ष के सैन्य प्रशिक्षण बाद अनेक अवसर उपलब्ध कराने की योजना पर भी समानान्तर कार्य चल रहा था। समाज में अनुशासन एवं व्यवस्था बनाने का इस से अच्छा कोई विकल्प हो ही नहीं सकता था। सशस्त्र बलों में सुधारों का बड़े स्तर पर स्वागत एवं अनुमोदन करने की आवश्यकता है। गत 14 जून, 2022 को अग्निपथ योजना को रक्षा मंत्रालय ने आरंभ किया। व्यापक समर्थन व विरोध के बीच अग्निवीरों का चयन आरंभ हो चुका है। अपने विरोधी पड़ौसियों के मध्य रह कर अपनी सैन्य योग्यता व क्षमता को परिमार्जित करने का हमारा मौलिक उद्देश्य इससे अवश्य पूर्ण होगा। अब हमें कुशल प्रशिक्षित एवं तकनीकी रूप से जानकार जवान चाहिये। रक्षा मंत्रालय ने लम्बे विचार विमर्श की प्रक्रिया के बाद यह योजना आरंभ की। सेना की आवश्यकता, बजट, वेतन, प्रशिक्षण सब में संतुलन बनाते हुये यह योजना आरंभ की गई है।

मौलिक रूप से देशभक्त व राष्ट्र सेवा से प्रेरित युवकों को चार वर्ष के लिये सैन्य बल में कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा। इन सैनिकों को 'अग्निवीर' के नाम से जाना जायेगा। आरंभिक तौर पर 40 से 50 हजार अग्निवीर थलसेना, वायुसेना व नौसेना में भर्ती किये जायेंगे। यहाँ यह भी स्पष्ट करते चलें कि इनमें ये 25 प्रतिशत 'अग्निवीर' 15 साल की सैन्य सेवा वृद्धि योजना में सम्मिलित कर लिये जायेंगे जो नियमित सेवा का अंग बन जायेंगे। यह योजना केवल 'गैर कमीशन' सैन्य कर्मियों के लिये ही उपलब्ध होगी। कमीशन सैन्य अधिकारियों की भर्ती का इस योजना से कोई संबंध नहीं होगा, वह तो पूर्ववर्ती ही रहेगी। साढ़े सत्रह वर्ष से 21 वर्ष आयु के बीच के ही युवा अगिनपथ के 'अग्निवीर' चयन में भाग ले सकेंगे।

इस योजना का आधारभूत लक्ष्य देशभक्त युवाओं के जोश को आधार प्रदान करना व सैन्य बलों की संख्या में मौलिक वृद्धि करना ही होगा। इससे दूरगामी प्रभाव यह भी पड़ेगा कि सैन्य बलों की औसत आयु में भी 4-5 वर्ष की कमी आयेगी। युवा बल अधिक संख्या में उपलब्ध होगा।

चार वर्ष की सेवा पूर्ण करने पर अग्निवीरों को 11.71 लाख रूपये का नगद भुगतान 'सेवानिधि' के रूप में देय होगा तथा सेवा के चार वर्षों की अवधि में 48 लाख रूपये का जीवन बीमा रक्षा कवच भी देय होगा। चार वर्ष के बाद भी पुनर्वास की योजना रक्षा मंत्रालय में तैयार की गई है, जिसके अन्तर्गत अर्द्ध सैन्य

बलों यथा सीमा सुरक्षा बल, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल, सीमा सशस्त्र बल, आसाम राइफल्स इत्यादि में 25 प्रतिशत आरक्षण इन अग्निवीरों के लिये उपलब्ध कराने की योजना है। यह योजना भविष्य के लिये प्रशिक्षित युवा सैनिक उपलब्ध करा पायेगी। रोजगार के अवसर निश्चित रूप से बढ़ेंगे, क्योंकि निजी क्षेत्रों के औद्योगिक घरानों को प्रशिक्षित एवं देशभक्त सुरक्षाकर्मी उपलब्ध हो पायेंगे।

अग्निपथ योजना में थलसेना, नौसेना और वायुसेना में आवश्यकता के अनुरूप भर्ती आरंभ कर दी गई है तथा बड़ी संख्या में युवा इसमें सम्मिलित होने के लिये आगे आ रहे हैं। भविष्य में युद्ध के बहुआयामी संदर्भों की दृष्टि से यह योजना वरदान साबित होगी। साइबर युद्ध, आंतरिक युद्ध, सूचना युद्ध, तकनीकी युद्ध सभी में नवीन प्रोद्योगिकी का समावेश इस योजना के अन्तर्गत संभव हो जायेगा। रोजगार की दृष्टि से सेवानिवृत्त अग्निवीरों को अपना काम आरंभ करने के लिये निम्नतम ब्याज दरों पर बैंक द्वारा ऋण उपलब्ध कराने की योजना भी बनाई गई है। गृह सुरक्षा, तट रक्षा और इसी तरह के अन्य बलों में भी अग्निवीरों को अवसर उपलब्ध कराये जायेंगे। कुछ राज्यों ने अपनी सरकारी भर्तियाँ व रोजगार के अवसरों में अग्निवीरों को प्राथमिकता दिये जाने की योजना बनाई है, जिनमें असम, हरियाणा, उत्तर-प्रदेश व मध्य-प्रदेश इसकी घोषणा कर चुके हैं। अग्निवीरों को लाइसेंस प्रणाली व आधारभूत बैंक करों में छूट देने की योजना पर भी कार्य चल रहा है। इतना ही नहीं उच्च शिक्षा के केन्द्रों में भी अग्निवीरों को स्थापित मानदंडों में छूट पर भी विचार किया जा रहा है।

चूंकि सामाजिक सरोकार के सन्दर्भ में पूर्व में उल्लेख किया जा चुका है। यह तर्क की चार वर्षों की सक्रिय सेवा के बाद अग्निवीर रोजगार के अवसर तलाश करेंगे यह अभी काल्पनिक ही है, जब प्रथम समूह के अग्निवीर चार साल पश्चात् बाहर आयेंगे-तभी यह स्पष्ट दिखाई देगा। किन्तु आज के अनुसंधान के आधार पर यह माना जा सकता है कि अनुमान के आधार पर 1000 अग्निवीर में से 250 लगभग सक्रिय सैन्य सेवा से नियमित सेवा में निरंतरता प्राप्त करेंगे। 250 के लगभग अर्द्ध सैन्य बलों में नियमित सेवा में चले जायेंगे। शेष 500 में से राज्य सेवा, निजी सुरक्षा एजेन्सी, कारपोरेट व निजी क्षेत्र, अथवा अपना व्यवसाय आरंभ कर पायेंगे। यह बल समाज के प्रति अपने दायित्व का अच्छे से निर्वहन करेंगे तथा उच्च कोटि के नागरिक के रूप में कार्य कर पायेंगे।

यहाँ हम युवकों में कहीं भी हताशा का भाव नहीं देख रहे। लगभग 12 लाख की राशि अपना कार्य करने के लिये इन युवाओं को सक्षम बना सकती है। सशस्त्र बलों में यह सुधार की ओर क्रान्तिकारी कदम माना जा सकता है। यह सुधार व्यावसायिक, संस्थागत एवं सामाजिक उत्थान का कदम साबित होने जा रहा है। ऐतिहासिक दृष्टि से भी पर्याप्त रूप में सैन्य भर्ती प्रक्रिया में सुधार की आवश्यकता महसूस की जा रही थी, उस लक्ष्य को भी प्राप्त किया जा सकता है। कुछ राज्यों में यथा बिहार, झारखंड, उत्तर-प्रदेश, हरियाणा में व्यापक विरोध भी देखने को मिला किन्तु वह राजनीतिक तथा सैन्य भर्ती कोचिंग सेन्टर द्वारा प्रायोजित अधिक था। विरोध करने वालों को भी पता नहीं था कि विरोध क्यों किया जा रहा है। इस पर प्रकारांतर से इलेक्ट्रोनिक व प्रिंट मीडिया में भी विस्तृत चर्चा चल रही है। युद्ध विशेषज्ञ भी कई प्रश्न चिह्न लगा रहे थे किन्तु विस्तृत शोध व अध्ययन के बाद यह प्रतीत होता है कि शंका निर्मूल है, तथा हमें अग्निपथ योजना से सक्षम व युवा सैन्य बल प्राप्त होगा, इसमें किंचित भी सन्देह नहीं होना चाहिये। ❑

अग्निपथ योजना न केवल रोजगार के सृजन का माध्यम है, यह आत्मगौरव बोध और देशभक्ति के प्रसार का माध्यम है। अग्निवीर सैनिक सेना में चार वर्ष की सेवा देंगे और उसके पश्चात उनको भारत सरकार की अन्य सेवाओं में कार्य करने का अवसर और लाभ मिलेगा। भारतीय सेना का प्राथमिक उद्देश्य राष्ट्रीय सुरक्षा और राष्ट्र की एकता सुनिश्चित करना, राष्ट्र को बाहरी आक्रमण और आंतरिक खतरों से बचाव और अपनी सीमाओं पर शांति और सुरक्षा को बनाये रखना है। इस प्रकार निश्चित है कि हम सभी भारत देश की सुरक्षा और अखंडता को बनाये रखने में अपना योगदान देंगे।

सैन्य सुधार : अग्निपथ योजना

डॉ. इन्दु बाला अग्रवाल

पूर्व अतिथि संकाय - शिक्षा विभाग, उत्कल विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर (ओडिशा)

भारतीय सेना की समूचे विश्व में एक गौरवशाली परंपरा रही है। चाहे वह कारगिल हो या उरी स्ट्राइक वह सब संभव हुआ तो भारतीय सेना के मज़बूत इरादों के कारण। भारतीय सैनिक हमारे देश की रक्षा की ज़िम्मेदारी को मरते दम तक निभाते हैं। भारतीय सेना योद्धाओं से भरी हुई है। वर्ष 1999 में दुनिया ने हमारी भारतीय सेना की वीरता को देखा, जब हमने पाकिस्तान के खिलाफ कारगिल युद्ध पर विजय प्राप्त की थी। भारत बहादुर योद्धाओं की भूमि है।

भारतीय सेना के जवान विषम परिस्थितियों में भी स्वयं को तपाकर राष्ट्ररक्षा में जीवन को समर्पित कर देते हैं। सेना का जवान ऐसी जगह खड़ा होकर देश की रक्षा करता है, जहाँ आम जनमानस के जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। कारगिल की पहाड़ियों में जहाँ 48 डिग्री से भी नीचे का तापमान होता है, और रक्त जमाने जैसी सर्द हवाएँ चलती हैं, ऐसी विषम परिस्थिति में हमारी साहसी सेना ने लगभग 60 दिनों के लिए युद्ध लड़ा और पाकिस्तानी हमलावरों के वर्चस्व वाली शीर्ष चौकी पर कब्जा पाया। आज भी जब हम अपने आरामदायक घरों में बैठ कर चैन की सांस ले रहे हैं तब हमारे भारतीय सेना के जवान विभिन्न सीमाओं पर तैनात होकर हमारी सुरक्षा कर रहे हैं। इसलिए यह कहा जाता है कि - ''योद्धा जन्म नहीं लेते वह भारतीय सेना में तैयार होते हैं।''

कुछ वर्ष पूर्व 29 सितम्बर 2016 को भारतीय सेना के जवानों ने पाकिस्तान के संदिग्ध आतंकवादियों पर सर्जिकल स्ट्राइक कर अपने पराक्रम का परिचय दिया और विश्व में देश के गौरव को बढ़ाया। भारतीय सेना के इस पराक्रम के बाद हर भारतीय का सीना गर्व से चौड़ा हो गया और सबने इस अभियान और भारतीय सैन्य शक्ति की खूब प्रशंसा की।

ऐसी सब परिस्थितियों व आंतरिक द्वन्द्वों के आलोक में आवश्यक है कि आम युवा देश की सेवा-सुरक्षा भाव से सैनिक के रूप में जुड़े और इसी आवश्यकता को महसूस करते हुए केन्द्रीय सरकार सैन्य अनुभवी युवा पैदा करने के इरादे से अग्निपथ योजना लेकर आई है।

अग्निपथ योजना और अग्निवीर

हम एक ऐसे युग में जी रहे हैं जहाँ युद्ध की प्रकृति व्यापक रूप में बदल रही है। भारत को न केवल स्थल, जल और वायु से बल्कि साइबर अटेक, इन्टरनेट ऑफ मिलिट्री थिंग्स और कृत्रिम बुद्धिमत्ता से भी खतरों का सामना करना पड़ रहा है। इस परिदृश्य में एक बेहतर सुसज्जित और अधिक तैयार सेना की आवश्यकता है। देश के लिए एक तरुण और सुसज्जित सशस्त्र बल की आवश्यकता की पूर्ति के लिए भारत सरकार और रक्षा मंत्रालय द्वारा लायी गयी हाल ही में सैन्य सुधार की श्रृखंला में एक महत्त्वपूर्ण कदम है - अग्निपथ योजना। यह एक महत्त्वपूर्ण योजना है। इस योजना के अंतर्गत राष्ट्र की सशस्त्र बलों की तीनों सेवाओं (थल, जल व वायु) में कमीशन अधिकारियों के पद से नीचे के सैनिकों की भर्ती की प्रक्रिया शुरू हो चुकी है। योग्यता के आधार पर देश भर से युवा

इस योजना में शामिल होकर अपनी भागीदारी कर सकेंगे। इसमें जात-पात या धर्म के आधार पर आरक्षण को प्रावधान नहीं है। इस योजना के अंतर्गत शामिल होने वाले युवा, सामान्यतया 17.5 वर्ष की आयु से 21 वर्ष तक की आयु के, एवं कोरोना काल के कारण पिछले दो वर्ष तक सैन्य भर्ती में अवसर न मिल पाने के कारण वर्तमान परिदृश्य में विशिष्ट छूट के साथ 23 वर्ष तक की आयु के युवा, (पुरुषों व महिलाओं के लिए समान रूप में लागू) आवेदन के पात्र होंगे। इन युवाओं को भर्ती के उपरांत चार वर्ष की सेवा के पश्चात 'अग्निवीर' नाम दिया गया है। एक चौथाई (अर्थात् 25 प्रतिशत) अग्निवीरों को उनके कौशल के आधार पर स्थाई किया जाना प्रस्तावित हैं जिनको तदुपरांत अन्य सैनिकों (जवानों) की तरह पेंशन व अन्य तमाम सुविधाएँ उपलब्ध होंगी। अन्य अग्निवीरों को उनके कौशल के अनुरूप 'स्किल सार्टिफिकेट' मिलेगा, जो उनके लिए भविष्य में रोजगार में सहायक होगा। इन युवाओं को विभिन्न प्रकार की भर्ती योजनाओं में वरीयता भी दिये जाने का उल्लेख है। सेना के दौरान किसी प्रकार की अनहोनी होने की अवस्था को ध्यान में रखते हुए इन युवा अग्निवीरों का 48 लाख रूपये का बीमा किया जाएगा। इस योजना के तहत अग्निवीरों को भी उत्कृष्ट प्रदर्शन करने पर गैलेंट्री पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा।

समूचे विश्व में कुछ ऐसे देश हैं जहाँ अनिवार्य सैन्य सेवा का प्रावधान है और यह उस देश के लोगों के लिए गौरव की बात हैं। अमेरिका, इज़राइल, दक्षिण कोरिया, उतरी कोरिया, ब्राज़ील, स्विट्ज़रलैंड, जॉर्जिया, लिथुआनिया, स्वीडन, नॉर्वे जैसे देशों में सैन्य सेवाओं में कुछ वर्ष रहने की अनिवार्यता है। सैन्य सेवाओं में रहने की अनिवार्यता न केवल देश की सुरक्षा से सम्बंधित कार्य है अपितु यह एक गौरव बोध और देशभक्ति के प्रसार का माध्यम भी है। अमेरिका जैसे विकसित देश में पुरुषों के लिए दो वर्ष की अनिवार्य सैन्य सेवा का प्रावधान हैं।

समूचे विश्व में इजराइल एक ऐसा देश है जहाँ की सैन्य शक्ति बहुत ही मजबूत मानी जाती है और यह संभव हुआ तो वहाँ के लोगों की वजह से। इजराइल में न केवल पुरुष बल्कि वहाँ की महिलाएँ भी सैन्य सेवाओं में 2 वर्ष अनिवार्य रूप से योगदान देती हैं। ऐसे ही भारत सरकार ने राष्ट्रीय भावना से प्रेरित होकर समाज में देशभक्ति के प्रसार हेतु अग्निपथ योजना का सृजन किया है। अग्निपथ योजना भारतीय सेना के तीन अंगों जैसे थलसेना, वायुसेना और नौसेना में क्रमश : जवान, एयरमैन और नाविक के पदों पर भरती के लिए भारत सरकार के रक्षा मंत्रालय द्वारा लायी गयी योजना है। इस योजना के अंतर्गत चुने गए जवानों को अग्निवीर के नाम से जाना जायेगा। अग्निपथ योजना न केवल रोजगार के सृजन का माध्यम है, यह आत्मगौरव बोध और देशभक्ति के प्रसार का माध्यम है। अग्निवीर सैनिक सेना में चार वर्ष की सेवा देंगे और उसके पश्चात उनको भारत सरकार की अन्य सेवाओं में कार्य करने का अवसर और लाभ मिलेगा। भारतीय सेना का प्राथमिक उद्देश्य राष्ट्रीय सुरक्षा और राष्ट्र की एकता सुनिश्चित करना, राष्ट्र को बाहरी आक्रमण और आंतरिक खतरों से बचाव और अपनी सीमाओं पर शांति और सुरक्षा को बनाये रखना है। इस प्रकार निश्चित है कि हम सभी भारत देश की सुरक्षा और अखंडता को बनाये रखने में अपना योगदान देंगे।

यह देशभक्ति और प्रेरित युवाओं को चार वर्ष की अवधि के लिए सशस्त्र बलों में सेवा करने की अनुमति देता है। यह योजना न केवल युवाओं में देशभक्ति का भाव जगाएगा वरन भारत सरकार ने इस योजना के माध्यम से युवा वर्ग की सबसे बड़ी आर्थिक समस्या को भी दूर करने का प्रयास किया है। इस योजना के तहत प्रत्येक माह अग्निवीर को पहले वर्ष 30,000/- रूपये वेतन मिलेगा यह बाद के वर्षों में बढ़ेगा। वेतन का 30 प्रतिशत अग्निवीर कॉर्पस फंड में योगदान के रूप में काटा जाएगा। कार्य काल पूरा होने पर अग्निवीरों को सेवा निधि पूरी तरह से कर मुक्त राशि के रूप में मिलेगी। यह योजना पूर्ण रूप से सामाजिक आर्थिक और देश के प्रति भक्ति भावना जगाने के अनुकूल है। इस योजना में अग्निवीरों को न केवल वेतन प्रदान किया जाएगा अपितु उनके लिए जीवन बीमा का भी प्रावधान है जो कि अग्निवीरों और उनके परिवार के लोगों के लिए लाभदायक है। प्रत्येक अग्निवीर को 48 लाख रूपये का गैर अंशदायी जीवन बीमा मिलेगा जिसका कर्तव्य के दौरान अग्निवीर की मृत्यु के मामले में परिवार को भुगतान किया जाएगा। यह राशि पूर्ण रूप से गैर-अंशदायी है। अग्निवीर भविष्य निधि (पीएफ) के लिए कोई राशि का भुगतान नहीं करेंगे। यह योजना सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से एक सुदृढ़ योजना है। इस योजना के तहत प्रत्येक वर्ष 45,000 से 50,000 सैनिकों की भर्ती की जाएगी, जो कि रोजगार के अवसर की दृष्टि से एक महत्त्वपूर्ण कदम है। इस योजना में बढ़ती हुई बेरोजगारी के दौर में 18 से 21 वर्षीय युवाओं को 30,000 से 45,000 प्रतिमाह के वेतन का अवसर प्राप्त हो रहा है जो समाज और देश के विकास में एक महत्त्वपूर्ण कदम है।

सशस्त्र बल अग्निवीरों के एक उच्च गुणवत्ता वाले ऑनलाइन डेटाबेस के जरिए पारदर्शी सामान्य मूल्यांकन पद्धति का पालन करेंगे। निष्पक्ष मूल्यांकन सुनिश्चित करने के लिए एक प्रणाली शुरू की जाएगी। अग्निवीरों द्वारा प्राप्त कौशल को व्यवस्थित रूप से दर्ज किया जाएगा।

अगर भारत को सैन्य शक्ति के क्षेत्र में दुनिया में एक महान देश बनना है तो यह अनिवार्य है कि देश का हर युवा अग्निपथ योजना की महत्ता को समझे और इस पथ पर तन-मन से अग्रसर रहे। अग्निपथ योजना और भारत सरकार के इस महत्त्वपूर्ण कदम को माखनलाल चतुर्वेदी की यह पंक्तियाँ पूर्णता में चरितार्थ करती हुई दिखती है।

मुझे तोड़ लेना वनमाली ,
उस पथ पर तुम देना फेंक।
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने,
जिस पथ पर जावें वीर अनेक।। ❑

भारतीय सीमा सुरक्षा और सेनाएँ

डॉ. राजकुमार चतुर्वेदी
प्रोफेसर,
राजकीय महाविद्यालय
चित्तौड़गढ़ (राज.)

भारत विश्व की महत्त्वपूर्ण सामरिक ताकत है। यह ताकत सीमा की सुरक्षा से और भी बढ़ जाती है। विश्व में संयुक्त राज्य अमेरिका और कनाडा शांत सीमा वाले उदाहरण माने जाते हैं इसीलिए वहाँ पर विकास निरंतर चल रहा है। वहीं भारत विश्व की 138 करोड़ की जनसंख्या रखते हुए भी चीन और पाकिस्तानी क्षेत्र की सीमाओं से चुनौती ले रहा है। पाकिस्तानी सीमावर्ती क्षेत्र में जहाँ आतंकवादी घुसपैठ की चुनौती है। वहीं चीन के सीमावर्ती क्षेत्र में चीन द्वारा निरंतर भारतीय सीमा में घुसपैठ हो रही है। बांग्लादेश की सीमा से जनसंख्या संबंधी अवैधानिक घुसपैठ के कारण भारत समस्या ग्रसित है। समुद्री सीमा में श्रीलंका के बंदरगाहों एवं पाकिस्तान के बंदरगाहों से चीन द्वारा भारत को चुनौती मिल रही है। भारतीय सीमाओं के बारे में इस पत्र में अत्यंत महत्त्वपूर्ण तत्त्वों का समावेश किया जा रहा है।

भारत की अंतरराष्ट्रीय सीमाएँ

भारत विश्व के 7 देशों से लगभग 15106.7 किलोमीटर की सीमा बनाता है। भारत की पश्चिमी सीमाएँ पाकिस्तान के साथ मिलती है। जो 3332 किलोमीटर है। अफगानिस्तान से 106 किलोमीटर सीमा बनती है। उत्तर में चीन के द्वारा भारत की सीमाएँ 3448 किलोमीटर बनती है। नेपाल से 1751 किलोमीटर की सीमा लगती है। भूटान से 699 किलोमीटर तथा म्यांमार से 1646 किमी तथा बांग्लादेश के साथ 4096.7 किमी सीमाएँ बनती हैं। भारत अपने सीमावर्ती क्षेत्रों में किस प्रकार से सीमा चुनौती का सामना कर रहा है, इसका तथ्यात्मक वर्णन आगे किया जा रहा है।

भारत और चीन की सीमा

भारत और चीन की वर्तमान सीमा का निर्धारण 1914 में हेनरी मैकमोहन की अध्यक्षता में तिब्बत भारत एवं इंग्लैंड के मध्य हुई बैठक के आधार पर हुआ था। इसको भारत ने स्वीकार किया था परंतु चीन इस समझौते को नकार रहा है और भारतीय सीमा में निरंतर घुसपैठ करता है।

भारत चीन सीमावर्ती क्षेत्र में भारतीय सैनिकों ने 61 महत्त्वपूर्ण स्थानों को चिन्हित कर भारतीय सुरक्षा की योजना बनाई है। इन महत्त्वपूर्ण स्थानों में से कांग्ला एवं देप्सांग - दौलत बेग ओल्डी क्षेत्र, चारडिंग-डेमचोक, बलवान घाटी, तवांग, डोकलाम, जाकरलुंग और पसामलुंग घाटियाँ, गोगरा-हॉट स्प्रिंग्स क्षेत्र, जैसे महत्त्वपूर्ण सीमावर्ती क्षेत्रों में भारत ने अपनी चौकियाँ मजबूत कर दी है। पैंगोंग त्सो झील क्षेत्र में, जून 2020 में चीनी सैनिकों के साथ भारत के सैनिकों की मुठभेड़ हुई। इस मुठभेड़ में भारत के 20 सैनिक मारे गए, वहाँ तनाव बढ़ा और इस झील के पास चीनी सैनिकों को भी ठिकाने लगा दिया गया। 16 दौर की वार्ता के पश्चात भी आज हम नहीं कह सकते कि चीन की घुसपैठ नीति में कोई

परिवर्तन आया होगा। 2017 में भारत और भूटान की सीमा के पास डोकलाम क्षेत्र में चीन की सेना 71 दिन तक पड़ी रही 772वें दिन वहाँ से सेनाएँ पीछे हटी, चीन का यह बदलाव इसलिए हुआ कि भारत वहाँ डटा रहा।

इस बदलाव का मूल कारण यह था कि भारत में उस समय चीन के विरोध में एक आंदोलन चल रहा था चीनी वस्तुओं के बहिष्कार का। दूसरी तरफ China–Pakistan Economic Corridor (CPEC) रोड का भी भारत में विरोधी हो रहा है क्योंकि CPEC भारत के अंदर कश्मीर से निकलने वाला है और कश्मीर भारत का महत्त्वपूर्ण अंग है। पाकिस्तान ने कश्मीर पर कब्जा किया हुआ है। CPEC के बार-बार विरोध का कारण उसकी भारतीय सीमा से निकटता है।

भारत चीन सागर में भी चीन का विरोध करता हैं क्योंकि विश्व में व्यापार की दृष्टि से हिंद महासागर से लगभग 70 प्रतिशत व्यापार किया जाता है। चीन सागर और हिंद महासागर का कनेक्शन है। श्रीलंका और पाकिस्तान से जुड़ी हुई कुछ बातें और भी हम लोगों को समझना चाहिए। श्रीलंका में चीन ने हंबनटोटा बंदरगाह का निर्माण किया है, और उस के माध्यम से वह भारत को नियंत्रित करना चाहता है। पाकिस्तान के कराची बंदरगाह पर चीन ने अपना अधिकार कर लिया है और वहाँ निर्माण कर रहा है। वहाँ से भी चीन भारत को नियंत्रित करना चाहता है। हम लोगों को अपनी सीमा की सुरक्षा के नाते निश्चित रूप से सावधान रहना होगा।

भारत-पाकिस्तान की सीमा के बारे में हम सबको मालूम है कि 3323 किलोमीटर भारत-पाकिस्तान की सीमा है। भारत पाकिस्तान की सीमा राजस्थान गुजरात और पंजाब और कश्मीर तक फैली हुई है। 1949 में कराची समझौता और 1972 में शिमला समझौता हुआ और भारत की सीमा और पाकिस्तान की सीमा का निर्धारण हुआ। भारत पर 1947 में पाकिस्तान ने आक्रमण किया और भारत का लगभग 76000 वर्ग किमी क्षेत्र पाकिस्तान ने नाजायज कब्जे में कर लिया जिसे वो आजाद कश्मीर कहता है। भारतीय उसे पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर (POK) के नाम से जानते हैं। हमारे नियंत्रण में यह भाग नहीं होने के कारण चीन और पाकिस्तान CPEC मार्ग को यहाँ से निकालना चाहते हैं भारत इसका पुरजोर विरोध कर रहा है। और वर्तमान में पाकिस्तान के साथ पिछले 2 वर्षों से व्यापारिक गतिविधियाँ समाप्त हो गई है।

नेपाल में पिछले दिनों लिपुलेख के नजदीक भारतीय सीमा पर अतिक्रमण करने का आरोप लगाया है। चीन के द्वारा नेपाल को दिया जाने वाला आर्थिक सहयोग उसको मजबूरन भारत के विरोध में खड़ा कर रहा है। भारत के नेपाल से जो प्राचीन संबंध हैं, उनके अंदर भी और खटास पैदा हो रही है। हम लोगों को इस बारे में और समझना पड़ेगा कि भारत और नेपाल की वर्षों से साँसे एक हैं। परंतु सीमावर्ती क्षेत्रों में चीन के व्यवहार के कारण नेपाल भी विवाद खड़ा कर रहा है।

सीमा की दृष्टि से श्रीलंका में चीन ने प्रमुख बंदरगाहों पर अपना नियंत्रण स्थापित किया है। यह नियंत्रण इसलिए स्थापित किया गया है कि भारत को वहाँ यहाँ से नियंत्रित करना चाहता है। तथा चीन ने हिंद महासागर के लगभग 18 देशों में अपने सैनिक अड्डे बंदरगाहों के अंदर तैयार किए हैं जो उस क्षेत्र के प्राकृतिक संसाधनों पर एक तरह से कब्जा करने का प्रयास है। भारत में इस बारे में हिंद महासागर में विभिन्न देशों से बातचीत करना प्रारंभ किया है। भारत-quad समझौते के माध्यम से अपनी रणनीति बना रहा है। जिसमें अमेरिका जापान भारत और ऑस्ट्रेलिया सम्मिलित है।

भारत और पाकिस्तान की सीमा

भारत और पाकिस्तान की सीमा के बारे में कुछ तथ्य इस आलेख में स्पष्ट करना चाह रहा हूँ। 17 अगस्त 1947 को रेडक्लिफ की मध्यस्था में भारत और पाकिस्तान की सीमा का निर्माण हुआ। आज भारत और पाकिस्तान के बीच में 3323 किलोमीटर सीमा है। इसमें से 425 किलोमीटर पंजाब में और 506 किलोमीटर गुजरात में 1170 किलोमीटर राजस्थान में तथा जम्मू कश्मीर में 1222 किलोमीटर है। वर्तमान में कश्मीर के अंदर एक जो कश्मीर का क्षेत्र है, उस क्षेत्र में 55 प्रतिशत भाग ही केवल मात्र भारत

के पास में है। वहीं इस समय 30 प्रतिशत भाग पाकिस्तान के पास में है और 15 प्रतिशत भाग चीन के पास में है। 1954 में धारा 370 लगी और अगस्त 2019 में यह धारा समाप्त कर दी गई। उसका प्रभाव वहाँ पर आतंकवाद में नियंत्रण पर हुआ है। युवा पीढ़ी नई योजनाओं के साथ जुड़ने लगी है। और वहाँ पर नए-नए विकास होने लगे हैं। भारतीय और पाकिस्तानी सीमा में सबसे महत्त्वपूर्ण समस्या पाकिस्तान ऑक्यूपाइड कश्मीर है। पाकिस्तान से कश्मीर में निरंतर हमले होते रहते हैं, इसका समाधान हमें निकालना अति आवश्यक है।

भारत और बांग्लादेश की सीमा

भारत और बांग्लादेश की सीमा भी निश्चित रूप से हम लोग विवादित कह सकते हैं। यद्यपि सीमा क्षेत्र में भारत की सुरक्षा गार्ड है और भारतीय सैनिक वहाँ पर मुस्तैद हैं, फिर भी बांग्लादेश के माध्यम से भारत में अनेक लोग जो अवैध रूप से भारतीय राज्यों के अंदर रह रहे हैं। हम उसका विरोध कर रहे हैं, फिर भी भारत के अंदर इस समय लगभग 3.5 करोड़ बांग्लादेशी भारत में रह रहे हैं। सीमा की दृष्टि से हम यह कह सकते हैं कि जितना जल्दी हो सके और देश की सीमा पर कठोरता लानी पड़ेगी वरना उस क्षेत्र से भारत में निरंतर जनता आती रहेगी।

बांग्लादेश से आए घुसपैठिए जलपाईगुड़ी, दार्जिलिंग, कोलकता, बेनीपुर, मुरादाबाद, मुजफ्फरनगर, गाजियाबाद, अलीगढ़, बरेली, हरदोई, सीतापुर, अरुणाचल प्रदेश के क्षेत्र में , मिजोरम में , सिक्किम में, तथा दिल्ली तक आ चुके हैं । इस बारे में ,गृह मंत्रालय से भी समय-समय पर रिपोर्ट आती रही है कि भारत के अंदर अवैधानिक रूप से बांग्लादेशी घुसपैठिए आ रहे हैं।

भारत और म्यांमार की सीमा

भारत की सीमा पर खतरे और बढ़ रहे हैं। म्यांमार से आने वाले लोग भारत के लिए खतरे की तरह खड़े हो गए हैं। यह असम में और अरुणाचल प्रदेश में बिखरे पड़े हैं इसलिए हमें म्यांमार की सीमा पर भी बहुत कठोरता अपनानी चाहिए।

भारत और चीन की सीमा पर सेना

भारत और चीन की सीमा पर वर्तमान में लगभग 225000 सैनिक तैनात हैं। पिछले दिनों गलवान घाटी में हुए चीन और भारतीय सैनिक के बीच में संघर्ष के कारण 35000 सैनिकों की टुकड़ी को वहाँ पर और तैनात किया गया था। वर्तमान में वहाँ जम्मू कश्मीर, लद्दाख और हिमाचल क्षेत्र में 35000 सैनिक हैं। उत्तराखंड में 15500 सैनिक हैं। पूर्वांचल क्षेत्र में सिक्किम, अरुणाचल प्रदेश, असम, नागालैंड और बंगाल के क्षेत्र में 175000 सैनिकों की टुकड़ियाँ वहाँ पर हैं। वर्तमान में सेना की दृष्टि से हम लोग चीन से कहीं भी कम नहीं हैं। और भारतीय सैनिकों की दृष्टि से वहाँ पर आने जाने की दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण सड़कें बन चुकी हैं। 1962 से अक्साई चीन पर चीन का अवैध कब्जा है और गलवान घाटी वाले क्षेत्र में भी चीन निरंतर आगे बढ़ रहा था। उसको रोकने के लिए भारत ने 35000 अतिरिक्त सैनिकों को वापस जमा किया, परिणाम स्वरूप 16 चक्रों की वार्ता हुई।

भारत विश्व की 138 करोड़ की जनसंख्या रखते हुए भी चीन और पाकिस्तानी क्षेत्र की सीमाओं से चुनौती ले रहा है। पाकिस्तानी सीमावर्ती क्षेत्र में जहाँ आतंकवादी घुसपैठ की चुनौती है। वहीं चीन के सीमावर्ती क्षेत्र में चीन द्वारा निरंतर भारतीय सीमा में घुसपैठ हो रही है। बांग्लादेश की सीमा से जनसंख्या संबंधी अवैधानिक घुसपैठ के कारण भारत समस्या ग्रसित है। समुद्री सीमा में श्रीलंका के बंदरगाहों एवं पाकिस्तान के बंदरगाहों से चीन द्वारा भारत को चुनौती मिल रही है। भारतीय सीमाओं के बारे में इस पत्र में अत्यंत महत्त्वपूर्ण तत्त्वों का समावेश किया जा रहा है।

भारत के सीमा सुरक्षा संबंधी प्रयास

भारत और चीन की सीमा के मध्य में पिछले 5 वर्षों में 2088 किलोमीटर लंबी सड़कों का निर्माण हुआ है। इसकी लागत लगभग 15477 करोड़ रुपया है। इन पर बाराह महीने आवागमन संभव है। 2014 से लगाकर 2020 तक 4764 किलोमीटर सड़कें इस क्षेत्र में बनी हैं। एक महत्त्वपूर्ण सुरंग जिसको अटल सुरंग के नाम से जाना जाता है, उसका भी निर्माण हुआ है। वर्तमान में कनेक्टिविटी के नाते 10023 किलोमीटर सड़कें बीआरओ द्वारा (सीमा सड़क संगठन) बनाई गई है और इसका 95 प्रतिशत काम पूर्ण हो गया है। वर्तमान में भारतीय संसद के अंदर इस बात की घोषणा श्रीमान गृहमंत्री द्वारा की गई कि भारत की उत्तरी सीमा पर अब हम लोग किसी भी मायने में चीन की सड़कों की तुलना में कमजोर नहीं हैं। भारत और पाकिस्तान की सीमा में भी 1336 किलोमीटर सड़क बनकर तैयार हुई म्यांमार की सीमा पर 151.15 किलोमीटर सीमा सड़क बनी है।

भारत की सीमा के लिए जो सुरक्षा के लिए सामग्री की आवश्यकता पड़ती है, उसका 60 प्रतिशत भारत आयात करता है। परंतु, इंडियन डिफेंस इंडस्ट्री एंड एजेंडा फॉर मेकिंग इन इंडिया के अनुसार 2019 के अंदर यह निर्णय हुआ कि भारत में 100 प्रतिशत हथियार बनाने के लिए बाहर की 358 कंपनियों को एफडीआई के नाते आमंत्रित किया गया है और उन्हें संबंधित उपकरण बनाने के लिए लाइसेंस दिए गए हैं। अब धीरे-धीरे भारत हथियारों का निर्यात करने लगा है। और वर्तमान में भारत का रक्षा बजट 1.4 प्रतिशत के आसपास है। जो विश्व के मानकों के अनुसार लगभग 1 प्रतिशत कम है। इसे हमें बढ़ाना चाहिए। ❑

Students in schools are given military training by the National Students Army (NCC). Leadership, character, brotherhood, sportsmanship, service etc. The aim of Rashtriya Chhatrasena is to educate the youth about qualities. The secondary objectives behind this scheme are to prepare students for military service, to help the youth to be trained and disciplined in the national emergency. Therefore, this training is helpful for the students here and the student who passes 12th, is given 'B certificate' of National Students' Union.

Military School in Maharashtra, Performance so far

Need to improve quality

Brig. Hemant Mahajan
Pune (Maharashtra)

The military organization of India is divided into three basic forces namely Army, Navy and Air Force and the military education and training system of each force is done separately under the direct command of the head office of that force. Interparty educational institutes and research offices are under the direct jurisdiction of the Ministry of Defence.

Each force has a separate branch in its head office. This department is responsible for policy, planning, research, regulation, coordination, development and deployment of military education.

Officer Military Training Institute

After passing from National Defense Academy.

Candidates selected for positions of authority in the Army, as well as officers.

A military training institute functions under the Army organization to impart general Army education to the candidates selected separately for the posts prior to their appointment in the Special Branch Forces of the Army. Indian Military Academy (Indian Military Academy) (Dehradun) is an institution.

Army Cadet College (Pune) is an educational institution that prepares selected soldiers of other ranks of the Army for admission to the Indian Military Academy, a ground officer training school, by imparting academic and other intellectual education. Selection for short term officer post in Officers Training Academy (Chennai).

Candidates as well as technical graduates get admission. After completing the course, they are given a short-term tenure. Officers Training Academy (Gaya) admits selected candidates for officer posts in technical branch. After completing the course here, one has to complete the graduation course at the Army

Technical College. Only then the candidates are given the right post.

General soldier recruitment

After enlistment, ordinary soldiers have to attend platoon training centers and schools for basic military and vocational education. There are total 42 centers like 24 for infantry, 2-2, 3-3 for some other forces. After completing education there, soldiers are recruited in the army.

There is no school in Maharashtra or countries to recruit as a soldier in the army. But pre-recruitment training centers are functioning at three places in Maharashtra in Satara, Kolhapur and Buldhana. Here the youth undergo training under the hands of retired army officers for six to eight weeks before being recruited. This helps them in clearing this recruitment exam. Generally the fee is Rs 6 to 8 thousand and students have to stay in boarding there and undergo pre-recruitment training.

Military schools imparting basic military education from British Amdani

Similar to the National Indian Military College, Dehradun, which existed since British Amdani, military schools were started by various states to provide basic military education along with school education. Among them Kapurthala, Karnal (Punjab), Chittogarh (Rajasthan), Jamnagar (Gujarat), Satara (Maharashtra), Korukanda (Andhra Pradesh), Trivandrum (Kerala), Kodaikanal (Tamil Nadu), Bhubaneswar (Odisha), Purulia (West Bengal), Rewa (Madhya Pradesh), Tilaiya (Bihar) etc. are famous and are functioning as supplementary institutions for military education.

Known as King George's Schools at Chail (Punjab), Ajmer (Rajasthan), Belgaum, Bangalore (Karnataka) and Dholpur (Rajasthan), established to provide higher education to the children of other ranks of soldiers in the British Army and prepare deserving students as potential candidates for positions of authority. The schools have been renamed as Military Schools and their existence has been maintained.

A military school that educates students

National Defense Academy Khadakvasala (Pune) and Indian Naval Academy (Visakhapatnam), Indian Air Force Academy, Dudal (Indian Air Force Academy), military schools. The basic objective of these schools is to make the youth physically, mentally and intellectually competent...

A policy was adopted in 1961 to establish one military school in each state through the Defense Department of the Central Government on the lines of the National Military Academy established in Dehradun in 1921 and public schools in England. Accordingly, initially five military schools were established in the country. Among them, the first military school was established in June 1961 at Satara in Maharashtra. A total of 24 such military schools were functioning in various states of India in 2008. They provide education from class VI to XII. The academic year is from 1st April to 31st March and like public schools, students are given military and school education. All these schools are residential.

There are schools and they are run by the central government and separate provision is made for them in the budget. In 2008, a financial provision of Rs 2 crore was made for each military school. These schools are under the control of the state government and the Ministry of Defense and the talented youth between the ages of nine and seventeen are admitted through the National Entrance Examination. Some seats are reserved for the children of persons serving in the defense forces and some concessions are given to the children of government officials.

Curriculum from the point of view of holistic personality development

These schools emphasize on extra-curricular programs from the perspective of developing the overall personality of the students. Apart from this, the aim is to inculcate the qualities of patriotism, unwavering social attitude, unity and leadership among the youth. There is military involvement in their education but they are not forced to join the army.

Physical education, drills, organized sports etc. were emphasized in the education of these schoolsgoes Youth should excel in sports, academics and extra-curricular activities, also by participating in mountain climbing, cross-country races, trekking, hiking. It is also intended to par-

ticipate in cricket, football, basketball, hockey. AllSubject wise prescribed by Boards of Secondary and Higher Secondary Education from schoolscourse and defense science is an optional subject. Medium of military education. There is English and Hindi.

Military School Management

All military schools in India have a board of governors under the chairmanship of the defense minister and the chief ministers of the respective states, the secretary of the ministry of defence, education inSecretary to the Ministry, Economic Adviser (Ministry of Finance), Chairman of the University Grants Board etc. There are ex officio- members in it.

Local administration and day-to-day affairs are done by the governing body appointed for each school. The Board is chaired by an officer of the rank of Colonel, Lt. Colonel or Major in the Defense Forces and is the Principal and the Registrar. Its board consists of MP, Collector or Deputy Commissioner of the district in which the Military School is located, Director of Education or Education Officer, two Education Specialists and the Headmaster of the school as ex-officio members and this board looks after all the administrative and teaching arrangements. On September 26, 1995, it was decided to start military schools for a total of thirty boys, one in each district of Maharashtra, as per the Act of the School Education Department of the Government of Maharashtra on the lines of military schools of the Central Government. Accordingly, 4 schools were started in 1996 by competent NGOs, one at Sangroli (Dist. Nanded) and two at Dhule. Similarly, many such military schools are functioning in Maharashtra.

All Military School Residential

All these military schools are residential and the officers, teachers and non-teaching staff have been appointed as per government rules and based on educational qualification. These schools provide education from class V to XII i.e. up to the higher secondary level and have the same curriculum as the Central Military Schools. It is prescribed by the Maharashtra State Board of Secondary and Higher Secondary Education and includes Defense Science as an optional subject. The medium of these schools is Marathi and mathematics and science are taught in English.There is also an alternative system of English medium in the situation. More emphasis on extracurricular activities is given These schools try to develop the overall personality of the youth. For this, emphasis is placed on the study of war science, electronics, computer science, armaments, war strategy, war technique etc. Along with national unity, efforts are being made by these schools to cultivate the great military tradition of Maharashtra.

Military School in Maharashtra

There are 39 military schools in Maharashtra. Among them, Services Preparatory Institute (SPI) of Aurangabad, Sainik School of Satara and Shree Shivaji Preparatory Military School (SSPMS) of Pune are more famous...

Out of 39 schools, three are permanently unaided and one school in Pune is private. There are a total of three military schools for girls. 32 boys' schools and three girls' schools receive a government subsidy of Rs 1 crore 80 lakh each. From 1998 to 2019, a subsidy of Rs. 200 crores has been given.

Till the year 2005-06, 39 military schools have been started in 32 districts of the state. Among them, military schools for girls were started in the districts of Pune, Aurangabad, Buldhana. Rani Lakshmibai was the first military school for girls (Pune) established by the Maharashtra Education Society (MSES) (1997). Later, military schools for girls were started at Buldhana and Nagpur.

Team spirit, discipline, leadership, confidence, bravery, patriotism etc. in the student. The main objective of this scheme is to cultivate qualities and develop self. With the broad objective that the youth should serve the nation by taking admission in National Defense Prabodhini, the government has the plan and it has been implemented. Maharashtra is the first state in the country to implement such an initiative.

Satara Sainik School is the first military school in Maharashtra

There is a military school in Satara in Maharashtra. This is the first military school in Maharashtra. Late Chief Minister Yashwantrao Chavan started it.

Students of this school reach

National Defense Enlightenment. They also become officers in the defense department of the country. But this school is under the control of central government. These are taken by the students through hard work. CBAC curriculum and discipline environment is here. As the entire control of the school is with the Defense Department of the Centre, the teachers teaching there are also highly skilled. This school has 24 hour scheduled programs. Importantly, the communes at this place belong to the defense forces. So students get very good training. The state government also provides huge subsidy for this school. This time, the state government has given 300 crore rupees to the school in Satara.

Sainik schools opened but no attention to quality

Military schools were started in the state so that Maharashtra should contribute a lot in the defense of the country and the students of the state should get quality education. But these schools do not produce enough students to reach the ranks of officers in the defense department.

Sainik schools were opened but the quality of these schools and the problems in the schools were not taken care of. That is why this scheme which was started with good intentions was successful No. Youth from other states are found in large numbers in the defense of the country and the officer corps has a high percentage of officers from these other states.

Marathi youths are not seen in large numbers to become officers in the army. Keeping this in mind, military schools were started in every district of Maharashtra. The clear objective was to educate and train the youth from these schools to prepare them for the NDA. But looking at the period of last twenty years, it is revealed that very few youths from these schools have gone to National Defense Prabodhini i.e. NDA. There are as many as 38 schools in Maharashtra in every district Sainik School and thousands of students are studying in them. The school has accommodation. Such arrangements are made in the school for education, food and accommodation. The preparation that children have to do to join the defense department is done by them in these schools. Retired officers of the Defense Department are appointed for this purpose. Till now, the state government is providing assistance of Rs 15000 per child to these schools. Place for the school is provided by the state government. Apart from Satara Sainik School and Services Preparatory Institution Aurangabad, the performance of other schools is not satisfactory. The reason is simply that the quality of staff, military staff in these schools is not sufficient. Only if it should be reformed will the expenditure incurred by the government benefit and increase the proportion of Maharashtra youth in the army as officers.

Various courses for medical field

The Royal Forces Medical College provides college education mainly up to the medical degree to prospective candidates for the rank of officer doctor in the military medical forces and other peacetime military essentials in all the three forces.

It is a college that conducts various courses for work in the field of medicine. Like officers, other ranks of soldiers in the medical corps also have their career courses planned for them in this college.

(NCC) There is also a need to increase the quality of military training.

Students in schools are given military training by the National Students Army (NCC). Leadership, character, brotherhood, sportsmanship, service etc. The aim of Rashtriya Chhatrasena is to educate the youth about qualities. The secondary objectives behind this scheme are to prepare students for military service, to help the youth to be trained and disciplined in the national emergency. Therefore, this training is helpful for the students here and the student who passes 12th, is given 'B certificate' of National Students' Union. These students are classified as junior, sub-junior and senior according to their rank and accordingly they are allotted a house (house area). Various intellectual and physical competitions are held among them to get the house trophy.

The performance of NCC is also not satisfactory and the number of recruits due to NCC is negligible. The quality of NCC also needs to be improved. ❑

(Translated by Dr. Avinash Badgujar, Jalgaon, Maharashtra)

Special Forces In India

Colonel Abhay Balkrishna Patwardhan (Retd)

Nagpur (Maharashtra)

Having served in Indian Army for glorious thirty seven years, including six with Special Frontier Force (SFF), I can safely say few words about Special Forces in India, their Deployment, Life Style, Tasks and Training. It is a long story but because of obvious constraints/ limits, I will try to give a "Bird's Eye View".

India has several Special Forces (SF).Three branches of the Indian Armed Forces have separate Special Forces Units which include; Para SF of Indian Army, MARCOS of Indian Navy and the Garud Commando Force of Indian Air Force. There are other Special Forces which are not controlled by Military but operate under other government departments such as National Security Guard of Home Ministry and Special Groups under Research and Analysis Wing. Even State Governments have their own SFs like Force One and C Sixty in Maharashtra and Grey Hounds in Andhra Pradesh. Small groups from Military SF Units are deputed by Armed Forces Special Operations Division, a unified Command and Control structure.

Armed Forces have following compliments. **a) Para Commandos** is very highly trained force of about 6000 Soldiers specializing in operations using Parachutes/ by Paradrops. Their Sniper Units are also best among Armed Forces. Because of extremely fatal nature of the operations they perform, they are kept at optimum level of Operational Efficiency and Physical Fitness, and only the most physically fit, mentally robust, intelligent, and highly motivated soldiers are inducted in the fleet; **b) MARCOS** or Marine Commandos of Indian Navy, a 2000 strong Force, is trained to engage in battle on all terrains but are super experts in Maritime Warfare; **c) Garud Commandos** of Indian Air Force, who number 1200, specialise in Airfield Seizure, Special Reconnaissance, Airborne Operations, Air Assault and Special Operations for Combat Search and Rescue. Garud Commandos are extremely adept at Anti Hijack Training,

Jungle and Snow Survival Techniques and Advanced Diving Skills; **d) Ghatak Force** is a Special Operations Infantry Platoon with every Infantry Battalion, acts as Shock Troops and lead Man to Man Assaults. They specialize in Raids on enemy Artillery Positions, Airfields, Supply Dumps and Tactical Head Quarters. They are experts at directing artillery and air attacks on Targets deep within enemy lines, Heliborne Assault, Rock Climbing and Demolitions.

Armed Forces Special Operations Division (AFSOD) is a Tri Service Command under raising. It is tasked to carry out Special Operations. The AFSOD draws personnel from all three Special Warfare branches of the Armed Forces. It is presently under staffed and under posted. The division is expected to be converted into a full sized Tri Service Command in future. It will be/is responsible for training of Commandos of Armed Forces in various Training Establishments along with coordination of future Operations. These are; Commando Training School, Belgaum, Karnataka; Winter Warfare School, Gulmarg,Kashmir; High Altitude Warfare School (HAWS), Sonamarg, Kashmir; High Altitude Commando Course, Parvat Ghatak School, Tawang, Arunachal Pradesh; Desert Warfare School, Jaisalmer, Rajasthan and Combat Divers Course, Indian Navy's Diving School, Kochi, Kerala.

National Security Guard (NSG) and COBRAS are under Ministry of Home Affairs. **a) NSG**, also called **Black Cats**, was created in 1986 at Manesar, Hariyana. It is a mix of commandos from both the Indian Army and Central Armed Police Forces which is lead by a 'Director General' from the Indian Police Service. Comprising two units; Special Action Group (SAG), which consists entirely of Indian Army personnel; and the Special Ranger Groups (SRG); both for Counter Terrorism Activities; NSG is equipped with some of the most advanced weapons in the world. The selection process is very brutal and those who qualify to be retained are sent off to train for another nine months to become Phantom NSG Commandos; **b) COBRA** (Commando Battalion for Resolute Action) is specifically trained in Guerilla Warfare to tackle the notorious **Naxal Groups**. As part of the Central Reserve Police Force, CRPF, COBRA commandos are masters of Camouflage, Jungle Warfare, Precision Strikes and Ambushes.

Research and Analysis Wing (RAW) which is an External Intelligence Agency of India, has separate Special Forces under its control, namely Special Frontier Force and Special Group. **a) Special Frontier Force (Establishment 22)** was created on 14 November 1962at Chakrata, Himachal Pradesh to undertake operations against the People's Liberation Army of China. It is a Paramilitary Special Force which specializes in Special Reconnaissance, Direct Action, Hostage Rescue, Counter Terrorism, Unconventional Warfare and Covert Operations. It operates in sync with RAW. These Commandos are supremely trained in Guerrilla Tactics, Mountain and Jungle Warfare, and Parachute Jumps. **b) Special Groups (SG)** is also known as 4 Vikas/22 SF/ 22 SG. The unit is considered to be composed of the most elite soldiers of India and is without doubt the most elite Special Forces Unit the country has to offer. Its responsibilities include conducting those operations with which the Indian government may not wish to be overtly associated. SG was raised in 1981 under Project Sunray. The unit is extremely secretive; its existence was previously unknown to the public. SG has reportedly undertaken Black Operations outside India. There are a total of 4 SG Squadrons, with each squadron consisting of four troops. Each troop has a specialized skill set. SG draws its personnel from all the branches of the Indian Military, and other Special Forces.

Training of Commando is very very **TOUGH**. More than 60 percent Volunteers drop out in First, three-day long, Physical Fitness and Aptitude Test where Volunteers are put through extreme sleep deprivation coupled with the most difficult physical tasks. Selection for Retention process for a Commando is generally of Three Months. It varies from Service to Service. Usually Commando's day begins with a run of minimum 10 kilometers.

Rigorous physical training goes on day and night with no specific routine. They get trained without food for four days, 1 liter water for three days and without sleep for seven days. He will always have a 10 kg sandbag on his back, affectionately called 'Permanent Buddy'. Objective is to make the candidate realize that he is far more capable than he ever imagined. The moment he shows any weakness, he is out. Every month he has to complete 10/20/30and 40 km Speed March/Walk with Full Battle Gears that means additional 25 kg. These speed walks are required to be completed within stipulated time. They are taught to survive with literally nothing to eat or drink. They collect dew in the wee hours to survive. Just 300 ml of water is good for them to survive for two days. A normal human needs Six liters a day to survive. A Commando is taught to eat anything that moves after he kills and roast it. They know which grass, which leaf, which shrub to eat to stay alive to complete the mission.

A Commando is required to develop skills of Jumping from high walls, Walking on narrow platforms and beams, Slithering from Helicopters, Endurance Runs carrying complete battle load and personal weapons, Battle Obstacle Courses, Rock climbing, Repelling, Combat Firing and Survival Missions. A Commando has to master any kind of situation. The most important aspect of training is to attack the enemy by ambushing from close range. This is the most dangerous training. The enemy is ambushed and attacked, so, training to instantly shoot and kill the enemy from close range is very important. Combat skills they acquire, make the difference between life and death while operating on Commando Missions behind enemy line. He is constantly reminded of the need to be physically and psychologically fit. As the training gains momentum, a new reality dawns and the fight to survive for one more day takes hold. As days go by, the rules of the game change rapidly, with nothing known about the next moment. The psychological strain is immense, by design.

A commando is a person with intense self-discipline. Somebody who has to be supervised cannot become a commando. He has to think and then act like one. His firing skills should be second to none and the capability of handling of all kinds of weapons and explosives has to be top class. A Commando also has to navigate without any technological gizmo by using stars,sun, Cardinals and likes. A Commando is not all brawn and no brain, as the popular opinion goes. He has to be tech savvy and should be able use every latest gadget at his disposal to his benefit. He may have to direct laser guided bombs on to targets that can otherwise not be destroyed by other explosives. He must be able to communicate with his headquarters and may have to send back live audio/video surveillance feeds of high-value targets. Finally, what everything boils down to is the will of a man to go on, and the capability to hang on for a moment longer. The final stages of the training include an 800 meter long thigh- high mud crawl called the 'Death Crawl', loaded with 25 kg of gear which is concluded with shooting a target 25 meters away with a man standing next to it.

The foremost quality of a Commando is steadfast will power, moral and physical courage, and psychological, emotional and physical fitness. A Commando has to 'Live to Fight another Day.' A Commando has to 'fight to survive' and 'survive to win.' He can never afford to lose. Apart from physical and mental toughness, one has to have the camaraderie to prove his worth. It's their mindset. Come what may they will fight till their last breath. A battle is not won by dying for your country but by killing her enemy. It's all about Feeling for the Nation.

After training, Candidates become capable of firing while lying down, standing, running full-sprint, even backward and looking into a mirror, with a reaction time of 0.27 seconds. It is a must because; Special Forces are required to conduct wide variety of Strategic and Operational Tasks, both Covert and Overt, in war and Low Intensity Conflict Situations.

We impart special skills using most optimum use of Ground and

they get sharpened when the Commandos repeat the process again and again. It's all about how much extremes your body and mind can handle. No two situations in life or war can be similar. It's not a mathematical formula that they can/should apply. We always remind the Commandos that "Tough times don't last, but Tough People do". A good Commando has to be good Human Being first, possessing qualities like; Top Class Character, Compassion, Courage, Competence, Commitment and finally Charisma. During their Survival Skills Training, a Commando is taught how to build shelters, procure water, make fires, navigate, make traps and snares, track and finally obtain food from flora and fauna. "Shelters protect from weather, insects, animals and enemy observation. It helps conserve energy. Commando must be able to build debris huts, swamp beds and improvisations of a poncho. A Commando does not ask — What's on the menu? — As they have no option but to survive on the flora and fauna available.

Edibility test for plants comes very handy when one is not sure about them. Skills to prepare an animal can come handy and have saved lives of non vegetarians. Taste and choice of food have no place in our lives, while on a mission. A commando has to be an expert in building traps and snares to catch small animals and birds without losing surprise. It takes lot more than knowledge and survival skills to live successfully through an arduous situation. While learning survival skill is important, having the will to survive is essential, without which these skills have no meaning.

As part of Special Mission Training to enhance the combat edge, Small Teams are formed and sent to varied kinds of terrains. This exercise, said to be the toughest, may vary from Three to Five days. Warfare is all about confidence. During training, we break the biological timings, deprive a commando of sleep and put him through a timetable that's not told to him till the last moment. We make him do all things which he hasn't done before. No plans are known to anyone. We show them the limits their body, mind and soul can take. It's all about Romancing Dangers and Risks. In addition, there are planned exercises in Simulated Battle Conditions. The commandos are also trained in different kinds of military explosives and they are given valuable survival tips in hostile conditions. They are also given training in basic medical aspects and unarmed fighting, if by chance, his weapon malfunctions. We are able to enhance the endurance, confidence and the knowledge levels of a solider so that he gets a complete insight of special mission and covert operation.

The foremost quality of a Commando is steadfast will power, moral and physical courage, and psychological, emotional and physical fitness. A Commando has to 'Live to Fight another Day.' A Commando has to 'fight to survive' and 'survive to win.' He can never afford to lose. Apart from physical and mental toughness, one has to have the camaraderie to prove his worth. It's their mindset. Come what may they will fight till their last breath. A battle is not won by dying for your country but by killing her enemy. It's all about Feeling for the Nation. ❑

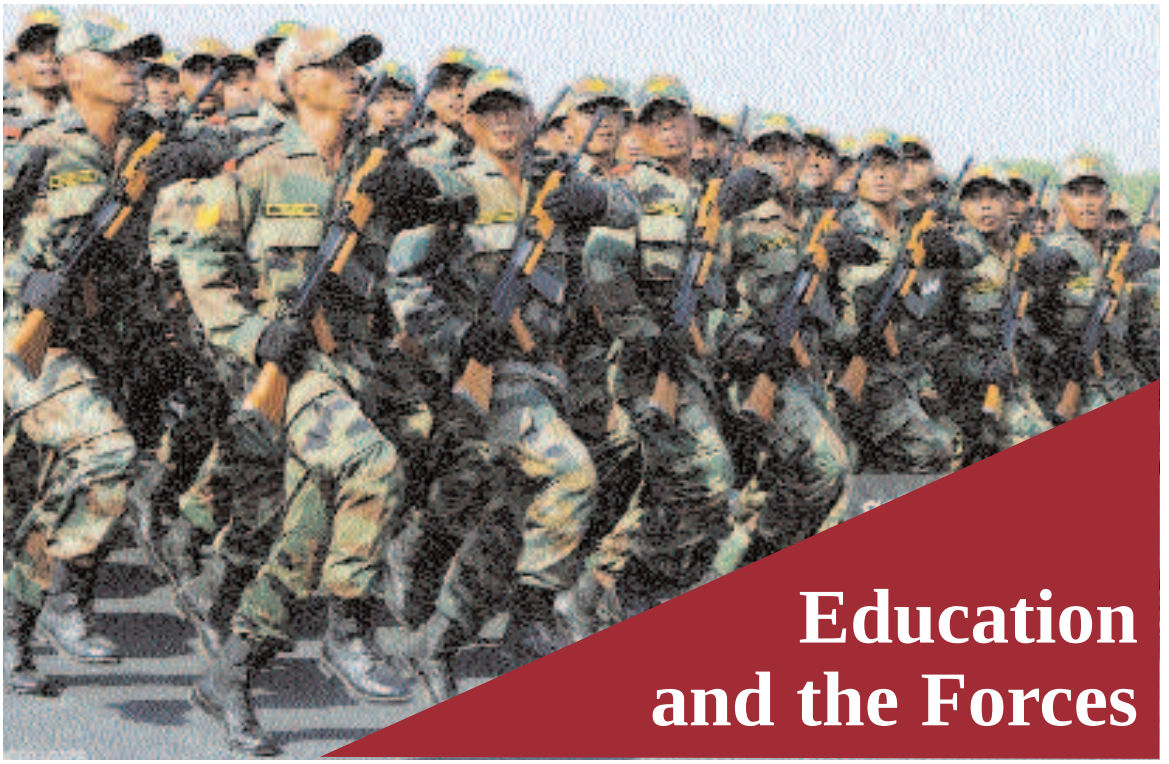

Education and the Forces

Dr. TS Girishkumar

Professor of Philosophy
(Rtd) MSU Baroda
(Gujrat)

We are familiar with the notion of education; we are also familiar with the notion that education – the process of imparting knowledge to the needy - ought to have some speciality based on the Sanskriti of Bharat. The essential thing here is, that, the knowledge which is given must also have the property of 'affectivity' – that the knowledge given must affect the knower in such a manner that it should refine the knower through a process of sputikarana into an authentic human being and in our context, an authentic Bharatiya. This lesson is taken from instructions given to us in the BC third century text Nyayasutra, written by Maharishi Akshapada Gautama.

Forces of the Nation

All Nations do maintain forces. Perhaps this is the law of the world. On a Platonic thought, one may speculate on the futility of maintaining forces, where a good amount of time, energy and revenue is spent, leave apart the plausibility of continuous losses of lives. As a matter of fact, Marx did think of a situation where such forces may not be in need, though he had not explicated there. Marx envisages a situation where "the inner law of reason" (Economic and Philosophical Manuscripts of 1844)of mankind shall be the same with the objective law of the state, thus making it spontaneous for human society to naturally follow the objective state laws without any contradiction in a 'higher stage' of communism. For the lower stage of communism, it shall be for 'all according to his need' from 'all according to his work' and then he goes about speculating the possibility of no ruler and no ruled society, withering away of states to create statelessness and so on, finally into Marxian anarchy.

Well, these are indeed, very fancied romantic speculations which used to be at commonplace with many European societies during the immediate post-Papacy period of the European euphoria of scientificity that juxtaposes Christianity. We have such instances of romanticism from many thinkers of that time, one such example is that of Max Muller whom people considered to be an intellectual of some mer-

its, which is actually questionable. Max Muller was already termed as 'romantic' by the Germans before he was taken to England by the then German ambassador to meet McCauley, the then Viceroy of Bharat, and in due time, he spent his life working on translating Sanskrit texts into English, that went on for the sake of ten thousand pounds that McCauley made the East India Company promise to Max Muller. (The money was never paid in full by the company – a sad case indeed, for Max Muller).

Similarly Marx, who speculated on an 'ideal' society and unlike Plato, introduced plenty of technicalities and speculated scientific ties into his theories. This resulted in what may be termed as 'the Marxian reductionism', which shall at once be self-explanatory. Perhaps in the Marxian ideal society, forces may be not needed, but for all real time societies on all practical plain, a Nation shall not exist at all without adequate military forces.

Educating the forces

Forces do have a stipulated teaching programme which is normally called as the training programme. Personally, I was fortunate enough to have undergone such a training programme from the Bharatiya Vayu Sena, and this made me an Air veteran as well. In my personal experience, the training was highly technical and matter of fact. The whole thing was focused on to creating a soldier out of a civilian on the first part, and further, creating a professional soldier, who shall be meticulous. The training programme was an overall, physical, intellectual, mental and aimed at enhancing capabilities. After the training, we saw ourselves as changed citizens of Bharat, still, there was something missing, something very important and vital, and that was our knowledge about Bharat and specialities Bharat possesses in comparison with all other Nations. Nothing much was taught in terms of creating a 'sense of belonging to the Nation' and 'National pride'.

Of course, most of us did posses the sense of belonging to the Nation, we were all very proud sons of Bharat, but this is all because of the Bharatiya Sanskriti that influenced us from home, schools, society and the time, apart from the only entertainment we had in those days which was visiting libraries and reading great books. But the training programme had not 'taught 'us these.

For Bharat, Nationalism from Swabhimana is authentic, because it is based on concrete aspects of human existence. Swabhimana is based on a Sanskriti, Bharatiya Sanskriti, and the Bharatiya Sanskriti is based on a knowledge tradition, the Vedopanishadic knowledge tradition. Dharma in Bharat is external and functional manifestation of this Sanskriti and the Vedopanishadic knowledge tradition in essence. Further, today we can witness the 'demonstrated' Bharatiya Sanskriti on granite rocks, carved out in three dimensions through our temples and other such creations. Truly, the history and Sanskriti of Bharat cannot be destroyed, they are carved in three dimensionson rocks permanently.

The sense of belonging to Bharat

Every citizen of Bharat ought to have this intense sense of belonging from which both National pride and Nationalism shall manifest. Indeed, we had been doing nothing worthwhile in this direction all along by way of and through education. In spite of this, Bharat has no dearth of Desh Bhakts, but the point is that we had been doing nothing in promoting Nationalism. The Nationalism that is available today in Bharatiya citizens is only resulting from the Sanskriti of Bharat, from our own house holds and through the Hindu Dharma. Many times, these things are incomplete, inadequate and vastly sketchy. We really need clear cut and intense Nationalism to be imparted into the citizens that can only come from appropriate education system. We are indeed fortunate that we are blessed with umpty numbers of gurus and acharyas as well as ashrams which do this job for the Nation, but this really needs to be systematised. And what is more, the real unity and strength of Bharat should come from knowing Bharat, knowing the history of Bharat, knowing the impeccable philosophies of Bharat and in one word, being conscious of the Vedopanishadic knowledge tradition.

Education for the forces

This exercise of education in Nation should begin with our forces and this indeed is a simple task which is better spelt out by Swami Vivekananda. We can begin our exercise from the clarion call given by Swami Vivekananda of becoming Swabhimani Bharatiyas. Let us start from this concept of Swabhimana, which, of course, the Sena must have. Now, let us unpack the concept of Swabhimana in Bharatiya context.

Let us also make a difference between spurious National pride and authentic National pride. These remains a fact that the two nation theory thinkers succeeded in creating a Pakistan out of Bharat, but their becoming separate from Bharat is on account of Islam. They believed that the religion of Islam shall be a uniting factor for them, and this appeared to some Muslims as true, though Jinnah knew it otherwise. They thought that Islam can make them one, but they soon experienced that such unification shall only be spurious. Wanted to remain with Bharat and extract the maximum for Muslims But it did not work, he kept holding against the two Nation theory till the 1904 Lahore meet, where a desperate Jinnah had to announce it openly in the afternoon session staying away from the forenoon session in his desperation.

Pakistan teaches 'Islamiyat' in their curriculum right from school level of education just with the hope that Islam shall keep Pakistan united. I do not know how they use Islam in their forces authentically, Probably it must be through the system of fear of punishments and promises of rewards in an after death situation. This is an instance of spurious Nationalism which shall fall apart at some point in time. I really do not know whether China has something in this direction as in communism they force the forces to do things, and they force citizens to obey whatever is being told.

For Bharat, Nationalism from Swabhimana is authentic, because it is based on concrete aspects of human existence. Swabhimana is based on a Sanskriti, Bharatiya Sanskriti, and the Bharatiya Sanskriti is based on a knowledge tradition, the Vedopanishadic knowledge tradition. Dharma in Bharat is external and functional manifestation of this Sanskriti and the Vedopanishadic knowledge tradition in essence. Further, today we can witness the 'demonstrated' Bharatiya Sanskriti on granite rocks, carved out in three dimensions through our temples and other such creations. Truly, the history and Sanskriti of Bharat cannot be destroyed, they are carved in three dimensionson rocks permanently. The Kailash Nath temple of Ellora is just one example, and as we all know, there are many more.

To conclude, let us include this Swabhimana aspect into the training programme of the forces. We ought to educate them in understanding what is Bharat, we ought to educate the young minds in the greatness of Bharat, we ought to teach them why we call Bharat the 'Viswaguru'. They should clearly know that Bharat is indeed, the Viswaguru, Bharat is indeed, the forerunner of world civilisations, Bharat is indeed the true knowledge provider to the entire world and perhapsbeyond time and space. And finally, let everyone know that our Swabhimana is based on these, and being are truly authentic. (When Shri. AK Antony was Rakshamantri of Bharat, I wrote all these to him, knowing very well that my suggestions shall not be even looked into. Obviously, there was no reply) ❑

Performance in any sport is determined by a combination of three main elements: Physical conditioning for competition, Skill level, and psychological readiness to compete. The little importance of these factors differs considerably from sport to sport. For instance, cross-country skiers rely heavily on physical conditioning but they would devote less time to the actual skills involved in skiing.

Role of Psychological Skill Training on Sports Performance

Dr. Sanjeev Kumar

Assistant Professor, Department of Physical Education, Central University of Punjab, Ghudda, Bathinda.

All the top-class athletes of the world are agreeing that the mind & body function together they are not independent. Therefore, now a days at Olympics or world class performance,athletes pay more attention to psychological skill training (PST) to handle the pressure during the competition time. PST is known as systematic and consistent practice of mental or psychological skills for the purpose of improving performance, greater enjoyment, or achieving better sport and physical activity self-satisfaction. Applied sport psychology is closely related to its parent disciplines of psychology, physical education and sport science. It has become extremely popular over the last three decades because coaches and athletes have begun to realize just how much of sporting performance depends on the mental approach. It is a science insofar as key principles from psychology are applied to sport often with the goal of enhancing performance, but it can also consider an art because the right mix of applied interventions take great skill, imagination, cunning and creativity.

Performance in any sport is determined by a combination of three main elements: Physical conditioning for competition, Skill level, and psychological readiness to compete. The little importance of these factors differs considerably from sport to sport. For instance, cross-country skiers rely heavily on physical conditioning but they would devote less time to the actual skills involved in skiing. In contrast, top golfers, who need constant practice to keep their skills razor sharp, can perform well with relatively low levels of aerobic fitness. Similarly, developing stamina is much more important for a marathon runner than a trap shooter. Trap shooting, however, involves very precise skills that require more practice than the relatively straight forward and repetitive skill of running efficiently. The element of performance that

makes demand of all sports people equally is the psychological readiness to compete. Without mentalstrength, no athlete can be considered suitably prepared for competition. Yet many people enter the sporting arena having given very little thought to mental preparation. It is a component of performance often left to chance; you might feel up for it, but then again, you might not! The great irony associated with the lack of attention to psychological readiness is that athlete, coaches, and fans invariably attribute monotonous performances to psychological factors rather than physiological or bio-mechanical ones. If even a small fraction of time athletes spend on physical conditioning and skill training were devoted to improving their mental approach, they would at least be giving themselves the chance to avoid the frustration of inconsistency.A fundamental misconception is that psychological is a random performance factor. Psychological preparation for sports is just as readily attained as physical conditioning and skill development. All that is required is proper guidance and sufficient dedication. The main reason for learning psychology is to bridge the gap between athletic potential and athletic performance. If an athlete's able to control anxiety, nervousness, pressure and enhance confidence, concentration have better chance to improve his performance during competition.

Mental preparation facilitates the learning and help the athlete to achieve his training goals. Learning of mental skills not only enhance the performance of athlete's but also enhance athletes' quality of living. Psychological preparation is very essential element for success in performance enhancement. Psychological skill training has been found to be utilized by athletes at all levels including national and international athletes, and the use of certain psychological skills has been approved to differentiate between more successful and less successful athletes. Today's coach recognizes that even small adjustments may have a huge impact on competitive outcomes. For example , in sports where time is a factor , a fraction of second can make the difference between a first- and last- place finish , between a great and subpar performance. Psychological skills training may be what it takes for athletes to shave the fraction of seconds. The record-breaking performances of the future will be achieved not by athletes who only train harder physically , but those who also train smarter mentally.

In general, the agreement of sports psychology researchers, coaches, and athletes is that psychological skills training can enhance performance. PST has experienced a tremendous surge in popularity in sports psychology research and practice over the past few decades as it provides a positive approach to performance enhancement by helping athletes develop mental skills, perform well and enjoy sport. Indeed, the proactive and systematic nature of PST appeals to both coaches and athletes, and solid empirical support documents its ability to enhance athletic performance. In fact, most coaches consider sport to be at least 50% mental when competing against an opponent of similar ability, and certain sports, such as golf, tennis, and figure skating, are consistently viewed as 80% to 90% mental. Thus, as one coach noted psychological testing can help identify each individual's psychological strengths and weaknesses, and coaches can act on that knowledge by implementing and appropriate training program. Psychological skill training helps the athletes to achieve the state of relaxation, concentration, error analysis and correction, preparation for competition and skill enhancement. Now a days psychological skill training become very popular and used by all the athletes of the world. In India also coaches gave emphasis on psychological skill training as a result Indian athletes performance has increased in last 2 decades.Physical and mental talent of athlete determines the success in his/her sports at elite level.Therefore, each coach must train their athletes about the claim of psychological skill training along with physical training. ❑